तृतीय अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में राजनीति विषयक समय बोध

आज का समय अत्यधिक राजनीतिकरण का समय है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति चाहे उसे राजनीति पसंद हो या न हो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजनीति से जुड़ा हुआ है। राजनीति दिन–प्रतिदिन प्रयोग होने वाला शब्द है। आज के भौतिक युग में किसी भी मानवीय गतिविधि को राजनीति का नाम देने का ट्रेंड–सा चला हुआ है। समाज में होने वाली प्रत्येक घटना को राजनीति से जोड़ कर देखा जाता है। 'विश्वविद्यालय की राजनीति', 'खेलों की राजनीति' और 'विवादास्पद मुद्दों की राजनीति' सर्वत्र 'राजनीति' शब्द का इतना प्रयोग किया गया है कि राजनीति शब्द का सही अर्थ खोज पाना दुष्कर हो गया है।

3.1 राजनीति का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप

राजनीति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरस्तु ने अपनी राज्य संबंधी पुस्तक के शीर्षक के रूप में किया था जिसका अर्थ है – 'नगर'। नगर ही युनान में राज्य कहलाता था। इसमें जो शासन तंत्र लागू किया जाता था वही राजनीति कहलाती थी। नालन्दा विशाल शब्द सागर के अनुसार राजनीति का अर्थ है – ''राजनीति संबंधी''[1] हिन्दी शब्द सागर के अनुसार – ''राजनीति वह नीति है जिसका सहारा लेकर शासक अपने राज्य की रक्षा और शासन की पद्धति को दृढ़ करता है। शासन तंत्र में तंत्र वह नीति है जिसके द्वारा राज्य में सुप्रबन्ध और शांति स्थापित की जाये और दूसरे राष्ट्रों से संबंध दृढ़ किये जाए।''[2] इस प्रकार राजनीति देश के शासन तंत्र को चलाने के लिए बनाये गये निति, नियम एवं सिद्धान्त होते हैं। इन्हीं के आधार पर किसी राष्ट्र का शासन चलाया जाता है। डॉ॰ महादेव शर्मा के अनुसार – ''वह विद्या या शास्त्र राजनीति है, जो राज्य का सांगोपांग विवेचन करता है। जिसमें राज्य के विभिन्न अंगों तथा प्रकारों, उसके संगठन तथा कार्यो संबंधी सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।''[3] राजनीति शक्ति और गति के कारण मानव के समग्र जीवन को दिशा प्रदान करती है। मानक हिन्दी कोश में राजनीति को दो प्रकार से परिभाषित किया गया है। – 1) ''गुटों वर्गों आदि की पारस्परिक स्पर्धा वाली स्वार्थपूर्ण राजनीति'', नीति या पद्धति विशेष जिसके माध्यम से किसी राज्य पर प्रशासन किया जाता है। राजनीति कहलाती है।''[4] जब बहुत सारे लोग एक समूह में रहते हैं तो वहाँ अनुशासन बनाए रखने के लिए एक शासन तंत्र का होना अनिवार्य है। यह

---

[1] सम्पा॰ श्री नवल, नालन्दा विशाल शब्द सागर, पृ॰ – 1169
[2] सम्पा॰ श्यामसुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर, भाग–4 पृ॰ 4511
[3] डॉ॰ महादेव शर्मा, राजनीति के सिद्धान्त, पृ॰ 2
[4] सम्पा॰ रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, खण्ड–4, पृ॰ 4094

शासन तंत्र राजनीति के अंतर्गत आता है। इसके विपरीत डॉ॰ एस॰ एस॰ अवस्थी राजनीति को ''शैतानों की अंतिम शरण स्थली''[5] मानते है। डॉ॰ गर्नर के अनुसार ''राजनीति राज्य से शुरू हो उसी पर समाप्त होती है।''[6] राज्य की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए जो उसकी नीति–नियम विधि बनाई जाती है। उन नियमों का पालन करना उस राज्य की प्रजा के लिए अनिवार्य होता है। डॉ॰ जितेन्द्र वत्स के अनुसार – ''राजनीति से तात्पर्य उस शास्त्र से है जो राज्य संचालन संबंधी नितियों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह विशेषतः संविधान से संबधित होता है, जिसे किसी भी देश का संचालन कर्ता उसे जीवन में व्यवहार रूप में परिणत करने का भरसक प्रयत्न करता है।''[7]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते है कि राजनीति का संबंध राज्य द्वारा बनाई गई नीति से है। जो राज्य का सुचारू रूप से संचालन करने हेतु बनाई जाती है। किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी राजनीति एवं राजनेताओं पर निर्भर करता हैं राष्ट्र का नेता यदि कर्मठ, निष्ठावान, ईमानदार है, तो वह राष्ट्र प्रगति पथ पर अग्रसर होता है। यदि किसी राष्ट्र का नेता स्वार्थी एवं भ्रष्ट है तो देश का अपकर्ष होने लगता है। राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए संविधान बनाया जाता है उस संविधान की अनुपालना सही ढंग से हो उस पर शासक की दृष्टि रहती है। प्रत्येक देश की राजनीति का उद्देश्य यही होता है कि उसकी जनता अनुशासनपूर्ण जीवन यापन कर स्वयं के साथ–साथ समाज और राष्ट्र का विकास करे।

राजनीति का स्वरूप अत्यन्त विस्तृत है। मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति का हस्तक्षेप हो चुका है। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जहाँ राजनीति का प्रवेश नहीं हुआ है। मनुष्य जीवन का प्रत्येक क्षेत्र राजनीति से संक्रमिक हो चुका है। डॉ॰ कृष्ण कुमार विस्सा चन्द्र ने राजनीति के स्वरूप को इस प्रकार रूपायित किया है – ''हम जिस युग में रह रहे हैं, वह राजनीति का युग है। हमारे दैनिक जीवन में राजनीति की व्याप्ति का अनुमान इसी बता से लगाया जा सकता है कि विज्ञान, साहित्य, धर्म, उद्योग, नीति, कुटनीति आदि क्षेत्रों तथा व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वसनीय संबधों में राजनीति की पैठ हो गयी है।''[8] इस प्रकार राजनीति सभी क्षेत्रों में सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभा रही है। विश्व में किसी भी राष्ट्र का स्थान निर्धारण उसकी राजव्यवस्था की समृद्धि के आधार पर होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में दावा किया कि वे मानव मुक्ति को लक्ष्य बनाकर चल रही हैं, परन्तु उन्होंने जिन व्यवस्थाओं को स्थापित किया उनको जनतंत्र का नाम तो अवश्य दिया परन्तु अधिकांश व्यवस्थाओं में 'तंत्र' औरों के ही हाथों में रहा 'जन' तो ज्यों का त्यों दास बना

---

[5] डॉ॰ एस॰ एस॰ अवस्थी, राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त, पृ॰ 28
[6] डॉ॰ एन॰ डी॰ अरोड़ा, आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ॰ 29
[7] डॉ॰ जितेन्द्र वत्स, साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनीतिक चेतना, पृ॰ 13
[8] डॉ॰ कृष्ण कुमार बिस्सा चन्द्र, साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनीति चेतना पृ॰ 4

रहा। दुर्भाग्यवश यही आज के समय में हमारे देश का कटु सत्य है। परिवार हो या समाज, धर्म हो या अर्थ, राजनीति हो या सांस्कृतिक आचरण इन सभी की अपनी मर्यादाएं होती है जिनका उल्लंघन होने पर विनाशकारी परिणाम ही परिलक्षित होते हैं। आधुनिक समय में इतना विकार अन्य किसी क्षेत्र में नहीं आया जितना राजनीति में आया। इस समय धर्म, सम्प्रदाय, बल, छल आदि के नाम पर राजनीति का संचालन होता है तथा राजनीति पर समाज के कुछ लोगों का प्रभुत्व स्थापित हो गया है। प्राचीन समय से चले आ रहे राजतंत्र की लोकतंत्र का नाम अवश्य दे दिया गया है परन्तु अब भी प्रजा की अपेक्षा राजा ही सर्वोपरि है तथा अपनी मनमानी करता है। आज समाज में होने वाले प्रत्येक घटनाक्रम को राजनीति से जोड़कर देखा जा रहा है। समाज में राजनीति ने अपनी गहरी पैठ जमा रखी है। इसे समाज से अलग करके नहीं देखा जा सकता। समाज में जन्म लेते ही मनुष्य राजनीति से प्रभावित होने लगता है और अन्त तक उसके प्रभाव में रहता है। केवल राष्ट्र में ही नहीं वैश्विक धरातल पर भी राजनीति की अहम् भूमिका होती है। अतः समाज में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो राजनीति से अछूता हो।

3.2 साहित्य, समाज और राजनीति का पारस्परिक संबंध

साहित्य और समाज का अटूट संबंध होता है। रचनाकार के जीवन पर अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आर्थिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। समाज से प्राप्त प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अनुभूतियों को रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। साहित्य समाज से और समाज राजनीति से किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित होते हैं। यही कारण है कि समाज में घटी किसी भी राजनीतिक घटना का प्रभाव साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। किसी भी साहित्य में अपने समाज की राजनीति की छाप स्पष्ट रूप से अंकित होती है, क्योंकि साहित्य तथा राजनीति दोनों का मूल आधार समाज ही होता हैं समाज के बिना साहित्य एवं राजनीति दोनों ही महत्त्वहीन हैं। साहित्य पर राजनीति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। साहित्य राजनीति से अछूता नहीं है। डॉ॰ हरदयाल का इस विषय में मन्तव्य इस प्रकार है – ''कोई भी साहित्य अपनी समकालीन राजनीति से असम्पृक्त और अप्रभावित नहीं रह सकता।... राजनीति अपने समय के साहित्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने का बराबर प्रयत्न करती है।''[9] मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसका प्रत्येक क्रियाकलाप समाज से प्रभावित होता है। और समाज राजनीति की पृष्ठ भूमि है जहाँ पर राजनीति जन्मती एवं पोषित होती है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। इस प्रकार समाज साहित्य और राजनीति में परस्पर गहरा संबंध जुड़ जाता है। साहित्य पर समाज के प्रभाव को परिलक्षित करने के लिए हम हिंदी

[9] डॉ॰ हरदयाल, साहित्य और सामाजिक मूल्य, पृ॰ 37

साहित्य के इतिहास का सहारा ले सकते हैं। इसमें प्रत्येक युग को उस समय की राजनीति ने अवश्य प्रभावित किया है।

सर्वप्रथम आदिकाल को लेते है। प्राचीन समय में भारतीय राजा युद्धों में विश्वास रखते थे तथा स्वयं को सम्पन्न बनाने के लिए एक दूसरे पर आक्रमण करते रहते थे। जिसका प्रभाव आदिकालीन साहित्य पर देखा जा सकता है। आदिकालीन साहित्य में युद्धों का सजीव चित्रण देखने को मिलता है तथा वीर रस प्रधान काव्य की रचना प्रचूर मात्रा में हुई है।

भक्तिकाल भीषण राजनैतिक अस्तव्यस्ता का समय था। राष्ट्र मुस्लिम शासकों द्वारा अधिकृत था, इसलिए इस्लाम राजधर्म बन चुका था औरंगजेब जैसे क्ट्टर शासकों ने हिन्दुओं के ऊपर अत्याचार किये। इस समय सम्पूर्ण समाज हिन्दू एवं मुस्लिम दो वर्गो में बंट चुका था। सारा देश द्वन्द्व के दौर से गुजर रहा था। हिन्दू मुस्लमान आपस में संघर्षरत थे। वे शैव, शाक्त एवं वैष्णव तीन वर्णो में विभक्त हो एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे हुए थे। तत्कालीन वैमनस्य एवं मानव–मानव के बीच बढ़ती कुंठा को तत्कालीन संत साहित्यकारों ने रचनाओं में उकेरा और सर्वधर्म समन्वय का पर्थ प्रदर्शित करते हुए निर्गुण भक्ति पर बल दिया। निर्गुण की स्तुति से हिन्दु एवं मुस्लमानों की आपसी टकराहट समाप्त हुई।

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल पर भी युगीन राजनीति का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस काल को एक प्रकार से राजनैतिक शांति का युग कहा जा सकता है। अब मुस्लिम शासक सत्ता पर पूर्णतः जम गए थे और आंतरिक व्रिदोह समाप्त हो चुका था। अब समाज का शासक वर्ग विलासिता में डूब गया था। इस वातावरण का प्रभाव साहित्यकार पर भी पड़ा फलतः इस युग के साहित्य में भोग–विलास, नग्नता आदि ने अपना स्थान बना लिया। रीतिकालीन साहित्य में भोग–विलास के खुले चित्रण का मूल कारण सामयिक राजनीतिक वातावरण का प्रभाव था। 1857 के बाद भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बन गया था। अब अंग्रेजों ने 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाकर भारत का खूब शोषण किया। समाज की परिस्थितियों को देखते हुए साहित्यकारों ने अपने साहित्य को नया रूप प्रदान किया। अब श्रृंगार रस को छोड़कर राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित होने लगा। इस समय की राजनीतिक परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप ही हमारे साहित्य में भी नई दिशा का प्रसार हुआ। अब धीरे–धीरे रचनाकारों ने सामाजिक यथार्थ को अपनी रचनाओं में प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया।

स्वतन्त्र्योत्तर कवियों ने अपने साहित्य में भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य किये हैं तथा जन साधारण को जागरूक करने का प्रयत्न किया है। इन्होंने अपने नाट्य–काव्यों में भारत की राजनीतिक स्थितियों के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए उसके आचरण में सुधार का संदेश दिया है। समाज, साहित्य एवं राजनीति आंतरिक एवं बाह्य दोनों रूपों में एक दूसरें को प्रभावित करते हैं यह तर्क सम्मत है।

3.3 स्वातन्त्र्योत्तर नाट्यकाव्यों में निरूपित राजनीति के विविध रूप

आज के समय में भ्रष्टाचार एवं राजनीति के गिरते स्तर ने भारतीय लोकतंत्र को अत्यधिक प्रभावित किया है। राजनीति ने वर्तमान समय में अपराधों को अधिक बढ़ावा दिया है। प्रत्येक साहित्यकार राजनीति के सभी पहलुओं को तथा इनके समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को सुक्ष्मता से देखता है। इस प्रकार एक अच्छा साहित्यकार जीवन के हर पक्ष को साहित्य में स्थान देता है। राजनीति जीवन का एक अनिवार्य अंग है इसकी महत्ता को समझते हुए स्वातन्त्र्योत्तर नाट्यकाव्यों में रचनाकारों ने राजनीतिक गतिविधियों पर प्रकाश डालने का स्तुत्य प्रयास किया है। नाट्यकाव्यों के माध्यमों से प्राचीन शासकों को प्रतीक बनाकर आधुनिक राजनीतिक परिस्थितियों को परिलक्षित किया गया है। आज विश्व के कोने–कोने में सत्ता के प्रति विद्रोह के समाचार मिलते हैं। कभी छात्रों का आंदोलन, कभी मजदूरों एवं कर्मचारियों द्वारा भूख हड़ताल–जनता कहीं सुखी नहीं है। पूँजीवादी देशों में यदि शोषण है तो साम्यवादी देशों में विचार स्वातन्त्र्य का अपहरण। पिछले शासन को जनता अच्छा मानती है नये को रोती है। वह पहले भी कुछ सत्ताधारी नेताओं के हाथ की कठपुतली थी और आज भी उसकी स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। आज भी हम भाई–भतीजावाद के शिकंजे में फंसे हुए हैं स्वार्थ के मद में अंधे होकर सत्ताधारी राजनेता आम जनता को ढाल बनाकर कार्य करते हैं। डॉ॰ धर्मवीर भारती कृत 'अंधायुग' नाट्य–काव्य में चित्रित प्रहरी जो आम जनता के प्रतीक हैं – के माध्यम से इसी समस्या पर प्रकाश डाला गया है –

हम जैसे पहले थे वैसे ही अब भी है,
शासक बदले
स्थितियाँ बिल्कुल वैसी ही है।
इससे तो पहले, कहीं शासक अच्छे थे
अन्धे थे .....
लेकिन वे शासन तो करते थे।''[10]

वर्तमान शासक के प्रति प्रजा की उदासीनता स्पष्ट परिलक्षित होती है। राजनीति में शासक प्रजा के हित और समानता के लिए तथा उनकी खुशहाली के लिए विविध कार्य करता है। आधुनिक राजनीति में कुर्सी हथियाने के लिए नेता लोग आम जनता में दंगे फसाद करवाते है। निरीह जनता जब तक इन राजनीतिक दलालों की चाल समझती है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। राजनीति का क्षेत्र व्यापक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीतिक बोध के विविध आयाम परिलक्षित होते है। जिनका प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष संबंध व्यक्ति, समाज, राष्ट्र से होता है राजनीति के विविधि रूप के अन्तर्गत जातिगत राजनीति, स्वार्थ की राजनीति, अनैतिक और

[10] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 109

भ्रष्ट राजनीति, नीति के ऊपर की राजनीति आदि हैं। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में राजनीतिक बोध की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। राजनीतिक समय बोध के विविध रूपों को रचनाकारों ने अपने नाट्य–काव्यों को रूपापित किया है। इतिहास लेखक भी एक बार तो असमञ्जस की स्थिति में अवश्य पड़ जाता है कि वह आने वाली पीढ़ी को सत्य का बोध किस प्रकार कराये। नाट्य काव्यों में निहित राजनीति के विविध रूप युद्ध की त्रासदी की व्यंजना, भ्रष्टाचार, अमानवीयता, आर्थिक विषमता तथा प्रजां एवं राजा के संबंधों को यथार्थ रूप में परिलक्षित किया गया है।

3.3.1 अनैतिक एवं भ्रष्ट राजनीति :

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् साहित्य के अतिरिक्त राजनीति के क्षेत्र में भी घोर अंधकार छाने लगा। आज राजनीति अपना स्वच्छ रूप खो चुकी है। वह एक ऐसे अजगर का रूप धारण कर चुकी है जो अपने अन्दर ईमानदारी, नैतिकता, मानवता, व्यवस्था आदि सभी को पचा रहा है। हमारे समाज में अनैतिक एवं भ्रष्टाचार ही सर्वत्र व्याप्त प्रतीत होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही भारत में संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। संघर्ष का युग समाप्त हुआ। जैसे ही सत्ता का युग आया वैसे ही ऊपरी भव्यता फिकी पड़ने लगी और परिस्थिति में अन्तर्निहित विवेकहीनता स्पष्ट दिखलाई देने लगी। वर्तमान समय में भी वही नेता है जिसके पास धन है सरकार उन्हीं के इशारों पर चलती है। राजशक्तियाँ लोलुप है, आज के समय में मनुष्य की स्थिति, मनोवृत्ति आत्माएँ सब विकृत हैं। धर्मवीर भारती कृत 'अंधायुग' आज से कुछ दिन पहले एवं आज के पश्चिमी और भारतीय साहित्य तथा राजनीति विषमता के युग का प्रतीक है। जिसके प्रारम्भ में ही लेखक ने इसका उल्लेख किया है –

''युद्धोपरान्त
यह अंधायुग वितरित हुआ
जिसमें स्थितियाँ, मनोवृत्तियाँ
आत्माएँ सब विकृत हैं
है एक बहुत पतली डोरी मर्यादा की
पर वह भी उलझी है दोनों पक्षों में।''[11]

'अंधायुग' एक प्रतीकात्मक नाट्य–काव्य है। इसमें निहित 'महाभारत का युद्ध' 'विश्वयुद्ध' का प्रतीक है। और उसके बाद अंधा युग वर्तमान समय का प्रतीक है। कौरवों एवं पाण्डवों को रूस एवं अमेरिका के प्रतीक रूप में दर्शाया गया है वहीं कृष्ण भारत जैसे तटस्थ देश का प्रतीक है। इस प्रकार प्राचीन कथा के माध्यम से नए युग का चित्रण है। साथ ही कृष्ण

[11] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 12

मानवीय मूल्यों के प्रतीक भी हैं जो भविष्य के रक्षक है। धृतराष्ट्र आज के राजा का प्रतीक है जो विवेकहीन है। उसकी विवेकहीनता का लाभ उठाकर व्यवस्था ने निजी लाभ के लिए आज नागरिक को अस्तित्व हीन बना दिया है। स्वार्थ के मद में चूर अपनी मर्यादा को बचाने के लिए लाखों करोड़ों परिवारों को बेसहारा छोड़ दिया जाता है। साहित्य में उन असंख्य बहादुर सपूतों की कोई चर्चा नहीं होती जो युद्ध में शासक के राजनैतिक स्वार्थो के कारण बलि देते हैं। केवल एक मनुष्य के स्वार्थ के कारण करोड़ों जनता का भविष्य अंधेरें में पड़ गया जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। भ्रष्ट राजनेता द्वारा प्रजा को शोषित किया जाता है और जनता सब कुछ समझते हुए भी मूक दर्शक बनकर शासक के अत्याचारों को सहती रहती है। अंधा युग में जनता के प्रतीक प्रहरियों की बातों के माध्यम से कवि ने वर्तमान जनता की मानसिक पीड़ा को रूपायित किया है।[12]

मर्यादा! अनास्था! पुत्रशोक! भविष्य!
ये सब
राजाओं के जीवन की शोभा है।
सूने गलियारे में सूना यह जीवन बीत गया
क्योंकि हम दास थे।

भ्रष्ट राजनीति के कारण जनता की स्थिति और भी दयनीय होती जा रही है वह स्वयं को मानसिक रूप से राजा की दास बना रही है। इतिहास लेखक भी एक बार तो असमञ्जस की स्थिति में पड़ जाता है कि वह वर्तमान पाठक को सत्य का बोध किस प्रकार करवाये। आधुनिक युग में उतना विकार अन्य किसी व्यवस्था में नहीं आया जितना राजनीति के क्षेत्र में आया है। इस समय धर्म, सम्प्रदाय, बल, छल आदि के नाम पर राजनीति का संचालन होता है। समाज में कुछ राजनैतिक लोगों का प्रभुत्व स्थापित हो गया है। वर्तमान शासक अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए अपनी ही प्रजा के साथ अनैतिक एवं अमानवीय व्यहवार करते हैं। राजनेता प्रजा के शोषण को अपना अधिकार समझता है। अंधा युग में राजतंत्र के ह्रास को स्पष्टतः संकेतित किया गया है। जो अतीत के वैभव एवं वर्तमान के यथार्थ से पीड़ित है –

''खाली हाथ, नंगे पाँव,
रक्त सने, फटे हुए वस्त्रों में
टूटे रथ के समीप, खड़ा था निहत्था ही
अश्रु भरे नैनों से उसने मुझे देखा
और माथा झुका लिया।''[13]

---

[12] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 17
[13] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 34

भारत की वर्तमान दशा को रूपायित किया गया है। वर्तमान परिस्थितियों से जुड़े बिना जो केवल अतीत के वैभव को भविष्य से जोड़कर चलता है। उसकी स्थिति दुर्योधन के समान होती है। परिवर्तन के लिए कोई विशेष समय नहीं है। बल्कि हर क्षण, हर पल इतिहास बदलने की क्षमता रखता है। वर्तमान में रहते हुए अतीत के पुनर्विचार से ही भविष्य बन सकता है। अतीत की मनोवृत्तियों में फंसे हुए, प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए मनुष्य की स्थिति अंधी, विवेकहीन हो जाती है। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने युगीन यथार्थ को प्रकट किया है। भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं अमानवीय को छोड़कर अपने राष्ट्र के प्रति ईमानदार, सदभावना, नैतिकता, मानवीयता का भाव उत्पन्न करने के लिए किसी मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती। भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता केवल वर्तमान को ही नहीं बल्कि भविष्य को भी प्रभावित करती है। वृद्धयाचक द्वारा दुर्योधन की विकृतियों को बदलने के लिए प्रेरित किया गया है –

उसका झूठा भविष्य
अब जाकर उसको बतलाऊँगा
वर्तमान से स्वतंत्र कोई भविष्य नहीं
अब भी समय है दुर्योधन
समय अब भी है
हर क्षण इतिहास बदलने का क्षण होता है।

कवि ने भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता के माध्यम से मानवीयता का संदेश दिया है सदाचार, नैतिकता के माध्यम से राष्ट्र की दशा को सुधारा जा सकता है।

भ्रष्टाचार आज हमारी नसों तक फैल चुका है राजनेता इतने भ्रष्ट हो गए हैं कि वे मानवीय मूल्यों को छोड़कर केवल स्वार्थ को देखते हैं आज के मनुष्य के लिए पैसा ही सब कुछ है चाहे वह किसी भी गलत ढंग से क्यों न कमाया जाए। आज का मानव पैसे का भूखा है। भले ही उसमें जीवन की भूख न हो परन्तु पैसे की भूख अवश्य है 'दुष्यन्त कुमार' रचित 'नाट्य–काव्य' 'एक कंठ विषपायी' में राजनैतिक भ्रष्टाचार को सर्वहत के राजनेताओं के प्रति व्यंग्यपूर्ण शब्दों के माध्यम से रूपापित किया गया है –

''यों भूखा होना
कोई बुरी बात नहीं है,
दुनिया में सब भूखे होते हैं
सब भूखे ....
कोई अधिकार और लिप्सा का
कोई प्रतिष्ठा का,
कोई आदर्शो का
और कोई धन का भूखा होता है।

ऐसे लोग हिंसक कहाते हैं।
माँस नहीं खाते,
मुद्रा खाते हैं।[14]

भ्रष्ट नेता राष्ट्र का अहित करने पर भी स्वयं सुख पूर्ण जीवन व्यतीत करते है। उनके लिए मानव की कोई अहमियत नहीं है। वे केवल भौतिक सुखों को ही महत्व देते हैं। युद्ध में जान–माल की हानि होने पर भी वे अपने सुखों में कमी नहीं होने देते। आम जनता को भले ही दो वक्त की रोटी न मिले परन्तु उनके शौक पूरे होने चाहिए। भ्रष्टाचारी राजनेता मानवता की अपेक्षा भौतिकता को अधिक महत्त्व देते हैं। दक्ष प्रजापति के भवन में यज्ञ विध्वंस के साथ ही सब कुछ नष्ट हो जाता है। दक्ष का सेवक सर्वहत इन्द्र, ब्रह्मा एवं विष्णु की सभा में पहुँचकर उन पर अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार का आरोप–प्रत्यारोप करते हुए व्यंग्यात्मक शब्दों में कहता है –

''सिर्फ लोग नहीं हैं तो क्या हुआ
लोगों के होने न होने से
क्या कोई दृश्य की महत्ता कम होती है?''[15]

भ्रष्ट राजनेता के लिए मानवीयता, धर्म, करूणा, दया, क्षमा जैसे मानवीय मूल्यों का अभाव रहता है। उसे केवल भौतिक सुखों से ही संतुष्टि मिलती है। 'एक कंठ विषपायी' में जहाँ दुष्यन्त कुमार ने भ्रष्ट राजनेताओं को दर्शाया है वहीं लक्ष्मीनाराण लाल ने भ्रष्ट नेताओं के साथ–साथ उनके भ्रष्ट चाटुकारों को भी प्रदर्शित किया है। राजनीति में केवल राजनेता ही नहीं उनके चाटुकार भी धर्म की आड़ में राजनीति करते हैं। जनता द्वारा सत्य बोलने पर उनकी आवाज को दबा दिया जाता है। 'सूखा सरोवर' नाट्य–काव्य में सरोवर के सूखने पर राजा का बंदी गृह भी टूट जाता है जिस कारण सत्य बोलने वाला व्यक्ति भी राजा की कैद से स्वंतत्र हो जाता है। जो राजा द्वारा बंदी बनाया गया था। इसी दौरान राजा का चाटुकार पुरोहित प्रजा को अपने झूठे व्यवहार में फंसाना चाहता है इसलिए वह झूठ बोलकर प्रेमपूर्वक जनता को भ्रष्टाचारी राजा की तरफ आकर्षित करना चाहता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार चुनाव के दौरान नेताओं के चाटुकार अपने–अपने प्रतिनिधि की अच्छाईयों का बखान करके जनता को अपनी और आकर्षित करते हैं। सूखा सरोवर नाट्य–काव्य में राजा के चाटुकार पुरोहित द्वारा प्रजा को झूठा झांसा देने पर उसी समय सत्य का प्रतीक वृद्ध व्यक्ति उसकी पोल खोल देता है –

''तुम्हें पहचानता हूँ मैं
धर्म के पीछे राजनीति है तू
पुरोहित नहीं राजा का वाहन है तू।''[16]

---

[14] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 66
[15] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 45

सरोवर के सूख जाने पर राजा के बंदीगृह से मुक्त सभी व्यक्ति खुश होते हैं वे कहते है कि यदि सरोवर नहीं सुखता तो वे कभी भी राजा के दुर्व्यवहार एवं अनैतिक षडयंत्र से नहीं छूट पाते। वहीं पुरोहित जैसे चापलूस धर्म की आड़ में राजनीति का खेल खेलते हैं वे साधारण जनता को सत्य से दूर रखते हैं तथा राजा की झूठी प्रशंसा करके अपने कार्य सिद्ध करते रहते हैं। सत्ताधारी नेता अपनी सत्ता को ही सर्वोपरि मानकर प्रसन्न रहते हैं।

'जगदीश गुप्त' कृत 'शम्बूक' नाट्य–काव्य में कवि ने राम की राजव्यवस्था के माध्यम से वर्तमान भ्रष्ट राजनीति को रूपायित किया है। आज का शासक अपने लाभ एवं स्वार्थ के लिए कोई भी भ्रष्ट कार्य करने से पीछे नहीं हटता। वर्तमान शासक की भाँति राम भी शम्बूक को अनेक प्रलोभन देता है। वह अतुल बैराज नामक लोक का आश्वासन देकर शम्बूक को तप से हटाना चाहता है। परन्तु शम्बूक के तर्क एक व्यक्ति के तर्क न होकर सम्पूर्ण जाति के तर्क है जिनके माध्यम से वह राम के भ्रष्टाचार को प्रस्फूटित करना चाहता है। राम शम्बूक के समक्ष दो शर्ते रखता है या तो वह अतुल वैराज लोक लेकर वहाँ राज्य करे अन्यथा तुम्हारा सिर काट दिया जाएगा। परन्तु शम्बूक इस वैभव को ठुकराकर राम से कहता है कि हे राम मुझे ऐसा लालच देकर तुम अपने स्वाभिमान की जगह अभियान का परिचय दे रहो हो। और स्वाभिमान रहित व्यक्ति श्वान के समान होता है। अभी तक हमने जिस राम को पढ़ा वह एक आदर्श राम रहा है परन्तु शम्बूक नाट्य–काव्य में राम भी वर्तमान भ्रष्ट शासक के रूप परिलक्षित होता है। शम्बूक कहता है कि यह प्रजा अभी बच्चे की भाँति तुम्हारी बात मानती हैं जिस दिन व्यस्क हो जाएगी अर्थात अपने अधिकारों का ज्ञान हो जाएगा उस दिन यह भी तुम्हारी विरोधी बनकर सामने आएगी। आज सरकार द्वारा दी गई परियोजनाओं का लाभ भ्रष्ट अधिकारियों के कारण ही गरीब जनता तक नहीं पहुँच पाता। इसलिए शम्बूक राम को संबोधित करते हुए कहता है कि सैकड़ों मीलों तक तुम्हारी कल्याणकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार हो रहा है लेकिन अगर तुम्हारी ये समस्त योजनाएँ मात्र उद्घाटन आदि तक ही सीमित होकर रह जाएं अर्थात् कागजों, कहानी, कथनी के स्तर तक ही सीमित होकर रह जाती है। इनका प्रतिफल एवं इनके गुणक परिणाम भूखे, नंगें, निर्धन, निस्सहाय असुरक्षित तथा शोषित लोक वर्ग तक नहीं पहुँच पाते। तुम्हारे भ्रष्ट अधिकारियों के कारण तुम्हारी योजनाओं का लाभ तुम्हारी निम्न प्रजा तक नहीं पहुँच पाता। इसलिए तुम्हारा श्रम व्यर्थ हैं, तुम्हारा राजधर्म व्यर्थ है कवि ने राम के माध्यम से वर्तमान शासक की प्रजा धर्म की कमियों को अभिव्यक्त किया है। भ्रष्टाचार से त्रस्त एवं पीड़ित लोक समुदाय की शोषित अवस्था का निर्भीक उद्घाटन किया हैं –

''सुना है फैली है तुम्हारी
आयोजनों तक योजनाएँ

---

[16] डॉ॰ लक्ष्मी नारायण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 37

यदि पहुँच पायी नहीं
भूखें, जनों तक योजनाएँ
ये निरक्षर वन्य पिछड़े लोग
सहते रहें कब तक यातनाएँ।''[17]

वर्तमान समय में भी अधिकांश कल्याणकारी योजनाएँ देश के निम्न वर्ग तक नहीं पहुँच पाती। सरकार द्वारा गरीबों के लिए चलाई योजनाओं का दस प्रतिशत भी उन तक नहीं पहुँच पाता क्योंकि उसका नब्बे प्रतिशत भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा हजम कर लिया जाता है। नितान्त निर्धन एवं बलहीन समुदाय पहले की ही भाँति शासक द्वारा संस्थापित एवं संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की उपलब्धियों का अधिभाग प्राप्त नहीं कर पाता। वन्य प्रदेश में रहने वाली अधिकांश जनजातियाँ, निरक्षर एवं पिछड़ी हुई हैं और कितनी यातनाएँ ये सहे? कब तक ये शोषण का शिकार बनती रहे? शम्बूक के प्रश्नों के माध्यम से कवि आज के शासक के समक्ष ये प्रश्न रखकर इनका उत्तर पाना चाहता है। ये पहले ही भूख एवं गरीबी के कारण अधमरे हो चुके हैं। तुम्हारे वन्य अधिकारियों द्वारा इन पर मनमाने अत्याचार किये जाते हैं किसकी आज्ञा से भ्रष्ट अधिकारी आम जनता को सताते हैं। इनके द्वारा निर्धन प्रजा के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता हैं। वर्तमान कर्मचारी निर्धन को सताने, लूटने के लिए नितियाँ गढ़ता रहता है। यह सभी दुर्व्यवहार शासक की मिलीभगत के कारण ही सम्भव हो पाता है। शासक का साथ होने के कारण ही भ्रष्ट अधिकारियों का इतना साहस बढ़ जाता है कि वे आम जनता पर अत्याचार कर पाते हैं –

क्यों न करे वनपाल
पशु की भाँति अत्याचार
क्यों न मानव सा
इन्हें मिलता रहे व्यवहार
उन्हें भी अपनत्व का साधन मिले
धन मिले या नहीं, पर ईंधन मिले।''[18]

पिछड़े लोगों की प्रत्येक युग में यही दशा रही है। कवि ने वन्य प्राणियों के माध्यम से वर्तमान, निर्धन जनता के शोषण उनकी निर्धनता, व्यथा, अभाव, असुरक्षा आदि का शिकायत भरा विवेचन किया है। जो व्यवस्था वर्ग सीमित स्वार्थो से लिप्त हो। वह सदैव प्रजाजनों के लिए घातक सिद्ध होती है। गरीब ग्रामीणों को उन्नति का अवसर भी नहीं मिल पाता 'शम्बूक' में व्यवस्थानुसार पिछड़े एवं वन्य लोगों के जीवन का यथार्थ वन देवता द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

---

[17] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 29
[18] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 30

प्रत्येक युग में पिछड़े वर्ग को अपने पेट की आग बुझाने के लिए परिस्थितियों से जूझना पड़ता है।

''यह जलाती है इन्हें दावाग्नि
या जलाती है इन्हें जठराग्नि।''[19]

निरक्षर और वन्य पिछड़े हुए लोग निरन्तर यातनाओं को सहते हुए कब तक संतोष धारण करे। इस तथ्य को वन–देवता ने राम के सम्मुख प्रश्ननिचह्न के रूप में उपस्थित किया है। अभावों के कारण वनवासी पशुओं की भांति जीवन–यापन करते हैं। भ्रष्ट अधिकारियों के कारण ही उन्हें ऐसा अभावयुक्त जीवन जीना पड़ता है। भ्रष्टाचार के कारण अमीर ही प्रत्येक योजना से लाभान्वित होते हैं राजव्यवस्था तभी सुचारू रूप से चल सकती है जब सम्पूर्ण प्रजा को समान अधिकार मिले वह भ्रष्टाचार, पापाचार एवं दुर्व्यवहार से मुक्त हो। जहाँ मानवता एवं समता का सबको अधिकार हो। समाज में अभावग्रस्त जीवन–यापन करने वाली जनजातियों के देश को वन देवता ने 'अभावों भरे उदासियों के देश' की उपमा दी है। जो जनजातियों की करूणा भरी स्थिति को व्याख्यायित करता है –

''यह विजन
नंगे बदन
वनवासियों का देश
यह अभावों भरा
सुप्त उदासियों का देश।''[20]

कवि ने जहाँ जनजातियों के अभावग्रस्त जीवन का वर्णन किया है वहीं इस ओर भी संकेत किया है कि यदि इस आदिवासी एवं भोली–भाली ग्रामीण जनता में शिक्षा की जागृति फैल गयी तो वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जाएगी और भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज उठाएगी। तब भ्रष्ट शासकों को मुँह की खानी पड़ेगी। शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के बाद भी हमारे देश की नस–नस में भ्रष्टाचार समाया हुआ है। जिसे निकाल पाना दुष्कर है। सभी को समान अधिकारों का ज्ञान प्रदान कर सर्वप्रथम असमानता को समाप्त करना होगा क्योंकि असमानता मानव के देवत्व को नष्ट कर उसे दानव बना देती है। मनुष्य को अपने साथ होने वाले अन्याय का ज्ञान होने पर वह स्वयं ही इनका विरोध करेगा। इसलिए कवि ने प्रतीक रूप में शिशु से व्यस्क होने की बात कही हैं –

''मृत्तिका में और सनने दो
उसे तनिक व्यस्क बनने दो।''[21]

---

[19] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 31
[20] वही, पृ॰ 32
[21] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 65

आज समाज में फैला भ्रष्टाचार राजनीति का ही दुष्परिणाम है। समाज में निहित सामाजिक संस्थाओं में हो रहे राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण समाज भ्रष्टाचार के शिंकेजे में कसता जा रहा है। 'चिड़िया की आँख' नाट्य–काव्य में सुभाष पंत जी ने भ्रष्ट राजनीति को चित्रित किया है इसमें भी शम्बुक की भांति भ्रष्टाचार को समाज की जड़ों में फैला हुआ चित्रित किया है। द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य को इसीलिए धनुर्विद्या नहीं दी जाती क्योंकि वह अछूत है द्रोण पाण्डवों एवं कौरवों के गुरू है वह जानते है कि यदि एकलव्य अर्जुन से अच्छा धनुर्धर बन गया तो उनका राज सम्मान नहीं होगा। इसलिए वह एकलव्य को शिक्षा देने से इंकार कर देता है कि वह कुपात्र है राजदरबार में रहने वाली माधवी राजतंत्र को गहराई से जानने के कारण राजनीतिक सड़यंत्रों से भली भांति परिचित है –

''आचार्य तुम्हें शिक्षा नहीं देंगे।
क्योंकि आश्रमों में तय होती है
राजतंत्र की कूटनीति।''[22]

वर्तमान व्यवस्था को कवि ने स्पष्टतः दर्शाया है आज भी सरकारी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में राजनेताओं का हस्तक्षेप देखने को मिलता है। राजनीतिक भ्रष्टाचार समाज की जड़ों तक फैल गया है इसे दूर कर पाना अत्यंत दुष्कर कार्य है द्रोण द्वारा शिक्षा न मिल पाने पर एकलवय कहता है कि द्रोण का विवेक राजकोष में गिरवी रखा है। वहीं विवेकहीन अर्जुन कुटनीति का शिकार है। फिर भी इतिहास उन्हीं के साथ है इस विषय में एकलव्य दुविधाग्रसत है, राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं षडयंत्रों के कारण ही द्रोण एकलव्य के साथ अन्याय करते हैं। अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रयासरत एकलव्य का अँगूठा माँगना भ्रष्टाचार को रूपायित करता है। अर्जुन के कहने पर ही द्रोण भ्रष्ट अधिकारी की भाँति घाटी के लोगों को प्रताड़ित करता है। भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज उठाने वाले एकलव्य की आवाज को वहीं दबा दिया जाता है।

3.3.2 स्वार्थपूर्ण राजनीति :

हमारे समाज में मानव का मानव से संबंध ही स्वार्थो पर आधारित हो गया है। मानव आज किसी से भी मेलजोल अपने स्वार्थो के कारण ही रखता है। आज की राजनीति स्वार्थाधारित है अपने निजी स्वार्थ के लिए नेता लोग निरीह राजनीति का प्रयोग समाज सेवा के लिए न करके अपने हितों की पूर्ति के लिए करता है उसे ही स्वार्थ की राजनीति कहते है। जो व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुटनीति का सहारा ले वह भी स्वार्थ की राजनीति होती है। हमारे समाज में चारों तरफ स्वार्थ की राजनीति व्याप्त है। शासक अपने स्वार्थो के लिए

[22] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 46

आम जनता का शोषण करता है अर्थ, राजनीति एवं अपराध तीनों को गहरा संबंध है। स्वार्थी अधिकारी राजनेताओं के हाथ की कठपुतली बनकर रहते हैं। राजनीतिक शासक धर्म सम्प्रदायों के नाम पर दंगे फसाद करवाकर अपने स्वार्थ की रोटियाँ सेंकते है। हाल ही में हरियाणा राज्य में हुए जाट आरक्षण में राजनैतिक पार्टियों का जुड़ाव सामने आया जिस कारण आरक्षण आंदोलन को एक–एक राजनैतिक मुद्दा बनाकर प्रस्तुत किया गया। दुर्भाग्य यह है कि राजनीतिक स्वार्थ मनुष्य को उसके नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से वंचित कर देता हैं। बड़े–बड़े अधिकारी राजनेताओं के ईशारों पर काम करते हैं। राजनीति का प्रशासनिक अधिकारियों पर दबाव भी उनके स्वार्थ को प्रकट करता है। आज नेता वोट बैंक की राजनीति करते हैं जिसका नुकसान जनता को उठाना पड़ता है। वर्तमान समय में स्वार्थपरता, रिश्वतखोरी हमारे देश को अंदर से खोखला कर रही है। आज की शासन व्यवस्था इतनी खोखली हो चुकी है कि वह व्यक्तिगत स्वार्थो के विषय में ही सोचती है। राष्ट्र के प्रति उसका कर्त्तव्य वह भूल चुकी है। 'धर्मवीर भारती' कृत 'अंधा युग' नाट्य–काव्य में कवि ने महाभारत से ली गई पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक समय की परिवारवाद एवं भाई भतीजावाद की राजनीति को चित्रित किया है। इसमें धृतराष्ट्र के व्यक्गित स्वार्थ को रूपायित किया गया है जो वर्तमान शासक का प्रतीक है –

''पर वह संसार स्वतः मेरे अंधेपन से उपजा था
मेरा स्नेह, मेरी घृणा, मेरी नीति, मेरा धर्म
बिल्कुल मेरा ही व्यक्तिक था
उसमें नैतिकता का कोई बाह्यमापदण्ड़ था ही नहीं
कौरव जो मेरी मांसलता से उपजे थे
वे ही अंतिम सत्य
मेरी ममता की वहाँ नीति थी,
मर्यादा थी।''[23]

अंधायुग में निहित धृतराष्ट्र का व्यक्तिगत स्वार्थ ही युद्ध का कारण बन जाता है जिसमें कौरव एवं पाण्डव सभी कुचले जाते है। सब नष्ट होने पर ही धृतराष्ट्र को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ का आभास होता है। वर्तमान समय में भी राजनीति स्वार्थो पर आधारित है। आज के सत्ताधारी नेता भी धृतराष्ट्र की भाँति अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए आम जनता का शोषण कर रहे हैं। वे अपनी सुविधानुसार नियमों को परिचालित करते हैं। आम जन के कष्टों का उनकी सुख सुविधाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अपने स्वार्थो एवं सुखों के अनुरूप ही शासक

[23] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 19

संविधान में संशोधन कर लेते हैं ' एक कंढ विषपायी में 'दुष्यंत कुमार' द्वारा देव सभा के माध्यम से भूतल के स्वार्थपूर्ण प्रजातंत्र पर व्यंग्य किया गया है –

''क्या कहते हो? देवराज
क्या यह भी लौकिक नेताओं का प्रजातंत्र है
जो जब चाहे तब
इच्छाओं से परिवर्तन कर
नियमों को अनुकूल बना ले।''[24]

वर्तमान शासन प्रणाली पर ब्रह्मा के माध्यम से कवि द्वारा किया गया यह व्यंग्य सार्थक प्रतीत होता है। क्योंकि आज के समय में चुनाव जीतने पर राजनेता अपनी मनमानी करते हैं। कवि ने राजनेताओं द्वारा प्रताड़ित जनता को भी सर्वहत के माध्यम से प्रस्तुति प्रदान की है। सर्वहत जो आप जनता के प्रतीक रूप में प्रवेश करता है वह शासकों पर व्यंग्य करता है कि वे जनता का रक्त पीने वाले पिशाच हैं, इसलिए वह भी भूख से व्याकुल रक्त पान करना चाहता है। इन्द्र द्वारा यह कहने पर कि देवलोक में रक्त नहीं मिलता। सर्वहत कहता है कि शासकों के पास कभी किसी चीज की कोई कमी नहीं होती वह चाहें तो रक्त के समुन्द्र बहा सकते हैं। सर्वहत के व्यंग्य के माध्यम से आधुनिक शासक पर करारी चोट की गई है –

''आप लोग शासक हैं,
और शासकों को कहीं
रक्त की कमी हुआ करती है
आप लोग चाहे तो मेरे लिए
रक्त का समुन्दर भर सकते हैं
पर मैं समझता हूँ
मुझको बहलाते हैं आप लोग
आप लोग मुझसे हैं असन्तुष्ट।''[25]

स्वार्थी अधिकारी भूखे गिद्वों की भाँति ताक लगाये बैठे रहते हैं। ये बहुत अवसरवादी होते है जैसे ही भोली–भाली जनता को लूटने का अवसर इन्हें मिलता है ये उसे चूकते नहीं है। 'धर्मवीर भारती' ने अपने नाट्य काव्य 'अंधा युग' में ऐसे स्वार्थपूर्ण अधिकारियों की तुलना गिद्ध से की है जो हर समय शिकार की ताक लगाये बैठा रहता है। कवि ने स्वार्थी व्यक्ति को गिद्ध के प्रतीक रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया है –

''ये गिद्ध हैं
लाखों करोड़ो

---

[24] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 24
[25] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 117

पँख फैलाये
छिप जाओ
नर भक्षी हैं
ये गिद्ध भूखे है।''[26]

कौरव नगरी का विनाश धृतराष्ट्र की अंधी स्वार्थ नीति के कारण हुआ जिसमें प्रहरियों के वार्तालाप के माध्यम से कवि ने आधुनिक समय बोध को प्रखरता प्रदान की है। उसी प्रकार एक कंठ विषपायी में दक्ष की नगरी के ध्वस्त हो जाने के बाद के दृश्य को देखते हुए सर्वहत व्यंग्य करता है कि स्वार्थी शासकों को राज्य नष्ट होने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ता इनका नुकसान भी आम जनता को ही भुगतना पड़ता है। शासक सब कुछ नष्ट होने पर भी अपने भौतिक सुखों में मग्न रहता है। इसी नवीन भावबोध को उद्‌बोधित करती हुई 'एक कंठ विषपायी' की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

''देखो ये महल कँगूरे हैं,
कलश हैं। अतिथि भवन है
राजपथ है
सिर्फ लोग नहीं है तो क्या हुआ
लोगों के न होने से
क्या कोई दृश्य की महत्ता कम हो जाती है।''[27]

प्रजा को होने वाली परेशानियों का आभास किसी भी शासक को नहीं होता। वह अपने स्वार्थी जीवन में इतना उलझा रहता है कि उसे अपनी प्रजा के कष्टों की कोई समझ नहीं होती। 'शम्बूक' नाट्य काव्य में राम भी कही हुई बातों पर विश्वास करके शम्बूक का वध करने के लिए वन में चल पड़ता है। राम अपने स्वार्थ के कारण ही शम्बूक को वध करना चाहता है क्योंकि पुरोहित द्वारा बताया जाता है कि शम्बूक के तप से राम का राज्य नष्ट हो जाएगा इसी कारण वह विचार किये बिना ही हथियार उठाकर वन में प्रस्थान करता है। राम और शम्बूक के मध्य काफी समय तक तर्क वितर्क चलता रहता है परन्तु कोई उचित समाधान नहीं होता। अन्त में राम द्वारा शम्बूक का सिर काट दिया जाता है तथा शम्बूक की कटी हुई गर्दन राम से प्रश्न करती है कि यह दूषित प्रशासन व्यवस्था, यह त्रुटिपूर्ण समाज दर्शन, यह स्वार्थपूर्ण राजनीति कब तक धरती पर यूं ही चलते रहेगें? शम्बूक के प्रश्न के माध्यम से आधुनिक शासक को चेताने का सफल प्रयास किया गया हैं :–

''शासकों को सदा यही सुविधा रही है राम
प्रजा को इससे सदा दुविधा रही है राम।

---

[26] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 117
[27] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 45

मारते हो और कहते हो इसे उद्धार
चलेगा कब तक तुम्हारा यह घृणित व्यापार?[28]

राम के माध्यम से कवि ने 'शम्बूक' में वर्तमान समय में स्वार्थ से परिपूर्ण राजव्यवस्था को चित्रित किया है। राम ने अपने स्वार्थ के कारण ही विभीषण को अपने पक्ष में कर लिया, वहीं विभीषण भी सत्ता पाने के स्वार्थ में लिप्त अपने ही भाई के विरोधी राम के साथ मिलकर राम को रावण के सारे रहस्य बताकर उसकी मृत्यु का कारण बनता है। इसी कारण विभीषण को अब भी बंधुघाती कहकर पुकारा जाता है। स्वार्थ पूर्ण राजनीति का एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत करते हुए शम्बूक सीता के साथ हुए अन्याय का प्रश्न उठाता है कि जब राम को वनवास हुआ तो सीता ने अपना पत्नी धर्म निभाते हुए राम का साथ दिया परन्तु फिर भी गर्भवती सीता को राम के राज्य से निर्वासित कर दिया गया। यह राम की कैसी नियति है यदि वह चाहता तो राज्य त्याग कर सीता के साथ वन गमन कर सकता था। परन्तु अपने राज्य स्वार्थ के कारण ही राम ने ऐसा नहीं किया।

हमारे समाज में भ्रष्टाचार इतना व्याप्त हो गया है कि इसे जड़ से निकालने के लिए सदियाँ लग जाएगी। भ्रष्ट लोगों के समक्ष नैतिकता व सदाचार की बात करना बेकार है क्योंकि वे लोग केवल अपने स्वार्थ की सोचते है उससे आगे उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता। निजि स्वार्थ के कारण ही राजनैतिक पार्टियाँ, दंगे, लूटमार, धमाके आदि करवाती हैं। ताकि भोली–भाली जनता को फंसा कर वे अपने स्वार्थ को पूरा कर सके। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में कवि ने स्वार्थपूर्ण राजनीति को दर्शाने के साथ–साथ इससे होने वाले भारी खतरे के प्रति भी लोगों को अगाह किया है।

3.3.3. राजनीतिक अमानवीयता का चित्रण :

आधुनिक युग में जितना विकार राजनीति में आया है उतना समाज की किसी अन्य व्यवस्था में नहीं आया। वर्तमान समय में राजनीतिज्ञ जनता के साथ अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए अमानवीय व्यवहार करते हैं। वह जनता का हर तरह से शोषण करना अपना अधिकार समझते हैं। प्राचीन समय में धर्म एवं नैतिकता को अधर्म से खतरा होता था लेकिन आज धर्म को राजनीति से खतरा हो गया है। आधुनिक राजनीति के आधार पर ही धर्म, सम्प्रदाय, जाति, झूठ, बल आदि रह गये है। 'धर्मवीर भारती' ने राजनीति में बढ़ते अमानवीयता के व्यवहार के प्रति चिंता व्यक्त की है तथा अपने नाट्य–काव्य अंधा युग में इसे अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'अंधा युग' में धृतराष्ट्र के माध्यम से कवि ने एक ऐसे राजा का चित्र प्रस्तुत किया है जो अपने अहंकार, स्वार्थ, लिप्साओं में डूबा हुआ है। जनता भी आज ऐसे की शासक प्रसन्नता में अपना

[28] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 53

हित समझती है। उसके विवेक एवं बुद्धि पर ताले पड़े हुए हैं। वह शासक के ईशारे पर ही बिना सोचे समझे अमानवीय कर्म करने पर उतर आते हैं। वर्तमान में रहकर उसकी उपेक्षा करना, हर पल अतीत का रोना रोते रहना और भविष्य की हत्या करना मानसिक अवस्था का सूचक है अमानुषिक, शक्तिशाली, स्वाधीन विज्ञान ने स्वार्थी मानव के हाथ में अनेक अस्त्र, शस्त्र थमा दिये है जिनसे मानवता पर खतरा और बढ़ गया है। अश्वत्थामा द्वारा पाण्डव शिविर में जघन्य कर्म किया जाता है जो राजनीतिक षडयंत्र का अमानवीय रूप है –

–''धुँआ, लपट, घायल घोड़े, टूटे रथ
रक्त, मंद, मज्जा, मुण्ड
खण्डित कबन्धों में,
टूटी पसलियों में
विचरण करता था अश्वत्थामा
सिंहनाद करता हुआ
नर रक्त से वह तलवार उसके हाथों में,
चिपक गई थी ऐसे,
जैसे वह उगी हो,
उसी के भुज मूलों से।''[29]

महाभारत युद्ध के दौरान होने वाले अमानवीय कुकृत्यों को कवि ने सुंदर ढंग से रूपायित किया है इसे पढ़कर वास्तविकता का आभास होता है। अश्वत्थामा द्वारा पाण्डवों को मारना एवं पाण्डवों द्वारा दुर्योधन, दुशासन को मारना अमानवीयता की चरम सीमा को दर्शाता है।

राजनैतिक षड्यंत्रों के द्वारा जनता के साथ हो रहे अमानवयी व्यवहार को कवि ने नाट्य काव्यों में गहनता से रूपायित किया है। अंधायुग में जहाँ अश्वत्थामा, धृतराष्ट्र एवं भीम के माध्यम इस तथ्य को अभिव्यक्ति प्रदान की है वहीं 'शम्बूक' में राम के कार्यो को अमानवीय ढंग से चित्रित किया गया है। कवि ने राम द्वारा निर्दोष शम्बूक के वध का अमानवीय चित्र इस प्रकार प्रस्तुत किया है –

''नृप राम ने, कर दिया खड्ग–प्रहार
कट गया, शम्बूक का सिर
बह चली, कच्चे रूधिर की धार।''[30]

शम्बूक अछूत होने से राम के इस अमानवीय कृत्य का शिकार बन जाता है। विशेषतः निम्न जातियों के साथ शासक का व्यवहार अत्यन्त दयनीय हो जाता है। राज सैनिक भी जनता

[29] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 83
[30] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 68

का शोषण करते है। जनता के प्रति उनका दुर्व्यवहार अत्यन्त दयनीय होता है। सरकार द्वारा किसी योजना को आरम्भ करने का 10 प्रतिशत भाग भी जनता तक नहीं पहुँच पाता। राम के राज्य में ब्राह्मण बालक की अकाल मृत्यु का दोष प्रजाजन अंधविश्वास के कारण शम्बूक के तप को मानते है, किसी शूद्र द्वारा तप करना अपराध हो जाता है यह विचारणीय प्रश्न है। जबकि प्रजा अंधविश्वास में लिप्त ऐसा उचित मान लेती है। कभी धर्म के नाम पर कभी अंधविश्वास के कारण प्रजा को राजा के अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ता है। किसी के जीवन की डोर किसी की मृत्यु से कैसी जुड़ी हुई हो सकती है। शम्बूक के वध से विप्र का पुत्र कैसे जीवित हो सकता है? कवि ने अंधविश्वास पर प्रश्न चिह्न लगाया है। तथा साथ ही प्रजा की राम के प्रति सहमति दिखाकर अंधविश्वास को बढ़ावा भी दिया है। अंधविश्वास के कारण ही शम्बूक के तप करने को विप्र बालक की मृत्यु का कारण बताया जाता है। क्योंकि शम्बूक दलित है और दलितों को तप करने का अधिकार नहीं होता। इसलिए ही राम द्वारा उसकी हत्या की जाती है। जगदीश गुप्त ने शम्बूक में व्यंग्य को तार्किकता की कसौटी पर कसने के उपरांत सबल वाणी प्रदान की है। मनुष्यगत असमानता के यथार्थ को जाति–व्यवस्था का आधार लेकर व्याख्यापित किया गया है –

''तप नहीं शुद्र का कर्त्तव्य,
फिर से सोच लो शम्बूक।
उसे सेवा कर्म ही भव्य
क्यों उसमें करे वह चूक।''[31]

राम द्वारा शम्बूक के साथ किये गये अमानवीय व्यवहार के कवि को इसलिए चित्रित किया है कि आधुनिक समय में भी जातिगत भेदभाव के कारण निम्न वर्ग को शम्बूक की भांति शासक के अमानवीय शोषणों का शिकार होना पड़ता है। राम द्वारा शम्बूक का सिर काटे जाने पर भी शम्बूक राम से तर्क करता रहता है कि क्या राम राज्य में तप करना भी पाप समझा जाता है। सभी को अपने–अपने कार्यो का फल मिलता है। फिर शम्बूक की मृत्यु से विप्र के पुत्र को जीवनदान कैसे मिल सकता है स्थिति के भली–भांति परिचित होते हुए भी राम द्वारा निर्दयी होकर शम्बूक का सिर तलवार से काट दिया जाता है। शम्बूक का कटा हुआ सिर शासक की अमानवीयता का प्रत्यक्ष चित्र प्रस्तुत करता है। शासक द्वारा किसी निर्दोष प्रजाजन का सिर काटना एक जघन्य अपराध है। राजा के भृत्यों द्वारा भी आदिवासी जनता पर अनेक अत्याचार किये जाते हैं। राजा के भृत्यों द्वारा उन्हें मारा पीटा जाता है तथा उनके साथ पशुवत व्यवहार करते है। छोटी–छोटी बातों पर इन्हें मारा जाता है तथा उनकी स्त्रियों को भोग्या वस्तु समझकर इनका शोषण करते हैं तथा उनके बच्चों के साथ होने वाला दुव्यर्वहार भी अमानवीय

[31] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 50

है। कवि द्वारा यह प्रश्न उठाया गया है कि कब तक ये निर्धन एवं अज्ञान ग्रामीण शासक की भर्त्सना को सह सकेंगे? जनजातियों के साथ होने वाले पशुवत व्यवहार को कवि ने चित्रित किया है –

''क्यों करे वनपाल
पशु की भांति अत्याचार
क्यों न मानव सा
इन्हें मिलता रहे व्यवहार।''[32]

कवि अमानवीय राजनीति को दर्शाकर मानवता का संदेश देना चाहता है। ईर्ष्या, द्वेष क्लेश को दूर कर प्रेम, शांति की स्थापना चाहता है। जब मनुष्य के तयोगुण उसके सतगुणों पर हावी हो जाते है तो वह मनुष्यता भूलकर पशुता का व्यवहार करता है। वह अपना विवेक, सोचने, समझने की क्षमता खो देता है? गुणों के कारण ही मनुष्यों के व्यवहार की परख होती है। जब सतोगुण पर रजोगुण हावी हो जाता है तो मनुष्य में राक्षसी प्रवृत्तियों का वास होता है इसी के कारण राम गुणी सहृदय, साहसी वीर होते हुए भी नारद की बातों को सत्य मानकर शम्बूक के वध के लिए तैयार हो जाते है। गीता में भी मनुष्य के तमस और राजस गुण बताए गए हैं। रजोगुणों के हावी होने के कारण राम निर्दयी एवं कठोर शासक बनकर शम्बूक का वध कर देता है।

आधुनिक राजनीति में भ्रष्टाचार, आचरणहीनता, अमानवीय व्यवहार, स्वार्थ भाई भतीजावाद जैसे कारकों ने अपनी गहरी पैठ जमा ली है। जिस कारण आधुनिक राजनीति का स्तर गिरता जा रहा है। वर्तमान समय में राजनीति को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है। इसे मानव सेवा का साधन न समझकर अपने स्वार्थो के लिए प्रयोग किया जाता है। युद्धों के माध्यम से होने वाले अमानवीय नर–संहार को 'नरेश मेहता' ने 'संशय की एक रात' नाट्य–काव्य के माध्यम से चित्रित किया है –

''युद्ध के उपरान्त होगी शान्ति
इसका तो नहीं विश्वास
यह युद्ध सम्भव है अनागत युद्ध का कारण बने
फिर संघर्ष फिर संहार
इस चक्र का कोई नहीं अन्त।''[33]

'संशय की एक रात' के माध्यम से कवि अमानवीयता के दमन चक्र को समाप्त कर मानवीयता की स्थापना का उपदेश देता है। आज के समय में प्रचलित षड्यंत्रकारी राजनीति को कवि नैतिकता, धर्म एवं सेवा भाव का संदेश देने का प्रयत्न करता है। इसलिए राम युद्ध को

[32] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 29
[33] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 66

रोककर जन को विनाश से बचाना चाहते हैं। वे न्याय एवं सत्य की रक्षा कर शांति की स्थापना करना चाहते है –

''आज तक निमित्त रहा
कुल के विनाश का
लेकिन! अब नहीं बनूँगा कारण
जन के विनाश का।''[34]

राम के माध्यम से कवि ऐसे शासक की स्थापना चाहता है जो जनता के हित के लिए कार्य करें। जबकि आधुनिक समय में परिस्थितियाँ इसके विपरीत हैं। आधुनिक समय में ज्यादातर अपराध राजनीति की छत्र–छाया में ही होते हैं। राजा द्वारा अपनी मनमानी करते हुए प्रजा को प्रताड़ित करना आज के समय में आम हो चुका है। लोकतंत्र के नाम पर आज भी राजतंत्र को ही बढ़ावा दिया जाता है। सम्राट अशोक को 'उत्तर–प्रियदर्शी' नाट्य–काव्य में आधुनिक राजा के रूप में चित्रित किया गया है। जो प्रजा को यंत्रणा देने के लिए नरक का निर्माण करवाता है तथा स्वयं को परमेश्वर मानता है। यद्यपि नाट्य–काव्य 'उत्तर–प्रियदर्शी' में ऐतिहासिकता की अपेक्षा पौराणिकता, कल्पना को अधिक प्रमुखता दी गई है। अशोक को अहंकार से विकृत राजा एवं भिक्षु को निर्विकार, करूणा, प्लावित, स्थित प्रजा मानव का प्रतीक मानते हुए नाट्य–काव्य की कथा को प्रतीकात्मक सार्थकता प्रदान की गयी हैं। प्रियदर्शी सत्ता के मद से इतना चूर है कि वह अपनी सत्ता को ही सर्वोपरि सत्ता समझता है। राजा के अहंकार को कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से चित्रित किया है –

''यह पृथ्वी परमेश्वर
व्यापक अपनी सत्ता का निकष
मानता है अपने ही रचे नरक को।''[35]

राजा प्रियदर्शी द्वारा नरक का निर्माण करवाकर प्रजा को प्रताड़ित करना वर्तमान राजा को रूपायित करता है परन्तु राजा के द्वारा नरक में प्रवेश की घटना के माध्यम से राजा को नरक की अनुभूति करवाई जाती है। नरक की यंत्रणा पाकर राजा को असहनीय कष्टों का अनुभव होता है। तभी वह प्रजा के कष्टों का अनुभव कर पाता है। राजा द्वारा स्वयं को ही परम सत्ता समझ कर प्रजा पर अत्याचार करने की अमानवीयता का चित्रण कवि ने सफलतापूर्वक किया है।

सुभाष पंत द्वारा रचित नाट्य काव्य 'चिड़िया की आँख' में भी कवि ने घाटी के लोगों पर हो रहे अत्याचार के माध्यम से राजनैतिक अमानवीयता का चित्रण किया। आज के शासक की भाँति युधिष्ठिर द्वारा भी अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए घाटी के लोगों को अनेक यातनाएँ दी

---

[34] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 32
[35] डॉ॰ अज्ञेय, उत्तर प्रियदर्शी, पृ॰ 42

जाती है। राजा का अहम् जनता के जीवन से भी बड़ा बन जाता है। युधिष्ठिर आधुनिक राजनेता की भाँति अपनी कीर्ति एवं यश को बढ़ाने के लिए उनके छोटे–छोटे राष्ट्रो को तबाह कर देता है। इसी प्रकार धृतराष्ट्र भी सत्ता के मोह में अंधा है वह प्रजा के सुख दुख नहीं देख पाता। धृतराष्ट्र के माध्यम से कवि ने आधुनिक राजनेता का उदाहरण प्रस्तुत किया है –

''धृतराष्ट्र अंधे हैं
प्रजा के दुखों और अभावों को देख नहीं पाते।''
उनसे पूछे यही सवाल –
वही गात है वही चाम है
नसो में लाल खून बहता है
फिर भी हमारी हत्याएँ करने का
उनको कैसे है अधिकार।''[36]

आधुनिक प्रजा अपने साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार के विरूद्ध राजा से सवाल पूछती है। 'चिड़िया की एक आँख' में कवि ने ऐसे समाज को चित्रित किया है जो चुपचाप सब कुछ न रहकर अपने साथ हो रहे अन्याय के विरूद्व विरोध प्रकट करता है।

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने राजनीतिक अमानवीयता के प्रति गहरी चिंता व्यक्त की है बढ़ती अमानवीयता के कारण लोकतांत्रिक व्यवस्था को भी खतरा हो सकता है। कवियों ने जहाँ अनैतिकता, भ्रष्टाचार अमानवीय राजनीति का वर्णन किया है वहीं जनता में इसके विरूद्व जागृति उत्पन्न करने का भी प्रयास किया है। आधुनिक राजनीति मानवीय मूल्यों से विहीन होती जा रही है तथा इसका पूर्ण रूपेण व्यवसायिकरण होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में राजनीति में अमानवीयता का मिलना स्वाभाविक है। अतः भारतीय राजनीति को सुधार की आवश्यकता है। तथा मानवीय आदर्शो को स्थापित कर उनके रास्ते पर चलने की आवश्यकता है। नाट्य–काव्यों में इन्हीं मानवीय मूल्यों को महत्त्व देकर राजनीतिक अमानवीयता को समाप्त करने का भरसक प्रयास किया गया है।

3.3.4 राजा, प्रजा और राज्य का स्वरूप :

किसी भी देश की व्यवस्था को चलाने के लिए अनुशासन का होना अति आवश्यक है और अनुशासन को व्यवस्थित करने के लिए अनुशासन तंत्र का होना भी जरूरी है। शासन तंत्र को चलाने के लिए कुछ नीति–नियमों पद्वतियों तथा सिद्वान्तों को तैयार किया जाता है। जिनका सभी व्यक्तिों द्वारा पालन किया जाता है प्राचीन समय में जो संबंध राजा और प्रजा होता था वहीं सबंध आज परिवर्तित रूप में शासन प्रणाली का है। आज की शासन व्यवस्था में

[36] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 25

स्वार्थ, सत्ता मोह, लोभ, अहंकार, शोषण और भाई भतीजावाद का बोलबाला है। आधुनिक शासन प्रणाली का आधार पर केवल दाँव पेंचों और अवसरवादिता पर टिका हुआ है। किसी भी देश की प्रगति उसकी शासन व्यवस्था पर ही निर्भर करती है। शासन व्यवस्था जितनी स्वच्छ, स्वस्थ और मजबूत होगी वह देश भी उतना ही उन्न्त और विकसित होगा। यद्यपि आज अनेक बुराइयों के कारण शासन तंत्र का स्वरूप विकृत हो गया है। और किसी भी विकृति को साहित्यकार समाज के सामने लाने का अथक प्रयास करता है। वही प्रयास स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में रचनाकार द्वारा किया गया है। राजा एवं प्रजा के गहन संबंधों को स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में उद्घाटित किया गया है। जैसा राजा होगा वैसी ही प्रजा होगी और वैसा ही राज्य का स्वरूप होगा। क्योंकि प्रजा एवं राजा की मिश्रित विचारधारा से ही राज्य का स्वरूप निर्मित होता है। धर्मवीर भारती कृत 'अंधायुग' में चित्रित युग उस मर्यादाहीन युग से सबंधित है जिसमें कुंठा निराशा, विकृति, कुरूपता और अंधापन अपने पूर्ण अंगों के साथ विकसित हुए हैं। पौरूष एवं विवेकहीन राजा के राज्य में नागरिकों की भी सभी इच्छा शक्तियाँ नष्ट हो जाती है। प्रशासनिक व्यवस्था के साथ ही उनका अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाता है। उदासीन शासक के कारण वे हताश एवं निराश हैं। शोषक वर्ग के हाथों की कठपुतली मात्र बने हुए हैं। उनका स्वयं का कोई विकसित बोध नहीं हैं। राजा की इसी विवेकहीनता का लाभ उठाकर शोषक एवं पूँजीवादी वर्ग ने निजी लाभ के कारण आज के नागरिकों को अस्तित्व हीन बना दिया है। उनकी सभी आशाओं एवं भावनाओं को समाप्त कर कुण्ठित हताश एवं निरर्थक बना दिया है। 'नरेश मेहता' ने अपने नाट्य–काव्य प्रवाद पर्व में भ्रष्ट शासक व्यवस्था से परे आदर्श राज्य की स्थापना की है जहाँ राजा और प्रजा दोनों का समन्वय हो।

''अनाम साधारण जन का विश्वास है
जिसने उसे निर्भय अभिव्यक्त किया है
तो राज्य, न्याय तथा आपको
उस अनाम प्रजा के विश्वास की
अभिव्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए।''[37]

राजा को अपने राज्य के प्रत्येक जन के विश्वास का पात्र होना चाहिए। इससे दोनों समन्वात्मकता पैदा होती है कवि राम राज्य के माध्यम से आधुनिक समय में राजा एवं प्रजा के मध्य मधुर संबधों की कामना करता है। राजा को प्रजा की इच्छाओं एवं आक्षाओं के अनुरूप कार्य करना चाहिए। नरेश मेहता द्वारा कृत नाट्य–काव्य प्रवाद पर्व में सीता इसी बात के लिए प्रतिश्रुत है कि यदि किसी साधारण जन ने आपके गरिमापूर्ण व्यक्तित्व पर ऊँगली उठाई है तो

[37] डॉ॰ नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ॰ 115

आपका धर्म है कि राजा होने के नाते प्रजा के इस प्रश्न का हल करें ताकि प्रजा अपने राजा के न्याय को सही मानते हुए राजव्यवस्था के बनाए नियमों का पालन करे।

प्रवाद पर्व में राजसत्ता एवं राजव्यवस्था के संबंध में राम का दृष्टिकोण पूर्णतः जनतांत्रिक है। जो वर्तमान व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत है। वह न तो प्रजा के विरोध को शक्ति द्वारा कुचलने के पक्ष में है और न झूठे प्रचार से उसे दबाना चाहते है। उनकी दृष्टि में विरोध प्रकट करने वाले एवं असहमति प्रकट करने वालों के अस्तित्व को मिटाना पाप है। राम इस बात से असंतुष्ट है कि कोई व्यक्ति सम्पूर्ण सत्ता, सारे अधिकार में लेकर प्रजा जनों को अपना प्रत्येक निर्णय मानने के लिए बाध्य करें। इसीलिए राम स्पष्ट करता है कि –

''सत्ता के गोमुख पर बैठकर
उसके सारे शक्ति जलों को
अपने ही अभिषेक के लिए
सुरक्षित रखना
ये कौन–सा दर्शन है? लक्ष्मण।''[38]

कवि द्वारा प्रवाद–पर्व नाट्य काव्य की रचना उस समय की गई जब प्रजा पर शासक वर्ग ने अंकुश लगा रखा था। किसी को भी स्वतंत्र रूप से कुछ भी बोलने का मौका नहीं दिया जाता था। ऐसे में प्रस्तुत नाट्य काव्य के माध्यम से मेहता जी ने जनतांत्रिक राज्य की स्थापना करने का प्रयास किया। वे राम को साधारण जनता का प्रतिनिधि मानते हैं तथा भ्रष्टाचार, कुंठित, शोषित, भाईभतीजावाद की राजनीति से अलग होकर आदर्श राज्य की स्थापना करना चाहते हैं। ऐसे में राम भाषा, वाणी एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का महत्व प्रतिपादित करते हुए धोबी के पक्ष में निर्णय देते हें। राम रावण के समान राष्ट्र का प्रतीक नहीं बनना चाहते बल्कि ऐसा राजतन्त्र चाहते है जहाँ मनुष्य को अपनी भावनाओं, जिज्ञासाओं तथा शंकाओं को व्यक्त करने का स्वातन्त्र्य प्राप्त हो। वे कहते है कि अपनी शंकाओं को व्यक्त करना अराजकता या राजद्रोह नहीं है बल्कि मूक बनकर सभी कुछ सुनना कायरता है :–

''स्वाधीनता, अभिव्यक्ति स्वतन्त्रता का दुरूपयोग
यदि अनुत्तरदायित्व पूर्ण वाचालता है
तो महानुभवों / कायरपूर्ण सहमति
इससे भी बड़ा दुरूपयोग है।''[39]

राम आधुनिक राजनेता के सामन भय और आतंक का प्रतीक नहीं है और न ही राष्ट्र के प्रतीक है। इसलिए वे अनाम धोबी का पक्ष लेते है और निर्णय देते हैं। उस समय तानाशाही शासन होने पर भी राम ने साधारण जन का प्रजा का ध्यान रखा तथा उनका प्रतिनिधित्व

[38] वही, पृ॰ 87
[39] डॉ॰ नरेश मेहत्ता, प्रवाद पर्व, पृ॰ 101

किया। इसके माध्यम से कवि ने तत्कालीन परिस्थितियों और जन साधारण की करूण स्थित से परिचित कराने का प्रयास किया है। एक व्यक्ति की शक्तिमत्ता और प्रजातांत्रिक संबधों को निरूपित करने वाला यह नाट्य–काव्य अपनी समस्त पौराणिकता के बावजूद आधुनिक समय बोध से युक्त है इसमें कवि प्रजातंत्र की समस्या को सामने रखने और प्रजातांत्रिक मूल्यों की प्रतिस्थापना करने में सफल हुए हैं।

प्रवाद–पर्व में जहाँ राम एक कर्मशील एवं जनता की इच्छाओं का मान रखने वाला शासक है वहीं 'एक कंठ विषपायी' में निरंकुश राजतंत्र के दुष्परिणामों को स्पष्टतः चित्रित किया गया है कि किस प्रकार शासक की गलतियों की सजा उसकी प्रजा को भुगतनी पड़ती है। राजतंत्र में सबकुछ राजा या शासक पर आधारित होता है। उसकी इच्छा ही सबसे बड़ा संविधान होता है। शासक भूल करता है और उसका परिणाम जनता को भुगतना पड़ता है। प्रजा जन यह समझते हुए भी कि शासक का कार्य अनुचित है, उससे कह नही ंसकता यह दक्ष की प्रजा के साथ भी हुआ। यही स्थिति आधुनिक प्रजा की भी है :–

''विधाता के नियमों की विडम्बना है,
चाहे न चाहे, किन्तु
शासक की भूलों का उत्तरदायित्व
प्रजा को वहन करना पड़ता है
उसे गलित मूल्यों का दण्ड भुगतना पड़ता है
और मैं मनुष्य ही नहीं हूँ,
मैं प्रजा भी हूँ।''[40]

प्रजा पति दक्ष एक अहंकारी एवं क्रोधित शासक है वह अपने अंहकार वश ही शिव से प्रतिशोध लेने के लिए शिव को अपने हवन यज्ञ में नहीं बुलाते। इसका परिणाम यह हुआ कि शिव के गणों ने दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दक्ष का वध कर दिया। तथा नगरवासियों सहित सारे नगर को उजाड़ दिया। केवल सर्वहत ही क्षत–विक्षत व्यवस्था में बचता है। जो दक्ष का प्रधान सेवक है तथा नाट्य–काव्य में प्रजा के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह अपने शासक द्वारा की गई गलतियों का फल भोगता है। सर्वहत के माध्यम से कवि ने वर्तमान साधारण जन की आवाज को व्यक्त किया है। क्योंकि प्रजा और शासक का गहन संबंध है। प्रजातंत्र में प्रजा के द्वारा ही शासक को चुना जाता है। परन्तु वर्तमान शासक कुर्सी पा जाने पर सत्ता के मद में चूर उसी प्रजा को भूल जाता है। वहीं प्रजातंत्र का स्वरूप राजतंत्र में बदल जाता है। शासक की तानाशाही चलती है और सत्ता मोह के कारण प्रशासक भाव शून्य हो जाता है। सत्ता मिलते ही राजनेताओं का आचरण परिवर्तित हो जाता है। धन, सम्पन्नता एवं

[40] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 52

वैभव पाकर जिस प्रकार आधुनिक नेता आम जनता को भूल जाते हैं उसी प्रकार 'एक कंठ विषपायी' में भी निरंकुश राजतंत्र को चित्रित किया गया है जो आधुनिक प्रजातंत्र की सत्यता को प्रकट करता है –

''धन के दृष्टि नहीं होती
भाव शून्य हो जाते हैं
धनवान लोग
आत्मस्थ बना देती है, सत्ता मित्रों को
आचरण बदल जाते हैं, उनके क्षण–क्षण
अपनत्व खत्म हो जाता है
बचा रहता है, छोड़ा सा शिष्टाचार
और औपचारिकता
प्रभुता का ऐसा ही होता आकर्षण।''[41]

शासक सत्ता मिलते ही जनता की तकलीफों को समझ नहीं पाता वह केवल जनता पर अपनी इच्छा एवं आज्ञा थोपता है। जिसे जनता मूक बनकर स्वीकारती जाती है जब अत्याचार अत्यधिक बढ़ जाता है तो वहीं जनता उस शासक के विरूद्व अपना मोर्चा खोल लेती है अपनी रक्षा के लिए वह संघर्षशील हो जाती है। नारेबाजी करती है अपनी चीत्कार को शासक तक पहुँचाने के लिए उसे यह खूनी संघर्ष भी करना पड़ता है। परन्तु शासक अपने स्वार्थ के बारे में भी चिंतित रहता है। उसे साधारण जन से कोई हमदर्दी एवं लगाव नहीं होता। जनता के प्रति अन्याय का यह दृश्य कवि दुष्यन्त कुमार ने इस प्रकार रेंखाकित किया है –

''महादेव शंकर की सेनाएँ
सीमा से दूर तक चली आयी
अगणित घर उजड़ गये
धरती हो गयी लाल
शासन को कोसती हुई जनता पागल है
वह देंखे.....
नारों की आवाजें बढ़ती ही जाती है।''[42]

आम जन शासक के समक्ष न्याय पाने की उम्मीद करते हैं एवं अपनी सुरक्षा की आशा करते हैं परन्तु जब जनता को न्याय के स्थान पर अन्याय का सामना करना पड़ता है तो वह शासक के प्रति विद्रोही रूप धारण कर लेती है।

---

[41] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 81
[42] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 101

इसके विपरीत स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में राजा और प्रजा के ऐसे स्वरूप के दर्शन भी होते हैं जो प्रजा द्वारा मनोनीत किये जाने पर स्वयं को प्रजा का सेवक समझकर उनके हितों के विषय में सोचता है क्योंकि वह प्रजा द्वारा मनोनीत किया गया है :

''साथ ही हम प्रजा के
मनोनीत राजन् है।''[43]

राम प्रजा के द्वारा चुने गए राजा होने के नाते प्रजा के सुख–दुखों को समझते है तथा निरंकुश राजतंत्र की अमानवीय देन की निंदा करते है। एक राजा के रूप में अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए सत्य की मिथ्या पताकाएँ हाथ में लिए नरसंहार से वितृष्ण है। वे अपने हित के लिए जनहित की कुर्बानी पर मानव रक्त का सैलाब नहीं देखना चाहते और सीता को व्यक्तिगत समस्या बताकर युद्ध को नकार देते हैं। यही विवेकी राम नये युग की अप्रतिम उपलब्धि के रूप में अहिंसा, करूणा, समता आदि श्रेष्ठ मानवीय गुणों की सार्थकता प्रदान करते हैं। यही सत्य है कि बुराई, बुराई को जन्म देती है और श्रेष्ठता अपनी श्रृंखलाओं का विकास करती है इसीलिए राम का इस विषय में मन्तव्य स्पष्ट है –

''मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है
उसको ही, हाँ
जगाना चाहता हूँ।''[44]

आज का मनुष्य अपने देव गुणों को भूलकर राक्षसीय प्रवृत्तियों का वहन कर्ता हो रहा है। युग प्रजा इसी के मानवीय समाधान में जुटी हुई है। युद्ध राम के लिए सत्य स्थापना एवं सीता प्राप्ति का सोपान नहीं बल्कि वह विशालतम चट्टान है जिसके तले सामान्य जीवन स्वाहा होता रहा है जबकि आज का मानव अपने राजनीतिक क्षेत्र में अपने बहुमत के कारण ही अपनी बल सिद्वता प्रकट करता है –

''जितना ही बड़ा समूह होगा
उतनी ही बड़ी बल सिद्धता होगी।''[45]

राम लघु मानव की महत्ता से परिचित ही नहीं उसका सम्मान भी करते हैं। उसके विचारों को आदर देते हैं तथा उनके तर्कों को स्वीकार करते हुए उपनिवेशवादी राजतंत्र के प्रतीक रावण के प्रति मनुष्य के समान समभाव रखते हुए कहते है कि यदि युद्ध के बाद हम विजयी हो भी गए तो क्या और किसी रावण का जन्म नहीं होगा। इसका विश्वास कैसे हो युद्ध के बाद होने वाले रावण के जन्म के माध्यम से कवि ने आधुनिक समय बोध को प्रखर वाणी प्रदान की है यहाँ रावण बुराईयों का प्रतीक है यदि भविष्य में समाज एवं राष्ट्र को युद्ध का

---

[43] नरेश मेहत्ता, संशय की एक रात, पृ॰ 15
[44] डॉ॰ नरेश मेहत्ता, संशय की एक रात, पृ॰ 18
[45] वही, पृ॰ 35

सामना करना पड़ता है तो उन्हें यह विश्वास नहीं दिलाया जा सकता कि युद्ध के पश्चात सभी कुछ सही होगा सभी बुराईयों का अन्त होगा। जबकि युद्ध के पश्चात् की सच्चाई इसके विपरीत होती है युद्ध किसी भी राष्ट्र को अवनति की ओर धकेलता है। इस विषय में कवि का स्पष्ट मन्तव्य है –

''तब अनेको लंका,
अनेको रावणों का जन्म हो,
सम्भव है।''[46]

कवि राम के आदर्श राज्य की कामना करता हुआ आधुनिक भ्रष्ट राज्य की समाप्ति चाहता है। मानव को मानवीय भावना का संदेश देने का प्रयत्न करता है।

'संशय की एक रात' के विपरीत 'सुभाष पंत' कृत 'चिड़िया की एक आँख' में कवि ने वर्तमान समय के भ्रष्ट एवं कठोर राजनेताओं का वर्णन किया है। जो अपनी प्रजा का शोषण करते हुए आगे बढ़ते है अपना उल्लू सीधा करने के लिए निर्दोष प्रजा पर अत्याचार करते है। सत्ता की भूख उनकी नसों में समाई हुई है। वे अनुभवहीन एवं भावशून्य राजनेता के रूप में चित्रित हुए है। जो आज का कटु सत्य है। अन्धे धृतराष्ट्र के माध्यम से कवि ने वर्तमान भ्रष्ट राजनेताओं को उजागर किया है। जो सत्ता के मद में पागल वासना के कीचड़ में डूबे हुए हैं जो सदैव स्त्रियों में आसक्त रहते हैं वे राजनेता सम्मान के योग्य नहीं हैं इसी प्रकार कवि ने धृतराष्ट्र के रूप में ऐसे राजनेता को चित्रित किया है जो प्रजा के सुख दुख नहीं समझ पाता –

''धृतराष्ट्र अंधे हैं
प्रजा के दुखों और अभावों से डरते हैं
स्त्रियों में आसक्त पंगु पाण्डु
संभोग करते मारे गए थे
पाण्डव ने दिया था पंगु सत्य
धृतराष्ट्र का अंधा सत्य
भटक रहा है देश अपंग और अंधेपन के बीच।''[47]

आज का शासक प्रजा के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भूलकर भोग विलास में डूबा रहता है। केवल अपने भौतिक सुखों की चिंता करता है। राजा का कर्त्तव्य प्रजा का पालन करना है। प्रजा तंत्र होते हुए भी हमारे राष्ट्र में राजतंत्र की तरह तानाशाही चलती है सत्ता की भूख राजा के विवेक को छीन लेती है इसी कारण सत्ता के मोह में चूर धर्मराज कहे जाने वाले युधिष्ठिर निर्दोष जनता को युद्ध के द्वारा हानि पहुँचाते हैं। जब युधिष्ठिर कहते हैं कि कर देना प्रजा का कर्त्तव्य हैं तो बूढ़ा व्यक्ति कहता है –

---

[46] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 42
[47] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 23

''पिता के समान प्रजा का पालन
सामाजिक न्याय, वर्तमान की रक्षा
भविष्य के सपने देना
राजा का कर्त्तव्य है।''[48]

राज्य विस्तार के लिए युद्ध प्रजा से विश्वासघात है। आधुनिक राजनेता भी अपनी पैठ जमाने के लिए जनता को दिन–प्रतिदिन धोखा देता है। कवि ने जहाँ एक तरफ राजाओं की मनमानी के कारण कष्ट झेलती प्रजा को दिखाया है वहीं नेताओं के शोषण से परेशान विद्रोही जनता को भी चित्रित किया है। 'चिड़िया की आँख' में प्रजा शासक के अत्याचारों से मुक्त होने के लिए जागरूक हो चुकी है वह राजा के अन्याय का विरोध करती है। अब जनता प्रश्न करती है कि हमारा शोषण कब तक होगा। जनता के जन जागरण का स्वर सुभाष पंत की इन पंक्तियों स्पष्ट परिलक्षित होता है –

''अस्त्र शस्त्र के अभाव में,
हम पशुवत मारे जाएंगे।
इसलिए मैं खरीद लाया लोहा
इस हम शस्त्रों में ढालेगे।''[49]

आधुनिक प्रजा द्वारा राजा से तर्क पूर्ण ढंग से प्रश्न पूछे जाते हैं तथा अपने हक एवं अधिकारों के लिए शस्त्र उठाने के लिए भी अब प्रजा तैयार है वह जानती है कि अपना अधिकार पाने के लिए शासक के सामने झुकना नहीं अपितु छीनना है। अब वह भ्रष्ट अधिकारियों से अपने बचाव के लिए शस्त्रों–अस्त्रों का निर्माण भी करती है।

वस्तुतः आधुनिक राजा एवं प्रजा के स्वरूप को पौराणिक मिथकों के माध्यम से एक नई दिशा प्रदान की गई है। आधुनिक प्रजा अब शासक के ईशारों पर नहीं चलती वह अपनी शक्ति पहचान चुकी है। वह सरकार की भ्रष्ट नीतियों के विरूद्ध शीघ्र ही अपना मोर्चा खोल देती है। इसी के परिणाम स्वरूप हम वर्तमान समय में धरणे, आंदोलनों आदि के रूप में जनता के आक्रोश 'एक कंठ विषपायी', 'चिड़ियाँ की आँख', 'शम्बूक', 'अधायुग', 'संशय की एक रात' में परिलक्षित होता है।

वर्तमान समय में भी राजा एवं प्रजा का स्वरूप वैसा ही है जैसा राजतंत्र में होता था। प्रजातंत्र प्रणाली होते हुए भी प्रजा दासता का जीवन व्यतीत करती है। 'लक्ष्मीनारायण' कृत 'सूखा–सरोवर' नाट्य–काव्य में एक तरफ अत्याचारी एवं व्यभिचारी शासक है वहीं दूसरी तरफ साहसी, निडर प्रजाहितैषी शासक को भी दर्शाया गया है। अत्याचारी शासक कपटपूर्ण सत्ता हासिल कर प्रजा को कष्ट पहुँचाता है। वह स्वयं को परमेश्वर मानता है तथा सभी को अपने

[48] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 83
[49] वही, पृ॰ 54

अनुसार चलाना चाहता है जिसकी मनमानी एवं अत्याचार से परेशान होकर वृद्ध व्यक्ति राजा को प्रजा का ही एक अंग बताते हुए प्रजा को स्पष्टीकरण देता है।

''राजा भी हमारी तरह व्यक्ति है
हम समाज हैं, एक से एक मिलकर
इसलिए हर व्यक्ति राजा है
राजा ही समाज है।''[50]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि राजा एवं प्रजा के बीच की खाई को दूर करने का प्रयत्न करता है क्योंकि राजा प्रजा द्वारा ही चुना गया कोई सदस्य होता है। परन्तु वह सत्ता पाते ही यह भूल जाता है कि वह भी कभी प्रजा ही था। आम जन शासक के समक्ष न्याय पाने की उम्मीद करते हैं एवं अपनी सुरक्षा की आशा करते हैं परन्तु जब जनता को न्याय के स्थान पर अन्याय का सामना करना पड़ता है तो वह शासक से रूष्ट हो एकजुट हो जाती है। और अपनी पीड़ा का प्रदर्शन वह शासक को कोसते हुए इस प्रकार करती है –

''इन सब हत्यारों ने हमको
रक्षा का आश्वासन देकर लूट दिया
भूमि छिन गयी
आँखों का सारा आकाश खो गया।''[51]

वर्तमान शासक स्वार्थपूर्ण राजनीति में लिप्त है वे प्रत्येक कार्य अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए करते है प्रजा का बार–बार तिरस्कार करते है इसी कारण प्रजा भी शासक वर्ग से घृणा करने लगी है। चुनाव के समय शासक जनता के समक्ष विनम्र मनुष्य के रूप में उपस्थित होता है तथा सत्ता प्राप्ति के साथ ही अपना प्रयोजन सिद्ध होने पर वह प्रजा को भूल जाता है।

3.4 वर्तमान पूँजीवादी राजव्यवस्था का चरित्रांकन :

वर्तमान शासक स्वार्थी, भौतिकवादी, भ्रष्ट, अनैतिक एवं निष्क्रिय है। वह भोग विलासिता में इतना डूबा हुआ है कि उसे अपने आस–पास होने वाली घटनाओं के विषय में भी पत्ता नहीं होता। आज जिसके पास पूँजी है सत्ता उसी के हाथ में है। शासक पूँजीपतियों के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह गया है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में वर्तमान पूँजीवादी राजव्यवसथा पर दृष्टिपात किया गया है। आज जिसके पास पूँजी है वही तत्कालीन सत्ता के स्वामी है। केवल उन्हीं को महत्व प्राप्त है जो अपनी वास्तविकता को छुपाकर नकली चेहरा ओढ़ने में दक्ष है। पूँजीवादी व्यवस्था के आतंक से बचने के लिए जागरूकता अनिवार्य है।

---

[50] डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 58
[51] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 110

मुखौटों के पीछे छुपे चेहरे को पहचानने की, क्रान्ति की आवश्यकता है। पूँजीवादी व्यवस्था के सच को कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से अपने नाट्यकाव्य अंधायुग में परिलक्षित किया हैं –

''सत्ता होगी उनकी
जिनकी पूँजी होगी
कपटवेश धारणमेव महत्व हेतू
जिनके नकली चेहरे होगें
केवल उन्हें महत्त्व मिलेगा।''[52]

यह पूँजीवादी सभ्यता अमानवीय एवं नर भक्षी है यह अपने कार्यों को सिद्ध करने हेतु कुछ भी कर सकती है। लेखक इन्हें गिद्ध के प्रतीक रूप में प्रस्तुत करता है जो अवसवादी शासक होते हैं वे अपने स्वार्थ को पूरा करने हेतु अवसर का लाभ उठाना जानते है। वे गिद्ध की भांति ताक में रहते है कि कब उन्हें अपना उल्लू सीधा करने का मौका मिले। पूँजीवादी शासकों को कवि ने नरभक्षी गिद्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है –

''ये गिद्ध, लाखों, करोड़ों, पँखे खोले,
छिप जाओ, नरभक्षी है, ये गिद्ध भूखे हैं''।[53]

धर्मवीर भारत ने जहाँ पूँजीवादी व्यवस्था पर तिखे प्रहार किये है वहीं धृतराष्ट्र के माध्यम से वर्तमान शासन व्यवस्था पर भी करारा व्यंग्य किया है। अंधे शासक के माध्यम से विकृत शासन व्यवस्था पर कटाक्ष किया गया है इसके अतिरिक्त कवि ने अंधे शासक की प्रजा की वस्तु स्थिति का भी यथार्थ आकलन किया है। अंधे राजा की प्रजा की मानसिक स्थिति को गहराई से उद्घाटित करते हुए प्रहरी कहते हैं कि न तो धृतराष्ट्र स्वयं कुछ देख सकते है और न ही उनकी प्रजा। यहाँ यह उक्ति सटीक बैठती है कि 'जैसा राजा वैसी प्रजा।' सत्ता के मद में चूर राजा की प्रजा भी ऐसी ही होती है। इन पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है –

''अन्धे राजा की प्रजा कहाँ तक देखे?
दीख नहीं पड़ता कुछ
अंधे है कुछ भी क्या देख सके,
अब तक वे।''[54]

अंधायुग में चित्रित युधिष्ठिर एक ऐसे शासक के रूप में प्रस्तुत हुए है जो युद्धभूमि में जीतकर भी मन से हारे और थके हुए प्रतीत होते हैं। वे एक ओर युद्ध में हुए भयानक रक्तपात को लेकर दुखी है। दूसरी और अपने भाईयों की अज्ञानता, मंदबुद्धि और अभिमान की प्रवृत्ति से पीड़ित है। तो तीसरी ओर गांधारी द्वारा कृष्ण को दिये गये श्राप के लेकर दुखी हैं – धृतराष्ट्र

---

[52] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 12
[53] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 52
[54] वही, पृ॰ 17

के शासन के विकृत साँचे में ढली हुई प्रजा की निष्क्रियता एवं विघनशीलता की मनोवृत्ति को लेकर अन्दर ही अन्दर कुंठते जा रहे है। शासक जैसा होता है प्रजा भी उसी रूप में ढल जाती है यही कारण है कि युधिष्ठिर के राजा बनने पर भी प्रजा धृतराष्ट्र की मनोवृतियों के अनुसार निष्क्रिय बनी हुई है। ऐसे विघनशील परिवेश में युधिष्ठिर की मानसिक वेदना और पीड़ा का स्वर मार्मिक हो उठा है। एक शासक के रूप में युधिष्ठिर की दुखद मानसिक स्थिति को कवि ने इस प्रकार उद्घाटित किया है –

''सिंहासन प्राप्त हुआ है जो
यह माना कि उसके पिछे अन्धेपन की
अटल परम्परा है।''[55]

वर्तमान समय में प्रजा मूक बनकर सभी कुछ नहीं देखती अपितु अपने शासक के अन्याय के प्रति आवाज भी उठाती है। प्रजातंत्र में उत्तम शासक वहीं माना जाता है, जिसकी प्रजा मौन होकर सब कुछ सहती रहे। दुःखी प्रजा शासक के समक्ष गुहार करे, यह उसके प्रभाव की न्यूनता है। सर्वहत प्रजा की विवश्ता एवं प्रजातंत्र की वास्तविकता को व्यंग्यपूर्ण शैली में इस प्रकार व्यक्त करता है –

''तुम जाने कैसे शासक हो
और जाने कैसी है तुम्हारी प्रजा,
जरा–जरा बातों पर चिखती चिल्लाती है।
शासन के दरवाजे पीटती है,
नारे लगाती है।''[56]

वर्तमान प्रजा अपने अधिकारों के प्रति जागृत है वह शासक के गलत फैसलों को आँख बंद करके स्वीकार नहीं करती अपितु उनके प्रति अपना रोष आंदोलन करके एवं नारे लगाकर प्रकट करती है। क्योंकि अब जनता की बौद्धिक चेतना जागृत हो चुकी है कि असली शक्ति उसी के पास है नेता का चुनाव उसे ही करना है। इस प्रकार कवि ने जहाँ जनता पर हो रहे अत्याचारों को चित्रित किया है वहीं जनता के शोषण के विरूद्ध संघर्ष को भी चित्रित किया है राजा एवं प्रजा दोनों के समन्वय से ही राष्ट्र का विकास हो सकता है 'एक कंठ विषपायी' में दुष्यन्त कुमार ने पौराणिक प्रसंगों का आश्रय लेकर कृति के धरातल को नवीन भाव बोध से अभिव्यक्ति किया है। सामाजिक तथा राजनैतिक दृष्टि से रचना में उन प्रश्नों को उठाया है जिसका संबंध आधुनिक जीवन बोध से है। आधुनिक समय के प्रत्येक व्यक्ति के दर्शन हमें इस कृति में मिल जाते हैं। शासक एवं सर्वहारा वर्ग का भेद कृति में आधुनिक समय बोध की झलक स्पष्ट करता है। पूँजीवादी सत्ताधारियों के समक्ष आज का युवक बुद्धिवादी एवं विवेकशील

[55] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 106
[56] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 113

व्यक्तित्व की भांति विवश एवं छटपटाहट का अनुभव करता है। इसमें आधुनिक शासन तंत्र की अव्यवस्था और अराजकता को देखा जा सकता है।

कौरव नगरी के विनाश के साथ अंधायुग में जहाँ प्रहरियों का वार्तालाप आधुनिक समय बोध को प्रखरता देता है उसी प्रकार 'एक कंठ विषपायी' में दक्ष की नगरी के संहार के पश्चात सर्वहत के कथनों से भी वर्तमान समय बोध की अभिव्यक्ति मिलती है। उसका व्यंग्यात्मक और विवश कथन हमारी वैचारिकता को कुछ सोचने हेतु विवश कर देता है। उसकी मानस भूमि में जो आक्रोश जनित प्रतिक्रियाएँ तरंगित होती हैं वे नवीन समय बोध की द्योतक हैं। वर्तमान समय में भी शासक की गलतियों का फल साधारण जनता को ही भुगतना पड़ता है। दुष्यन्त कुमार ने इसे स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार रूपायित किया है। –

''विधाता के नियमों की विडम्बना है
चाहे न चाहें, किन्तु
शासक की भूलों का उत्तरदायित्व
प्रजा को वहन करना पड़ता हैं
उसे गलित मूल्यों का दण्ड भरना पड़ता है,
और मैं मनुष्य ही नहीं हूँ
मैं प्रजा भी हूँ।[57]

दुष्यन्त कुमार ने 'एक कंठ विषपायी' में यथार्थ में समय बोध के सहारे शासकों की नियति एवं उनके कार्यो द्वारा प्रभावित प्रजा को रूपायित किया है। कवि ने राजतंत्र में राजा को ही सर्वोपरि सत्ता स्वीकार किया हैं आधुनिक प्रजातंत्र में भी राजा ही श्रेष्ठ बना रहता है। उसकी इच्छा एवं आदेश ही सर्वोपरि होता है। शासक यदि भूल करता है तो उसका परिणाम भी जनता को ही भुगतना पड़ता है। प्रजा यह समझते हुए भी कि शासक द्वारा किया जाने वाला कार्य गलत है उसे रोक नहीं पाती। 'एक कंठ विषपायी' में दक्ष की प्रजा के साथ भी ऐसा ही होता है। प्रजातंत्र में भी राजा अपनी मनमानी करते रहते है। प्रजा के हितों की उन्हें कोई चिंता नहीं होती।

जब प्रजा अपने शासक के अत्याचारों से अत्यधिक परेशान हो जाती है तो वह उस शासक के विरूद्ध विद्रोह करने लगती है। आज का शासक गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वह पूँजीवादियों के समक्ष अनुचित कार्यो को भी स्वार्थ के लिए उचित बना देता है। आधुनिक मानव के बदलते हुए रूप को देखकर कवि ने इस समय की वर्तमान स्थिति को वर्णित किया है। –

[57] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 52

''गिरगिट से रंग बदल कर अगणित
युग–परिवेशों को कर बिम्बत
ये शत प्रतिशोध खड़े करते
युग जीवन धारा के शिकार
निम्नग अवचेतन के पूजक
अन्तश्चेतन के पंथ–कंटक
ये विद्रोही नर नहीं, तुच्छ
मानव द्रोही, युग के अंगार।''[58]

सुमित्रानन्दन पंत ने अपने नाट्य–काव्य–अप्सरा के माध्य से मानव मन में शासन के प्रति नव चेतना का संचार किया है। उसमें प्रजा नव चेतना की स्थापना करने का संकल्प लेती है। नरेश मेहता कृत 'प्रवाद पर्व' में राम आधुनिक भावों के संवहन कर्ता बने हैं जहाँ वे स्वयं को परिस्थितिजन्य प्रभुता से अलग करते है वे वहाँ पाते है कि उनकी महानता की शक्ति सिर्फ संदर्भगत है। संदर्भ से अलग हो जाने पर उनमें और साधारण जन में कोई अंतर नहीं है राम का यह कथन आधुनिक समय बोध को स्वर देता है क्योंकि सत्ताधारी पूँजीवादी शासक के पास भी सत्ता की ही शक्ति होती है सत्ता से हटते ही वे साधारण जन ही बन जाता है। इसी तथ्य को कवि ने इस प्रकार पुष्ट किया है –

''हमारी सबकी शक्ति
केवल संदर्भ की शक्ति है सीता
संदर्भ की पहचान खोकर, हमारे पास
केवल साधारणतया बचती है।''[59]

साधारण व्यक्ति साधारण नहीं होता वह बहुत शक्तिमान होता है बड़ा इतिहास पुरूष उतना सहनशील अथवा सहिष्णु नहीं हो सकता जितना की एक साधारण व्यक्ति या सामान्य जन हो सकता है क्योंकि साधारणता में ही सहिष्णुता की विद्यमानता है। कवि ने पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त कर एक समता वाले साम्राज्य की कामना की है जिसमें शोषक एवं शोषित वर्ग का कोई भेदभाव न हो।

नरेश मेहता ने जहाँ एक समभाव रखने वाले शासक एवं प्रजा को दर्शाया है जहाँ शासक द्वारा प्रजा को उसके सभी अधिकार दिये जाते है वहीं दुष्यन्त कुमार ने ऐसी प्रजा को दर्शाया है जो पूँजीवादी शासकों के कहे अनुसार चलती है। 'एक कंठ विषपायी' में कवि ने सर्वहत जोकि प्रजा का प्रतिनिधि है ऐसी प्रजा के प्रतीक रूप में दर्शाया है जो अपने शासक के

---

[58] डॉ॰ सुमित्रानन्दन पंत, अप्सरा, पृ॰100
[59] डॉ॰ नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ॰ 69

समक्ष कोई प्रश्न नहीं उठाती। वहीं देवलोक की प्रजा बार–बार अपने शासक के विरूद्व नारेबाजी करने लगती है। देवलोक की प्रजा को देखकर सर्वहत करता है कि –

''अरे हम प्रजा थे
हमने उफ तलक नहीं की
शासन के गलत–सलत झोंकों के आगे भी
फसलों से विनयी हम बिछे रहे निर्विवाद
हमारे व्यक्तित्व के लहलाते हुए
खेतों से होकर ....
दक्ष ने बहुत सी पगड़ियाँ बनाई
कर दी सब फसल बर्बाद
पर हम नहीं बोले .... बिछे रहे
क्योंकि हम प्रजा थे।''[60]

शोषित वर्ग के प्रति रचनाकारों में जहाँ सहानुभूति थी वहीं शोषक वर्ग के प्रति वितृष्णा की मात्रा बढ़ रही है। 'एक कंठ विषपायी' में जन साधारण के प्रति समर्थन एवं उच्च वर्ग के प्रति घृणा एवं विरोध का स्वर प्रखर है। प्रस्तुत नाट्य–काव्य के प्रारम्भ में ही हम दक्ष प्रजापति को अभिजात एवं शोषक वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में देखते हैं जो इतना निरंकुश है कि अपने दामाद से ही बदला लेने के लिए कटिबद्ध है। वह अपनी पूँजी एवं समर्थता का प्रयोग अपनी प्रजा के हित में न करके अपने दामाद शिव से बदला लेने के लिए करता है।

नाट्यकाव्यों में जहाँ पूँजीवादी वर्ग की घृणित राजनीति को दर्शाया गया है वहीं राजनेताओं की बिगड़ी हुई संतानों की चर्चा भी कवि ने अपने नाट्य–काव्यों में की है। दक्ष का पुत्र सुलभ भी भौतिक सुविधाओं में पला बढ़ा होने के कारण बात–बात पर जिद् लगाता है जिसके माध्यम से कवि ने आधुनिक राजनेताओं की संस्कारहीन, जिद्दी एवं अनैतिक औलाद का परिचय दिया है। वर्तमान शासकों के बच्चे अपनी मनमानी करते है वे कानून को भी नहीं समझते। रोज के लड़ाई–झगड़ों में उनका नाम आना आम बात हो चुकी है परन्तु ऊपरी दबाव के कारण कानून भी कुछ नहीं कर पाता। वे अपने पिता द्वारा भ्रष्ट तरीके से कमाई गयी पूँजी का प्रयोग प्रजा को परेशान करने एवं अपनी अयासियों के लिए करते है। तथा उनके विरोध में बोलने वाली प्रजा को ये मूक बना देते हैं। लक्ष्मी नारायण लाल कृत सूखा सरोवर में भी इसी वर्तमान व्यवस्था को चित्रित किया गया है। आम जनता द्वारा शासक के विरूद्ध आवाज उठाने पर उसे वहीं दबा दिया जाता है। वृद्ध के सत्य बोलने पर राजा पुरोहित को आदेश देता है कि –

---

[60] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 134

''मरोड़ दो इसके स्वर
खींच लो जिह्वा।''[61]

शासक का प्रजा पर अत्याचार इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। जब भी प्रजा द्वारा शासक के विरूद्व आवाज उठाई जाती है तो उसे वहीं कुचल दिया जाता है। वर्तमान समय में भी ऐसे ही गरीब जनता की आवाज को दबा दिया जाता है जैसे 'सूखा सरोवर' में राजा के विरूद्ध बोलने वाले व्यक्ति को कारागार में बंदी बना लिया जाता है। शासन की सत्ता कुछ पूँजीपतियों के हाथ में सौंप दी जाती है तथा राजा स्वयं उन्हीं के ईशारों पर कार्य करता रहता है। तथा वही जनता का शोषण करते रहते है। उसी कारण जब कोई व्यक्ति भ्रष्टाचार, पापाचार, रिश्वतखोरी एवं शासक के विरूद्ध आवाज उठाता है तो राजा के प्रतिनिधियों द्वारा उसे वहीं दबा दिया जाता है।

राजनीति में बढ़ते पूँजीपतियों के हस्तक्षेप ने राजनीति की छवि धुमिल कर दी है। वर्तमान समय में उद्योगपति अपने स्वार्थो के लिए शासक से मेल जोल रखते हैं तथा शासक अपने लाभ के कारण जनता के अहित की बातों पर भी उच्च शासक वर्ग के साथ मिल जाते हैं तथा उनके चापलूस जनता को लूटकर शासक के स्वार्थ की पूर्ति के साथ–साथ अपने स्वार्थो की पूर्ति भी करते है। सूखा सरोवर में पुरोहित वर्तमान शासक प्रणाली के चापलूस का ही प्रतीक है इन अव्यवस्थाओं ने सामान्य प्रजा के मन में सिंहासन के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न कर दिया है। –

''पता नहीं किस निर्मम ने
किस अमानवीय क्षण में
किस मनोबल से
निर्मित किया था,
सिंहासन को।''[62]

कवि द्वारा शासन के प्रति इस प्रकार का उद्वेग व्यक्त करने का कारण–युगीन शासकों की निष्क्रियता है इसी के साथ कवि यह भी कहना चाहता है कि राजा के पास धन, सत्ता, सैन्य, शक्ति, बल सब कुछ होता है वह इन सब का प्रयोग यदि अपने स्वार्थ में न लगाकर निडर होकर कार्य करके अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। इसलिए कवि कहना चाहता है कि सिंहासन कायरों एवं नपुंसको के लिए नहीं है। अपने बल सैन्य शक्ति द्वारा राजा राष्ट्र को विश्व में उचित सम्मान दिला सकता है –

''सैन्य शक्ति है जिसमें
बला सत्ता है जिसमें

---

[61] डॉ॰ लक्ष्मी नाराण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 115
[62] डॉ॰ लक्ष्मी नारायण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 16

सब सिद्धि उसमें है।''[63]

सूखा सरोवर की भांति शम्बूक में भी पूँजीवादी सभ्यता की स्वार्थपूर्ण नीति को दर्शाया गया है कवि ने शम्बूक के तर्कों के माध्यम से वर्तमान जागरूक प्रजा के प्रश्नों को शासक के समक्ष प्रस्तुत किया है शम्बूक कहता है कि जो तुम्हारे विचार–दर्शन, तुम्हारी प्रत्येक बात को माने तुम्हारी चापलूसी करे वह कितना ही अन्यायी क्यों न हो तुम उसके सारे दोषों से आँखे मूदें, सदा उसी के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगे। वर्तमान शासक भी अपने चाटुकारों के किसी भी दुर्व्यवहार, अपराध को अनदेखा कर उसका साथ देते है। शासक धर्म ऐसा ही है वह सदैव अपने स्वार्थो में लिप्त रहता है अपराधिक लोगों के साथ उसका व्यवहार अच्छा होता है और साधारण जन के प्रति उसका व्यहवार पक्षपात पूर्ण होता है। शासक अपने कुकृत्यों के लिए 'उद्धार' जैसे सुन्दर शब्द का प्रयोग करके प्रजा को गुमराह करने की कोशिश करता है। अब प्रजा आक्रोशित आवेश में पूछती है कि शासक का यह गलत व्यवहार कब तक चलेगा अर्थात यह दूषित प्रशासन व्यवस्था यह त्रुटिपूर्ण समाज दर्शन कब तक यूँ ही धरती पर चलता रहेगा। पूँजीपति शासकों से प्रजा की बागडोर अच्छे शासक के हाथों में जाने से राष्ट्र का सुधार हो जाता है इसलिए कवि प्रजा के प्रश्नों के माध्यम से शासक से जवाब चाहता है –

''शासकों को सदा यही सुविधा रही है राम,
प्रजा को इससे सदा दुविधा रही है राम।
मारते हो और कहते हो सदा इसे उद्धार
चलेगा कब तक तुम्हारा यह घृणित व्यापार।''[64]

वर्तमान समय में विरोधी पक्ष की सभी बातों को शासक द्वारा अनसुना ही किया जाता है चाहे वह उचित ही क्यों न हों। पूँजीवादी वर्ग से मिलकर सदैव निम्न वर्ग के साथ पक्षपात किया जाता है। कवि ने निरंकुश शासक द्वारा मनमानी पूर्ण व्यवहार करने की नीति को दर्शाया है। वर्तमान शासक का ध्यान प्रजा के पालन पोषण से हटकर भौतिक संग्रह की और उन्मुख हो गया है। दीन, हीन, निर्धन, भूमिपत्र अर्थात् किसानों के अधिकार आधुनिक शासन के लिए कोई महत्त्व नहीं रखते। आए दिन किसानों द्वारा की जा रही हत्या का दोष भी निरंकुश शासक पर ही लगता है। वर्तमान शासक पूँजीपतियों के हाथों में कठपुतली मात्र बन कर रह गए है। वर्तमान शासक द्वारा चलाई गई परियोजनाओं का लाभ भी पूँजीपति ही उठाते है निम्न प्रजा को उनका अधिकार नहीं मिल पाता किसी भी परियोजना की शुरूआत जिस निम्न वर्ग के लिए की जाती है उसका 10 प्रतिशत लाभ भी वह वर्ग नहीं उठा पाता देश की नसों में फैले भ्रष्टाचार के कारण पूंजीपति वर्ग ही इन परियोजनाओं के लिए दी गई राशि को हजम कर जाता है। इसलिए कवि कहता है कि भ्रष्टाचारी, निरंकुश, अहंकारी, संवेदन शून्य शासक प्रजा के

[63] वही, पृ॰ 58
[64] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 53

साथ–साथ पूरे राष्ट्र के लिए हानिकारक है। छल कपट एवं कूटनीति करने वाला शासक अपने राष्ट्र के अपकर्ष का कारण बनता है।

अतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों के माध्यम से कवियों ने वर्तमान समय की पूँजीवादी राजव्यवस्था को भली–भांति रूपायित किया है। आधुनिक समय में जिसके पास पूँजी है उसी के पास सत्ता है। सत्ताधारी शासक भी पूँजीपतियों के कहे अनुसार ही चलते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था हमारे समाज में बहुत समय से चली आ रही है। देश के स्वतन्त्र होते ही हमारा राष्ट्र कुछ पूँजीपतियों के हाथों में चला गया था और अब तक उन्हीं के बनाये नियमानुसार चल रहा है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों (मिथक) के माध्यम से वर्तमान पूँजीवादी राजव्यवस्था का संजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। देश की राजनीति आज पूर्णतः पूँजीपतियों के हाथों में है इसलिए देश का भविष्य भी उन्हीं के हाथों में सौंप दिया गया है जिसका इस्तेमाल पूँजीपतियों द्वारा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए किया जाता है। यह पूँजीवादी व्यवस्था पूर्णतः नरभक्षी एवं अमानवीय है। अज्ञेय द्वारा अपने नाट्य काव्य 'सृष्टि का आखिरी' आदमी में पूँजीवादी राजव्यवस्था पर तीव्र व्यंग्य किया गया है। –

''मेरे इस प्रजा तन्त्र में
बिना वोट के नहीं फूल तक खिलता है जब
क्या मजाल है
बिना वोट के यहाँ कयामत झाँक सके।''[65]

अज्ञेय की यह पंक्तियाँ वर्तमान शासन प्रणाली पर तीव्र कटाक्ष प्रस्तुत करती हैं।

3.5 वंचित एवं शोषित मनुष्य का संघर्ष :

नाट्य काव्यों में निहित शोषित मनुष्य का संघर्ष आज भी वैसा ही है जैसा पहले था। आज भी निम्न वर्ग राजनीतिक षड्यंत्रों का शिकार हो रहा है। समाज शोषक एवं शोषित दो वर्गो में बंटा हुआ है शोषक सम्पन्न वर्ग है जो कमजोर, वंचित, विपन्न एवं निर्धन वर्ग का शोषण करता है परिणाम स्वरूप अमीर और अमीर, गरीब और गरीब होता जा रहा है। अमीर एवं गरीब के बीच गहरी खाई बन चुकी है जिसे शोषित वर्ग सदैव अपने संघर्ष से पाटने में लगा रहता है। जिसे सत्ताधारी नेताओं द्वारा शक्तिपूर्वक दबाया जाता रहा है। शासक स्वार्थान्ध होकर लोगों को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते है। रचनाकार द्वारा वर्तमान व्यवस्था में दासवृत्ति ग्रस्त जनता की मनोवृत्ति की निरर्थकता का संकेत नाट्य–काव्यों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। देश व नागरिकों की सभी इच्छा शक्तियाँ नष्ट हो चुकी हैं क्योंकि उनका अस्तित्व आज भी प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा खतरे में पड़ा हुआ है वे हताश एवं निराश है परन्तु उनकी निराशा एवं उदासी तब संघर्ष में बदल जाती है जब शोषित वर्ग का अत्याचार एवं पापाचार उन

---

[65] अज्ञेय, सृष्टि का आखिरी आदमी, पृ॰ 114

पर अधिक बढ़ जाता है। तो वह अपनी छोटी–छोटी आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करना प्रारम्भ कर देता है। आंदोलनों एवं नारों के माध्यम से यह जन समूह अपने आक्रोश को वाणी प्रदान करता है। दुष्यन्त कुमार ने अपने नाट्य–काव्य 'एक कंठ विषपायी' में साधारण जनता के आक्रोश को शासक के विरूद्ध नारों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है –

''प्रजातन्त्र में यह मनमानी नहीं चलेगी
इस कायर शासन को तोड़ो
बह्मा यह सिंहासन छोड़ो।''[66]

कवि ने वर्तमान जनता की स्थिति को प्रकट किया है जो अपने शासक के मनमाने व्यवहार के कारण प्रतिदिन प्रताड़ित होती रहती है। वह स्वयं को स्वामी के कुकर्मो के समक्ष विवश पाती है। वह अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करती रहती है वह स्वामी के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह जाती है। स्वामी के किसी भी कार्य में बोलने तक का अधिकार प्रजा को नहीं दिया जाता परन्तु राजा के अनुचित कार्यो का दुष्परिणाम प्रजा को ही वहन करना पड़ता है। दक्ष द्वारा अपने अहंकार का प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से यज्ञ किया जाता है जिसमें शिव को नहीं बुलाया जाता। प्रजा दक्ष के इस कार्य से नाराज है परन्तु शासक के समक्ष कुछ नहीं बोल पाती वह मूक बनकर सब कुछ देखती रहती है तथा अपने शासक के ईशारों पर कार्य करती रहती है परन्तु इसके विपरीत देवलोक की प्रजा वर्तमान प्रजा प्रतीक है जो अपने शासक के अनुचित कार्यो के विरूद्ध आवाज उठाती है। जबकि दक्ष की प्रजा मौन रहकर सब कुछ सहती रहती है। सर्वहत प्रजा के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो प्रजा की निरीहता एवं दयनीयता को तथा प्रजातंत्र की वास्तविकता को प्रकट करता है। –

''तुम जाने कैसे शासक हो,
तुम्हारी यह प्रजा
जरा–परा बातों पर चीखती चिल्लाती है
शासन के दरवाजे पीटती है
नारे लगाती है।''[67]

जनता का शासक के प्रति रोष दृष्टिगोचर होता है। शासक स्वयं को उन्नत लोक का प्राणी समझने लगता है वह चाहता है कि प्रजा केवल उसकी आज्ञा का पालन करे परन्तु जब उसका अत्याचार प्रजा पर बढ़ जाता है तो प्रजा उस शासक के प्रति अपना रोष उसके विरूद्ध आंदोलन करके प्रकट करती है। आज मानव ने नई शक्ति पा ली वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बन चुका है तथा पुरानी मान्यताओं एवं अंधविश्वासों को अब वह नहीं मानता। जीवन के विकास के लिए निरन्तर संघर्ष करता रहता है –

---

[66] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 89
[67] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 113

''ध्वस्त हो रही जीर्ण मान्यताएँ जन–मन की
बदल रहा जग जीवन के प्रति दृष्टिकोण अब।''[68]

आज मानव का कार्य क्षेत्र विस्तृत हो गया है। मीडिया के माध्यम से उसे किसी भी घटना की जानकारी कुछ पल में मिल जाती है। राजनीति में भी वह सक्रिय रूप से भाग लेने लगा है उसे किसी भी विषय को समझने के लिए अब किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है।

लक्ष्मी नारायण लाल कृत 'सूखा–सरोवर' में भी शासक द्वारा प्रताड़ित प्रजा की व्यथा को दर्शाया गया है। राजा सिंहासन पर बैठकर स्वयं को बहुत शक्तिशाली एवं सर्वोत्तम समझने लगता है परन्तु प्रजा के आक्रोश को देखकर उसका यह वहम् शीघ्र ही दूर हो जाता है। उसकी प्रजा उसके अन्याय, अत्याचार, शोषण के प्रति आवाज उठाती हुई उसका विरोध करती है तो शासक का चाटुकार पुरोहित राजा को कहता है कि ये मुट्ठी भर प्रजा आपका क्या बिगाड़ सकती है। आप शासक हैं उनकी अपनी बुद्धि नहीं है हमने उन्हें दर्शन दिया है। जो शासक उन्हें दिखाना चाहता है वह वहीं देखेगें। उनका स्वयं का कोई दर्शन नहीं है। परन्तु छोटा राजा वास्तविकता को समझता हुआ कहता है कि जिस दिन शोषित वर्ग जाग जाएगा हमारा दर्शन नष्ट हो जाएगा। शोषित वर्ग के संघर्ष को प्रकट करती राजा के मन को उद्वेलित करती पंक्तिया द्रष्टव्य हैं।–

''जिस दिन शोषित
स्वप्रजा से जागकर
अपनी बुद्धि पायेगा
फिर वह दर्शन भस्म कर देगा हमें
नीति तिनका है अग्नि दर्शन का।''[69]

राजा प्रजा के द्वारा किये जाने वाले आक्रामक व्यवहार से घबरा जाता है पुरोहित द्वारा यह कहने पर कि उस स्थिति को यहीं दबा दिया जाएगा। राजा अपने विचार रखता है कि यह हमारे विरूद्ध एक ऐसी क्रान्ति है जिसका दमन नहीं किया जा सकता। जो अदृश्य है जिसे प्रत्यक्ष होने में समय लगेगा। कवि ने वर्तमान प्रजा के आक्रोश को प्रकट किया है। जो अपने अधिकारों के लिए अब संघर्ष करती है।

शोषित जनता निरन्तर संघर्ष करती रहती है फिर भी वह समाज में सम्माननीय जीवन व्यतीत नहीं कर पाती, वहीं एक तरफ भ्रष्ट राजनेता घिनौने अपराध करके भी समाज में अपना सिर ऊँचा रखते है। वंचित एवं शोषित मनुष्य अब समझ गया है कि जब तक शक्तिपूर्वक शोषण के विरूद्ध आवाज नहीं उठाई जाएगी तब तक परिस्थितियों को नहीं बदला जा सकता। हमें अपनी शक्ति को जोड़कर एक नयी शक्ति को निर्मित करना होगा। जब मनुष्य का साहस

[68] डॉ॰ सुमित्रानन्दन पंत, ध्वंस शेष, पृ॰ 55
[69] डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 72

उसके संघर्षो के साथ खड़ा होता है तो वह एक निर्णायक शक्ति बन जाता है। मानव में एक नया हौंसला भरता है अन्याय के विरूद्ध लड़ने का जज्बा आधुनिक शोषित वर्ग में उत्पन्न करने का कवि भरसक प्रयास करता है –

''आदमी के मुक्ति संघर्ष को
दिशा देंगी तुम्हारी कविताएँ
और लड़ेगे हमारे शस्त्र।''[70]

आधुनिक प्रजा के द्वारा किये जाने वाले संघर्षो को कवि ने चित्रित किया है तथा साथ ही दर्शाया है कि कवि द्वारा रचित रचनाएँ भी संघर्ष व्यक्ति के लिए सहारा बनेगी। शम्बूक का रक्त भी राम द्वारा इसीलिए बहाया जाता है क्योंकि वह राजनैतिक षड्यंत्रों के विरूद्ध संघर्ष करता है। इसीलिए मालती कहती है कि जब तक राजनीति का दमन चक्र घूमता रहेगा तब तक किसी न किसी रूप में शम्बूक जीवित रहेगा। त्रेता का शम्बूक आज का एकलव्य है और उसका लक्ष्य मुक्ति के लिए संघर्ष है। परिस्थितियाँ जैसी भी हों प्रत्येक युग में अत्याचार बढ़ते ही शोषण के विरूद्ध आवाज अवश्य उठाई गई है। 'चिड़िया की आँख में' भी ग्रामीण वासियों का संघर्ष शोषण के अन्त की कामना करता है अब वह केवल व्यक्तिगत रूप से स्वतंत्र नहीं होना चाहता अपितु सम्पूर्ण वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करता है। इसलिए माधवी कहती है कि शम्बूक आज भी एकलव्य बनकर सभी की मुक्ति चाहता है। –

''अपनी मुक्ति नहीं ढूँढ़ता
सबकी मुक्ति के लिए
चुनता है सीधा संघर्ष।''[71]

एकलव्य के संघर्ष के माध्यम से कवि ने आधुनिक मानव के संघर्ष को चित्रित किया है। आधुनिक राजतंत्र के शोषण का शिकार होता मानव आज उसके विरोध में अपनी आवाज बुलंद करता है। मनुष्य अब जान गया है कि शक्ति का केन्द्र वह स्वयं है। वही अक्षर और अनन्त है वह अपने आपको पहचान गया है जान गया है कि जीत उसकी ही होती है जो अपने लक्ष्य को केन्द्र में रखकर संघर्ष करता है।

जगदीशगुप्त कृत 'शम्बूक' नाट्य काव्य में आर्यो की दोषपूर्ण एवं पक्षपात पूर्ण समाज व्यवस्था के माध्यम से आधुनिक समाज की दूषित राजनीति एवं वंचित वर्ग का संघर्ष दर्शाया गया है। आर्यो ने समस्त शास्त्र विद्या एवं उच्च मंत्र विद्या पर एकछत्र आधिपत्य बनाए रखा था केवल ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वर्ग ही इस अधिकार का उपभोगी था। जब एकलव्य उच्चवर्गीय स्वर्णो द्वारा विद्या अर्जन करने में असमर्थ रहा तब एकलव्य ने पूरे सर्म्पण भाव से गुरू द्रोण की मूर्ति स्थापना कर धनुविधा अर्जित कर ली तब गुरू द्रोण ने एकलव्य के भोलेपन, मासूमियत

[70] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 35
[71] वही,पृ॰ 49

गुरू के प्रति सेवाभाव तथा पूजा एवं भक्ति का अनुचित लाभ उठाते हुए उससे गुरू दक्षिणा में दाहिने हाथ का अगूँठा माँग लिया। तथा इस पक्षपातपूर्ण व्यवहार को नियति का विधान बताकर स्वयं को सही दर्शाया है। कवि के अनुसार नीचता स्वार्थपरता की पराकाष्ठा तक पहुँचा हुआ अन्य कोई उदाहरण देखने को नहीं मिलेगा। उच्च वर्ग के शिक्षक का दलित शिष्य के प्रति घृणित रवैया अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। तथा अर्जुन को एकलव्य से श्रेष्ठ दिखाने के लिए गुरूद्रोण ने एकलव्य के साथ अन्याय किया। ऐसे कुकृत्यों के दर्शन पश्चात् कवि ऐसे शासक को बदलकर आदर्श शासक की कामना करता है –

''लोकनायक वही जो–
संवेदना का मर्म समझे
धर्म और अधर्म समझे,
कर्म और अकर्म समझे।''[72]

आज नवयुवक अपने अधिकारों को पाने के लिए निरन्तर संघर्ष कर रहा है यही संघर्ष कवि ने शम्बूक नाट्य–काव्य में एकलव्य के माध्यम से प्रदर्शित किया है। सवर्णो के अत्याचार अन्याय के गतिशील शोषण प्रसंग की परम्परा को कवि ने ऐतिहासिक तथ्यात्मकता के साथ प्रदर्शित किया है। एकलव्य शुद्र, निषाद न होकर उच्चकुल में उत्पन्न होता तो आचार्य द्रोण का उनके प्रति व्यवहार और भाव ऐसा घृणित न होता। इसी पक्षपात पूर्ण व्यवहार के कारण एकलव्य अपमान एवं अवमानना की आग में बराबर धधकता रहता है इसलिए शम्बूक का प्रेत चाहता है कि एकलव्य का रक्त रंजित अंगूठा ज्वाला में जलते शम्बूक के माथे पर रक्त तिलक करके उसे यह भरोसा दिला दे कि आर्यों की कुव्यवस्था का शिकार वह अकेला नहीं हुआ है अपितु युगों से लेकर आज तक कोटि–कोटि निम्न वर्ग स्वर्णो की नीच धर्म एवं अभिजातमूलक विचारधारा का शिकार होते आए हैं। शुद्रों का संघर्ष मेरी मृत्यु के बाद भी ऐसे ही चलना चाहिए। इसीलिए शम्बूक अन्याय के प्रति इस संघर्ष को ओर अधिक तीव्र करना चाहता है। कवि ने शम्बूक के संघर्षपूर्ण विरोध को इस प्रकार परिलक्षित किया है –

''मैं अपने सदियों से ठंडे पड़े माथे पर
शिव के तीसरे नेत्र की तरह
वह रक्त तिलक प्रज्वलित होते ही
कर देगा भस्मसात
झूठे अहंकार की पूरी
वासना देह,
निस्संदेह।''[73]

---

[72] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 49

निष्कर्षतः स्वातन्त्र्योतर नाट्य–काव्यों में पौराणिक आख्यानों के माध्यम से आधुनिक निम्न वर्ग के संघर्ष को चित्रित किया है प्राचीन समय में भी मनुष्य अपने ऊपर हो रहे अत्याचार एवं पापाचार से मुक्ति पाने के लिए संघर्षरत था और वर्तमान समय में भी मनुष्य अपने अधिकारों को पाने के लिए निरन्तर संघर्ष करता रहता है। शिक्षा के कारण मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गया है तथा अपने हक के लिए लड़ाई करना आज समय की मांग बन चुकी है। नाट्य–काव्यों में निहित, शम्बूक, सर्वहत, एकलव्य आज के संघर्षशील व्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करते है जो अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाते हैं।

3.6 राजनीतिक समय बोध में जन–सामान्य की स्थिति :

वर्तमान समय में देश की आर्थिक स्थिति स्वतन्त्रता पूर्व की अपेक्षा काफी सुदृढ़ हो चुकी है। लेकिन आम आदमी की स्थिति आज भी वही ढाक के तीन पात की तरह है। राजनीतिक भ्रष्टाचार में आम जनता को दरिद्रता के रसातल में धकेल दिया है। आज जिन्दगी के हर कोने में राजनीति की घुसपैठ हो चुकी है। और इस राजनीति ने जनता का आर्थिक पतन ही नहीं नैतिक पतन भी किया है। वस्तु स्थिति यह है कि ऊपर से नीचे की सारी व्यवस्था में उत्पन्न विसंगतियों एवं विकृतियों के लिए राष्ट्रीय राजनीति तथा उसमें संचरित शोषण–प्रवृति ही उत्तरदायी है इसी का चित्रण स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में बेबाक रूप से किया गया है।

दुष्यन्त कुमार कृत 'एक कंठ विषपायी' में यही चित्रित किया गया है कि जब शासक वर्ग का दबाव बढ़ जाता है तो धीरे–धीरे प्रजा का भय समाप्त हो जाता है। वह संघर्ष करने से नहीं घबराता। वह स्पष्ट कहने से नही हिचकता बल्कि एक स्पष्ट वक्ता बन जाता है। उसी प्रकार जब सर्वहत को न्यायप्राप्ति का आश्वासन दिया जाता है तो सर्वहत व्यंग्यपूर्ण शैली में कहता है –

''चाहे वह दक्षलोक हो
अथवा देवलोक
साधारण लोगों को कहीं
न्याय नहीं मिलता।''[74]

साधारण जन अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने सक्षम न होने के कारण शासक से न्याय की आशा रखता है। परन्तु शासक अपने स्वार्थो में लिप्त जनता की कोई आवाज नहीं सुनता। जनता भूख जैसी भंयकर समस्याओं से जुझती रहती है। दक्ष के नगर का विनाश देखकर एवं उसकी पीड़ा भोगकर सर्वहत का पागल हो जाना स्वाभाविक है। भूख से

---

[73] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 102
[74] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 125

व्याकुल होकर वह कहता है कि शासक चाहे जितने आश्वासन दे परन्तु हमें वर्तमान में तो क्या भविष्य में भी अपनी भूख मिटती जान नहीं पड़ती। वह ब्रह्मा जोकि देवलोक का शासक है के सामने अपनी समस्या रखता है। परन्तु बार–बार शासन के सामने अपनी समस्या रखने पर भी कोई समाधान नहीं होता। कवि ने सर्वहत के माध्यम से आधुनिक प्रजा की विवशता को इस प्रकार रेखांकित किया है –

''हम सब मर जायेगें एक रोज
पेट को बजाते
और भूख–भूख चिल्लाते
ठूँठे रह जाएँगी
साँसों के पत्ते झर जाएँगे एक रोज।''[75]

सर्वहत के पागलपन और उन्माद में भी भयंकर विस्फोट करने की क्षमता है। वह सभी को सोचने पर विवश कर देता है। वे मन ही मन स्वीकारते है कि सर्वहत की बात सही है। भले ही वह सेवक वर्ग एवं जनता का प्रतिनिधि मात्र है, पर उसकी शक्ति असीमित है। उसमें परिवर्तन की असीमित संभावनाएँ छिपी हुई है। वह एक संघर्षशील युवा शक्ति का प्रतीक है वह यथार्थ को प्रकट कहता हुआ करता है कि प्रजा को बोलने का कोई अधिकार नहीं है। प्रजा केवल निरीह नेत्रों से शासक के कार्यो को देखती रहे इस प्रकार सर्वहत का व्यंग्य देखिये :–

''मैं तो प्रजा हूँ
मुझे क्या हक है..?
क्या हक है जो मैं प्रलाप करूँ?
क्षमा करें प्रभु मुझको क्षमा करें।''[76]

आज प्रजा शासक के हाथों की कठपुतली मात्र बन कर रह गई है। शासक अपनी इच्छा अनुसार उसका उपयोग करता जाता है। परन्तु जब नहीं व्यक्ति संघर्षशील बनता है तो वह शासक को भी चुनौती देता है। मध्यवर्गीय व्यक्ति रोटी, कपड़ा और मकान के लिए जीवनभर संघर्षरत रहता है। अकाल एवं प्राकृतिक आपदाओं का सामना भी आम जनता को ही करना पड़ता है जबकि राजनेताओं पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 'चिड़िया की आँख' में धनिक के माध्यम से कवि ने इसी सच्चाई को प्रकट किया है। –

''नहीं मँडराती राजभवन में
कभी अकाल की छाया
राजभवन की दीवारों में टकरा
हम लोगों के बीच लौट आती है।''[77]

---

[75] वही, पृ॰ 65–66
[76] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 119

राजनेताओं के पास अकाल के समय से निटपने के लिए भरपूर राहत सामग्री होती है जिस कारण राजनेताओं को अकाल से होने वाली पीड़ा की अनुभूति नहीं होती। साधारण प्रजा कभी राजनेताओं की कूटनीतियों का शिकार होती है तो कभी उनके द्वारा प्रताड़ित की जाती है। इसका वर्णन भी कवियों ने नाट्य–काव्यों में किया है।

3.6.1 राजनेताओं की कूटनीतियों का शिकार :

जन सामान्य हमेशा राजनेताओं की कूटनीतियों का शिकार होता रहा है राजनेताओं के लिए 'हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और' वाली कहावत चरितार्थ होती है। चुनाव के समय राजनेता वोट–बैंक हड़पने के लिए जनता से तरह–तरह के झूठे वायदे करता है। लेकिन जैसी ही कुर्सी हाथ लगी, बीती रात के सपने की तरह सब कुछ भुला देते हैं। राजनेता अपने स्वार्थ के लिए भोली–भाली जनता को गुमराह करते रहते हैं। कवि ने राजनेताओं की कूटनीतियों को अपने नाट्य–काव्य 'चिड़िया की आँख' में पाण्डवों द्वारा लाक्षागृह से बचकर निकलने के माध्यम से दर्शाया हे। कौरव सत्ता के मोह के कारण पाण्डवों को मारना चाहते हैं परन्तु पाण्डव उनके षड्यंत्र को जानकर बच निकलते हैं। राजा धृतराष्ट्र अंधा होकर भी पाण्डवों को अपनी कूटनीति का शिकार बनाना चाहता है परन्तु पाण्डव भी राजभवनों में पले–बढ़े है वे इन षड्यंत्रों को भली–भांति समझते हैं। कौरव पाण्डवों को इसलिए जलाना चाहते है ताकि सिंहासन के दावेदार जलकर मर जाएँ और कौरव निर्विध्न राज्य कर सके। वर्तमान शासक भी सत्ता पाने के लिए विपक्षी पार्टियों को हानि पहुँचाने की पुरजोर कोशिश करता हैं। तथा विपक्षी पार्टी भी अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को नुकसान पहुँचाने में पीछे नहीं हटती। कौरवों की भांति–पाण्डवों ने भी सत्ता पाने के लिए जैसा अमानवीय कृत्य किया। उन्होंने स्वयं को मरा हुआ घोषित करने के लिए पाँच युवको सहित निषाद माँ को जिन्दा जला दिया ताकि समाज समझ सके कि पाण्डव मर चुके हैं। राजनीतिक षडंयत्रों की ऐसी आमनवीयता वर्तमान समाज की वास्तविकता को चित्रित करती है :–

''तब लाक्षागृह में आग लगाकर
कायर पाण्डव भाग गये
हत्भाग्य निषाद माँ–पुत्र समेत
उनके स्वार्थो की बलि चढ़े
पाण्डवों ने उन्हें जिंदा जला दिया।''[78]

कवि कहता है कि सत्ता का खेल अंधा है निषाद परिवार को पाण्डवों ने केवल इसलिए जला दिया ताकि सबको विश्वास हो जाये कि पाण्डव मारे गये और वे चुप–चाप सत्ता पाने के

---

[77] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 18
[78] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 62

नये तरीके निकाल सकें। राजनीतिक कूटनीति ने बार–बार निर्दोषों का खून बहाया है और वर्तमान समय में भी यह खेल जारी है। निषाद माँ के साथ ऐसा अमानवीय खेल खेलकर पाण्डव जंगलों में भाग जाते हैं। वर्तमान समय में भी राजनेता ऐसे जद्यन्य अपराध करके भी मुक्त घुमते रहते है जबकि निरपराध जनता राजनीति के चक्रव्यूह में फंसकर दीनता एवं कष्टकारी जीवन जीने को बाध्य रहती है। राजनीतिज्ञ कभी धर्म के नाम पर कभी जाति के नाम पर दंगे फसाद करवाते है। 2016 में जाट आरक्षण को लेकर हुआ भंयकर आंदोलन गंदी राजनीति के षड्यंत्र का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

राजनीतिक षड्यंत्र प्रत्येक युग में चलते आए हैं। भगवतीचरण वर्मा ने अपने नाट्य–काव्य कर्ण में कृष्ण एवं इन्द्र के माध्यम से इसी कूटनीति को प्रकट किया है। जब कृष्ण को लगता है कि अज्रुन कर्ण से हार जाएगा तो वह इन्द्र को छद्मवेश धारण करके कर्ण के कवच और कुण्डल माँगने की सलाह देता है क्योंकि कर्ण की दानवीरता जग प्रसिद्ध है इसलिए इन्द्र विप्र का वेश धारण कर कर्ण कपट पूर्वक उसके कवच और कुण्डल माँगता है जो वर्तमान कुटनीतिज्ञों के षड्यंत्रों को दर्शाते हैं जो अपना उल्लू सीधा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं –

''दे दो अपना कवच और कुण्डल मुझे
आज सुर्य का पुत्र अमरता दान दे।
कर्ण रहा है गर्व तुम्हें निज दान का
साहस है इस महादान का क्या तुम्हें।''[79]

वर्तमान शासक प्रजा की बात तब तक सुनता है जब तक उसे उसकी आवश्यकता है जब चुनाव नजदीक होता है तो उसे पराये जन भी अपने लगने लगते है वह सबके समक्ष हाथ जोड़कर विनीत भाव से मिलता है परन्तु चुनाव जीतने के बाद सत्ता मिलते ही वह आम जनता को पहचानना भी भूल जाता है। तथा सामने आने पर भी नजरअंदाज करने लगता है। इसी पर व्यंग्य करते हुए 'एक कंठ विषपायी' में सर्वहत कहता है –

''अब समझा तुम शासक हो
उनकी स्मरण शक्ति दुर्बल हो जाती है,
छोटी छोटी बातें उन्हें याद नहीं आती है।''[80]

शासक केवल जनता पर राज करना जानता है। राजनीति का यथार्थ चित्रण नरेश मेहता कृत महाप्रस्थान नाट्य काव्य में भी हुआ है। राजनीति के उलझे एवं कुटिल दांव–पेंचों के कारण ही आज तक की राज्य व्यवस्थाएँ अपना रूप–प्रतिरूप बदलकर आम आदमी के लिए

[79] डॉ॰ भगवतीचरण वर्मा, सम्पूर्ण नाट्क, कर्ण, पृ॰ 156
[80] डॉ॰ नरेश मेहत्ता, महाप्रस्थान, पृ॰ 115

तरह–तरह के अमानवीय कृत्यों का कारण बनती रही हैं। युधिष्ठिर के माध्यम से कवि ने राजनीति की सर्वयुगीन व्याख्या प्रस्तुत की है –

''राजनीति और क्या है पार्थ?
वह देवकन्या की नहीं
विष कन्या की आत्मजा है।''[81]

शासक वर्ग सदैव अपने लाभ के लिए नए–नए षड्यंत्राों की रचना करता रहता है इन्द्र अपना शासन छिन जाने के डर से राम द्वारा शम्बूक को मरवाने का षड्यंत्र रचता है। 'शम्बूक' नाट्य काव्य में इसी कुटनीति के दर्शन होते है। राम नारद की बात मानकर वन में तप कर रहे शम्बूक को इसलिए मार देता है क्योंकि उसके तप के कारण विप्र बालक की मृत्यु हो जाती है। कवि ने मनुष्यगत असमानता के यथार्थ को शम्बूक नाट्य काव्य में व्याख्यायित किया है।

''तप नहीं शुद्र का कर्त्तव्य,
फिर से सोच लो शम्बूक।
उसे सेवा कर्म ही भव्य,
क्यों उसमें करे वह चूक।''[82]

अतः स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में कवि ने राजनेताओं की कूटनीतियों को व्याख्यापित किया है जिनका प्रभाव आम जनता पर परिलक्षित होता है। वर्तमान राजनीति इतनी भ्रष्ट हो चुकी है कि इसकी बुराईयों को जड़ से समाप्त करना असंभव प्रतीत होता है।

3.6.2 राजनेताओं द्वारा प्रताड़ित प्रजा –

प्राचीन काल से ही राजनीति पक्षपात पूर्ण रही है। राजा ही सर्वोपरि होता है प्रजा को उसके अधीन कार्य करने पड़ते है प्रजा राजा की सेवक मात्र बनकर रह जाती है। राजा का प्रत्येक कार्य जनता हित के लिए होना चाहिए परन्तु होता इसके विपरीत है राजा का प्रत्येक कदम स्वहित के लिए उठता है। राजा द्वारा किये गए अनुचित कार्यो का फल प्रजा को वहन करना पड़ता है। दुष्यन्त कुमार रचित 'एक कंठ विषपायी' नाट्य–काव्य में राजा द्वारा प्रताड़ित प्रजा को चित्रित किया गया है। दक्ष की प्रजा अपने राजा के समक्ष गलत कार्य होते हुए भी मूक बनी रहती है। दक्ष द्वारा शंकर से प्रतिशोध लेने के लिए दक्ष द्वारा यज्ञ का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी देव गणों को बुलाया जाता है तथा शिव–शंकर को छोड़ दिया जाता है दक्ष की प्रजा जानती है कि यह अनुचित है परन्तु फिर भी वह राजा के समक्ष मौन बनी रहती है। इसी अनुचित कार्य के फलस्वरूप दक्ष के यज्ञ का विध्वंस हो जाता है और प्रजा भी तबाह हो जाती है सम्पूर्ण नगर नष्ट हो जाता है केवल सर्वहत की जीर्ण–शीर्ण अवस्था में बच पाता है

[81] डॉ॰ नरेश मेहता, महाप्रस्थान, पृ॰ 115
[82] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 50

जो प्रजा की स्थित को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत करता है कि प्रजा तो मात्र राजा के आदेशों का पालन करने वाली होती है। इसलिए सर्वहत कहता है –

''मैं तो केवल
निर्देशक की इच्छाओं का अनुचर था?
मैं मात्र भृत्य
मैं यह नाटक क्यों देखता भला
हमसे यह आशा कब की जाती है।
कि हम नाटक देखें, उसमें भाग लें।''[83]

राजनीति में हुए परिवर्तन का सर्वाधिक असर प्रजा पर ही पड़ता है। आज समाज में व्याप्त महँगाई, रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार का भी प्रत्यक्ष प्रभाव प्रजा पर ही पड़ता है। राजनीति में हुए किसी भी परिवर्तन का असर आम जन पर पड़ता है चाहे वह कार्य प्रजा के हित में हो या शासक के हित में इसका प्रत्यक्ष उदाहरण 8 नवंबर 2016 में सरकार द्वारा 500 व 1000 की मुद्रा बंद किये जाने के समय देखा जा सकता है। नोटबंदी के कारण आम जन को लाभ अवश्य हुआ है। परन्तु इस कारण जीवन में आने वाली अस्त–व्यस्तता को प्रकट किया गया है जीवन शैली अस्त–व्यस्त होने के बावजूद भी आम जन सरकार का साथ दे रहा था। क्योंकि सरकार का यह फैसला भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद के विरूद्ध था। सामान्य जन भी स्वयं को सत्य का सामना करने के लिए तैयार रखता है इस विषय में कवि के विचार द्रष्टव्य है :–

''उस पर क्रोधित क्यों होते हो?
उस जैसे साधारण जन को
परिवर्तन का विष पीना
और पचाना
सरल नहीं है।''[84]

राजा द्वारा अपनी मनमानी करते हुए प्रजा को प्रताड़ित करना आज के समय में आम हो चुका है। लोक तंत्र के नाम पर आज भी राजतंत्र को ही बढ़ावा दिया जाता है। सम्राट अशोक को कवि ने आधुनिक राजा के रूप में चित्रित किया है जो प्रजा को यंत्रणा देने के लिए नरक का निर्माण करवाता है तथा स्वयं को परमात्मा मानता है। यद्यपि प्रस्तुत नाट्यकाव्य में ऐतिहासिकता की अपेक्षा पौराणिकता कल्पना को अधिक प्रमुखता दी गई है कवि ने अशोक के अहंकार से विकृत राजा एवं भिक्षु को निर्विकार, करूणा प्लावित, स्थितप्रज्ञ मानव का प्रतीक मानते हुए नाट्य–काव्य की कथा को प्रतीकात्मक सार्थकता प्रदान की गई है। प्रियदर्शी सत्ता

---

[83] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 47
[84] डॉ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 67

के मद में इतना चूर है कि वह अपनी सत्ता को ही परम सत्ता मानता है एवं स्वयं को ईश्वर समझता है। राजा के अहंकार को कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से चित्रित किया है –

''यह पृथ्वी परमेश्वर
व्यापक अपनी सत्ता का निकस
मानता है अपने ही रचे नरक को।''[85]

राजा द्वारा नरक का निर्माण करवाकर प्रजा को यातनाएं दी जाती हैं। परन्तु राजा के द्वारा नरक में प्रवेश के कारण राजा को भी नरक की अनुभूति होती है। सत्ता के मद में चूर राजा द्वारा अहंकारवश घोर को ही नरक का शासक घोषित कर दिया जाता है। परन्तु जब राजा को स्वयं नरक की यंत्रणा से गुजरना पड़ता है तो उसे प्रजा द्वारा झेले गए असहनीय कष्टों का अनुभव होता है। आधुनिक राजा भी भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न प्रजा के कष्टों को नहीं समझ पाता। जब उसे स्वयं अपने बनाये नियमों का पालन करना पड़ता है तभी वह प्रजा के कष्टों को अनुभूत कर पाता है। राजा द्वारा स्वयं को सर्वोपरि समझने की भूल को कवि ने उत्तर प्रियदर्शी नाट्य–काव्य में चित्रित किया है।

3.6.3 अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का सवाल :

अभिव्यक्ति स्वतन्त्रता का शाब्दिक अर्थ है – व्यक्ति अपनी बात को कहने या विचारों को प्रकट करने के लिए स्वतंत्र है। अभिव्यक्ति एक व्यापक शब्द है। अभिव्यक्ति के माध्यम भाषण, लेखन, समाचार पत्र, प्रेस आदि हो सकते हैं। भारत जैसे लोकतन्त्रात्मक राष्ट्र में सभी नागरिकों को संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अधिकार दिया गया है। 1947 में स्वतन्त्रता के पश्चात हमारी अर्थव्यवस्था पूंजीवादी लोगों के आने से आम जनता को पहले की तरह ही अपनी शक्ति का गुलाम बनाए रखा। वर्तमान समय में भी उपेक्षित वर्ग चाहकर भी अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पा रहा है। अपने अधिकारों का प्रयोग न कर पाने का एक महत्वपूर्ण कारण अशिक्षा है। जिसके कारण दबा एवं पिछड़ा वर्ग अपने अधिकतर अधिकारों से वचिंत रह जाता है और प्राचीन समय से चली आ रही दास प्रवृत्ति को ही अपनाए रहता है क्योंकि वह इस दासता को मानसिक रूप से स्वीकार चुका है –

''सूने गलियारे सा यह सूना। जीवन बीत गया ।
क्योंकि हम दास थे।
केवल वहन करते थे आज्ञाएँ हम अंधे राजा की
नहीं था हमारा कोई अपना खुद का मत।''[86]

---

[85] डॉ॰ अज्ञेय, उत्तर प्रियदर्शी, पृ. 42
[86] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 29

अंधायुग में कवि ने प्रहरियों के माध्यम से मानसिक दासता की प्रवृति को चित्रित किया है।

नरेश मेहता कृत प्रवाद–पर्व में लेखक का विचार स्पष्ट है कि अपना मत प्रकट करने का अधिकार सभी को है केवल राजा, राजपुरूषों या उच्च पदों पर आसीन अभिजात्य अधिकारियों का नहीं। इस नाट्य–काव्य की रचना 1975 में उस समय की गई जब भारत में आपातकालीन स्थिति की घोषणा हो चुकी थी और शासन की कठोर नीति तथा पुलिस के दमन चक्र के कारण सभी को मूक पशु बना दिया गया था। अतः जागरूक संवेदनशील तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों में विश्वास रखने वाले नरेश मेहता ने इस नाट्य–काव्य के नायक राम के माध्यम से अपने विचारों को स्पष्ट एवं निर्भीक, अभिव्यक्ति दी है। इसमें कवि का आधुनिक समय बोध मुखरित हुआ है जिसमें राम राजा के माध्यम से ऐसे राज्य की कल्पना की गई है जिसमें व्यक्ति को अपनी शंका, अपना विचार प्रकट करने, परामर्श देने का अधिकार है :–

''क्या गरिमा, क्या चरित्र
क्या अधिकार, केवल राज्य
राज पुरूषों या
इतिहास पुरूषों के ही होते हैं
अनाम साधारण जनता के कुछ नहीं होते।''[87]

आधुनिक समय में राजनीति का व्यवसायीकरण हो गया है यही राजनीति का अति आधुनिक रूप है नेता लोग अपने राजनीति को अपने व्यवसाय की तरह समझते हैं उन्हें जनता समाज आदि के अधिकारी से कोई मतलब नहीं है इन आधुनिक नेताओं को सिर्फ वोटों से मतलब है।

जनता को स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का सवैधानिक अधिकर प्राप्त है संशय की एक रात में राम कहते हैं कि जनता की वाणी को दबाना उसे गूंगा बनाना अनीति ही नहीं, स्वयं राजा के लिए भी घातक है। ''जिस दिन मनुष्य की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता छीन ली जाएगी वह विश्व के इतिहास का दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा। इस विषय में कवि नरेश मेहता का विचार द्रष्टव्य है :–

''गूंगेपन से ही प्रेयस है
वाचालता, जिस दिन
मनुष्य अभिव्यक्ति हीन हो जाएगा
वह सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा।[88]

राम रावण का उदाहरण देते हुए कहते है कि रावण जैसे पंडित विद्वान, युद्ध कुशल, पराक्रमी तथा तपस्या से अर्जित दिव्य अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित महान योद्धा को भी अनन्त

[87] डॉ॰ नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ॰ 15–16
[88] डॉ॰ नरेश मेहताा, प्रवाद पर्व, पृ॰ 38

अपने भाई विभीषण का परामर्श न मानकर उसे देशद्रोही समझकर राष्ट्र से निष्कासित करने के कारण पराजित होना पड़ा था। रावण ने विभषण की विरोधी वाणी को दबाया था और उसका परिणाम हमारे सामने है। आज मैं इस धोबी की आवाज को दबाकर मानव से उसकी स्वतंत्रता एवं अभिव्यक्ति का अधिकार नहीं छीन सकता।

''मानवीय स्वातन्त्रय, मानवीय भाषा और
मानवीय अभिव्यक्ति के
प्रति इतिहास का सामना
वैसी ही, मानवीय प्रतिगरिमा के साथ
करना होगा लक्ष्मण ।
प्रतिइतिहास को इतिहास से नहीं
विनय से स्वीकार करना होगा।''[89]

कवि ने समकालीन परिवेश परिस्थितियों को देखते हुए प्रजा प्रतीक राम के माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्ता दी गई है। जो सामान्य मनुष्य के अस्तित्व और वाणी की रक्षा तथा महानता बनाये रखने का सराहनीय प्रयास है। सीता भी राम के साथ जनता की निर्भीक अभिव्यक्ति का पक्ष लेती है। राम अपने विवेक के कारण कायरतापूर्ण असहमति को अनुत्तरदायित्वपूर्ण वाचालता से बढ़कर अपराध मानते है। वे कहते हैं कि अपराध के समक्ष मौन रहना बोलने से भी अधिक दुष्कर होता है। भाषा का मनुष्य से अलग होना ईश्वर का सृष्टि से हीन होने के समान है –

''अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरूपयोग
यदि अनुत्तरदायित्वपूर्ण वाचालता है
तो महानुभवों, कायरतापूर्ण सहमति
उससे भी बड़ा दुरूपयोग है।''[90]

कवि नरेश मेहता मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं अभिव्यक्ति के लिए निरन्तर प्रयासरत रहे हैं। उन्होंने प्रवाद पर्व के साथ–साथ, संशय की एक रात' में भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समहति प्रदान की है। राम मात्र सीता को स्वतन्त्र कराने के लिए युद्ध नहीं करना चाहते। इस पर हनुमान एवं अन्य वन्य प्राणी कहते हैं कि सीता मात्र उनकी पत्नी नहीं सम्पूर्ण जन जाति की स्वतंत्रता का प्रतीक है जो रावण द्वारा इन प्रदेश वासियों से छीन ली गई है :

''रावण अशोकवन की सीता
हम साधारण जन की
अपहत स्वतन्त्रता।''[91]

---

[89] डॉ नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ॰ 38
[90] डॉ॰ नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ॰ 32

लक्ष्मी नारायण लाल कृत 'सूखा सरोवर' में व्यक्गित स्वतंत्रता के लिए व्यक्ति को प्रयासरत दिखाया गया है। सरोवर सूख जाने पर राजा का बंदी गृह टूट जाता है। परिणामतः सभी बंदी मुक्त हो जाते हैं। पुरोहित द्वारा प्रजा को दबाने पर बंदी गृह से मुक्त हुआ व्यक्ति कहता है कि मैं अभी होश में आया हूँ क्योंकि मैं स्वतंत्र हूँ वे सरोवर का धन्यवाद करते हैं क्योंकि सरोवर सूखने के कारण ही वे इस बंधन से मुक्त हुए हैं। पुरोहित को कहते हैं कि अब तुम हमें बंदी नहीं बना सकते हो क्योंकि हम इतने दिनों तक राजा की कैद में थे इसलिए हम बंदी होने का दर्द एवं स्वतन्त्रता के महत्व को समझ चुके हैं :–

''जो मुक्त थे अब तक कुछ नहीं कर सके
उन्हें मुक्ति का अर्थ बोध ही नहीं,
हमें बोध है हम बंदी थे
अब हमी मुक्ति देंगे सभी को।''[92]

स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का अधिकार प्राप्त होने पर भी वर्तमान प्रजा सत्य को समझ कर व्यक्त नहीं कर पाती क्योंकि प्रजातंत्र होते हुए भी यहाँ राजतंत्र जैसी ही शासन प्रणाली है।

निष्कर्षत स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त है। फिर भी अज्ञानतावश जनजाति एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अपने इस अधिकार का प्रयोग करने से व्यक्ति हिचकते हैं। 'संशय की एक रात', 'प्रवाद पर्व', 'एक' कंठ विषपायी', 'सूखा सरोवर', 'अंधा युग', जैसे नाट्य काव्यों में स्वतंन्त्रता की महत्ता को दर्शाया गया है।

3.64 जन अधिकार एवं क्रांति की भावना :–

राज्य में साधारण जन का बहुत महत्व होता है। वह साधारण जन ही अपनी वोट की ताकत से शक्तिशाली कर्मठ, सुशील, संयमी एवं समझदार राजा को चुनता है। परन्तु राजा जब उसके अधिकारों की अनदेखी कर स्वयं की सुख सुविधाओं के लिए नियम बनाता है तो वही साधारण जन क्रांतिकारी बनकर उसका विरोध भी करता है साधारण जन कितना महत्वपूर्ण है यह बात नरेश मेहता कृत प्रवाद पर्व नाट्य–काव्य में सीता के प्रति धोबी द्वारा कही गई बात से स्पष्ट परिलक्षित होती है। सीता को राजा की पत्नी एवं पतिव्रता होने के बावजूद भी धोबी द्वारा कही गई बात के कारण वन में जाना पड़ता था। इससे यही सिद्ध होता है कि राजा के पास भले ही सत्ता की ताकत हो परन्तु अपनी बात कहने का अधिकार तो साधारण जन भी रखता है परन्तु आधुनिक राजतंत्र में किसी राजा के सामने किसी का हाथ उठता है तो उसे काट दिया जाता है। क्योंकि तर्जनी इतिहास के लिए जलता प्रश्न छोड़ जाती है। राम के शब्दों में :–

---

[91] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 78
[92] डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 18

साधारण जन के पास
कब भाषा रही है?
वह तो सदा देह से ही बोलता आया है।
एक अनाम साधारण जन की तर्जनी
समय के पत्रों और लोगों के इतिहास निरीह नेत्रों से
जब कोई, जलता प्रश्न उत्कीर्ण कर देती है,
जैसे प्रतिशिलालेख हो।''[93]

साधारण जन भी सत्ता पाने पर ऐसा कथा पुरूष बन जाता है। साधारण जन का राज्य के लिए कितना महत्व है यह राम द्वारा कही बात से स्पष्ट हो जाता है। राम कहते हैं कि मुझे राजसी संदर्भों से कट कर जो अनुभव हुए है वे साधारण जन के बीच रहकर ही हुए हैं। इससे हमारे अनुभवों का दायरा बढ़ गया है स्वयं को सदैव विशिष्ट देखने की विशेष प्रकार की इच्छा से मुक्ति मिली है। साधारण जन की इच्छाओं के विषय में सोचना भी राजा का ही कर्तव्य है।

दुष्यन्त कुमार कृत नाट्य काव्य में एक कंठ विषपायी, में इसके विपरीत दिखाया गया है प्रवाद पर्व में जहाँ राम साधारण प्रजा को महत्त्व देते हैं वहीं दुष्यन्त कुमार द्वारा प्रजा पर शासक के अत्याचार एवं प्रजा के संघर्ष को चित्रित किया गया है। साधारण जनता निर्दयी शासक के अत्याचार सहन करती है। परन्तु धीरे–धीरे बढ़ते अत्याचार के समक्ष उसका भीरू एवं दब्बू स्वभाव क्रांतिकारी एवं उग्र रूप धारण कर लेता हैं। आधुनिक समय में स्थान–स्थान पर होने वाले आंदोलन एवं रैलिया इसका जीवन्त उदाहरण है। जब जनता जागृत होती है तो वह अत्याचार के विरूद्ध विरोध प्रदर्शित करती है। शासक के समक्ष जलूसों एवं क्रांतिकारी आंदोलनों के माध्यम से अपना रोष प्रकट करती है। एक कंठ विषपायी में आज जनता शिव शंकार के क्रोध के कारण मारी जाती है तो वह ब्रह्मा से युद्व की आज्ञा चाहती है । ब्रह्मा द्वारा युद्ध की आज्ञा न मिलने के कारण क्रोधवश प्रजा ब्रह्मा के विरूद्ध नारेबाजी करने लगती है :–

हम ब्रह्मा को नहीं चाहते
प्रजातंत्र में यह मनमानी नहीं चलेगी,
अपना यह सिंहासन छोड़ो ।''[94]

जनता का रोष आंदोलनों के माध्यम से स्पष्ट दिखलाई पड़ता है जब इन्द्र बार बार शिव शंकर से युद्ध की अनुमति मांगता है तो ब्रह्मा द्वारा मना करना पर प्रजा रोष प्रकट है। इन्द्र कहते है कि हमें डर है कि कही ही विद्रोह न कर दे। क्योंकि वह युद्ध करने को आतुर ब्रह्मा का ही इंतजार कर रही है। इन्द्र के मन के डर को कवि ने इन शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान की है:–

---

[93] डॉ॰ नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ॰ 110
[94] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 103

''यहाँ उलझते रहे हम परस्पर चर्चा में,
वहाँ हमारी सेनाएं आशंकित होकर
शासन से विद्रोह न कर दें।''[95]

प्रजा द्वारा बार–बार अपना रोष प्रकट करने पर भी जब शासक द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं दी जाती तो प्रजा भड़क उठती है और उसे नियंत्रित करना दुष्कर हो जाता है। प्रजा की इसी मनोस्थिति का उल्लेख लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने नाट्य काव्य सूखा सरोवर में भी किया है। जब प्रजा पर आवश्यकता से अधिक अत्याचार बढ़ जाता है तो उसमें क्रांति का स्वर पनपने लगता है। जो विद्रोह के रूप में स्पष्टतः परिलक्षित होता है। सूखा सरोवर में छोटे राजा ,द्वारा प्रजा पर अत्याचार बढ़ने पर प्रजा उसे घृणित नजरों से देखती है। राजा भी प्रजा की मनोस्थिति को समझता है। छोटे राजा के शब्द प्रमुख नाट्य–काव्य में इसी मनोस्थिति को प्रकट करते हैं :–

''मेरी शक्ति से परे है
ऐसी क्रांति है यह
जो ठन्डी है, ऐसी मनोशक्ति है यह
जो अदृश्य है।''[96]

जब राजा सेवकों को बार–बार डांटता है तो वे राजा को कटु नेत्रों से देखते हैं। वे आपस में बातचीत करते हुए राजा की निन्दा करते हैं। सेवक कहते हैं कि हमें नींद आ रही है क्योंकि जो सच सतत् जागता है वह आज तक हमारे अधिपति को ही नहीं मिला है। छोटे राजा द्वारा बार–बार सेवकों का तिरस्कार करने पर क्रोध उनके चेहरे पर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। यह क्रोध क्रांति का ही रूप है। कवि ने प्रजा के अन्दर धधक रही आग रूपी रोष को परोक्ष करते हुए भी शब्दों के माध्यम प्रत्यक्ष रूप में प्रकट किया है :–

''आग्नेय आँखें, मुद्रासमुची
जिनमें एक मूक प्रतिहिंसा जल रही थी।''[97]

अतः कवि ने स्वातंत्र्योत्तर नाट्य–काव्यों में जहाँ जनता पर हो रहे अत्याचारों को प्रकट किया है वहीं जनता द्वारा अत्याचारों के विरूद्ध क्रांतिकारी भावना को भी परिलक्षित किया है। जो आधुनिक प्रजातान्त्रिक राज्य की प्रजा को दर्शाती है जो अपने अधिकारों के प्रति सजग है।

---

[95] वही, पृ॰ 110
[96] डॉ॰ लक्ष्मी नारायण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 71–72
[97] वही, पृ॰ 56

3.7 लोकतंत्र एक दिखावा

लोकतंत्र एक दिखावा का अध्ययन करने से पहले लोकतंत्र का अर्थ समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है। लोकतंत्र को अंग्रेजी में Democracy Demos और Cratiaa से बना है। Demos का अर्थ है – 'लोक' या जनता और cratia का अर्थ है सत्ता। इस प्रकार Democracy का अर्थ लोगों की सत्ता या शासन है। प्रसिद्ध राजनीतिक ब्राइस का मत है कि ''लोकतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें राज्य के अधिकार किसी विशेष श्रेणी के लोगों नहीं बल्कि समूचे समाज के लोगों को प्रदान किये जाते है।''[98] सीले के अनुसार –''लोकतंत्र वह शासन व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का भाग हो।''[99] डायसी भी सीले के मन्तव्य से ही पूर्णतः सहमत प्रतीत होते हैं। उनका इस विषय में मन्तव्य है कि ''लोकतन्त्र वह शासन व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का भाग हो।''[100] निष्कर्षतः सारी जनता स्वयं शासन नहीं कर सकती और न ही सारे राजनीतिक विषय पर सर्व सम्मति ही संभव है इसलिए लोकतंत्र में बहुमत का शासन होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही राजनेताओं ने जनता के लिए, जनता के द्वारा चुने गए शासन का सपना देखा था, परन्तु यह सपना मात्र ही बनकर रह गया। सत्य इसके विपरीत है। आज जनता के लिए स्वतन्त्रता एक शब्द बन कर ही रह गई है प्रजातंत्र के नाम पर आज भी राजतंत्र ही चलाया जा रहा है।

नरेश मेहता कृत 'शम्बूक' नाट्य काव्य में इसी षडयंत्रकारी राजतंत्र, दूषित एवं त्रुटिपूर्ण समाज दर्शन को चित्रित किया गया है। प्रजा द्वारा शासक के समक्ष रखे गए सवालों को कवि ने इस प्रकार चित्रित किया है :–

शासकों को सदा यही सुविधा रही है राम,
प्रजा को इससे सदा दुविधा रही है राम
मारते हो और कहते हो इसे उद्वार
चलेगा कब तक तुम्हारा यह घृणित व्यापार।[101]

चुनाव होते ही सत्ता की बागडोर संभालते ही शासक प्रजा से अपने सभी रिश्ते समाप्त कर देता है वह उस प्रजा को पहचानने से भी इंकार कर देता है जिसे वह चुनाव के समय हाथ जोड़कर वोट मांगताहै। शासन मिलते ही लोकतंत्र राजतंत्र का रूप ले लेता है। राजा स्वयं को ही सर्वोपरि समझने लगता है और प्रजा के विरूद्ध राजनीतिक षडयंत्रों का सिलसिला आरम्भ हो जाता है। राजनीतिक षडयंत्रों के माध्यम से ही कवि राजनीति की कड़वी सच्चाई समाज के

---

[98] ब्राइस, मॉडर्न डेमोक्रेसी, Vol. I P -20
[99] Seelay, Introduction to Pol. Science P - 32
[100] डायसी, भारत की संविधान उद्देशिका, पृ॰ 8
[101] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 53

समने प्रत्यक्ष करता है। सत्ताधारी नेता अपना शक्ति प्रदर्शन करने के लिए निर्दोष जनता के साथ दुर्व्यवहार करते रहते हैं। प्रजातंत्र में भी राजा के अमानवीय एवं अनैतिक व्यवहार का सामना प्रजा को ही करना पड़ता है।

''सिंहासन पर चाहे
युधिष्ठिर हो या दुर्योधन
वह पीता रहेगा हामरा लहू
अपने पैने दाँतों से।''[102]

राजनेता चुनाव में जीतकर स्वयं को ही सर्वोपरि मानने लगते हैं वे जनता द्वारा दिए गए समर्थन को भूलकर अपनी मनमानी करने लगते हैं। स्वतंत्रता के समय हमारे संविधान में भारत को लोकतान्त्रिक गणराज्य घोषित किया गया था। लोगों को बिना किसी भेदभाव के सभी प्रकार के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक अधिकार दिये गये थे जो आज मात्र औपचारिकता बन कर रह गए हैं। आज जिसके हाथ में पैसा है उसी के हाथ में सत्ता है और वही सम्पूर्ण राष्ट्र को अपनी मनमानी के अनुसार चलाता है। साधारण जन को बोलने तक नहीं दिया जाता इसी तथ्य की पुष्टि 'चिड़िया की आँख' नाट्य काव्य में की गयी है –

''तोड़े जा सकते हैं शोषण के दुर्ग
फिर हमे तों
बोलने तक का अधिकार नहीं है।''[103]

निष्कर्षतः आधुनिक राजनीति में लोकतंत्र मात्र एक शब्द बनकर रह गया है वास्तविकता यह है कि राजतंत्र ही सर्वत्र विद्यमान है। मनुष्य को भ्रमित करने के लिए राजतंत्र पर लोकतंत्र का खोल डाल दिया गया है।

3.8 सत्ता प्राप्ति के लिए षडयंत्र एवं अपराध पूर्ण राजनीति :–

स्वतन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में सत्ता प्राप्ति के लिए षडयंत्र एवं अपराध पूर्ण राजनीति को परिलक्षित किया गया है। सत्ता के पाने का विकट खेल प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। सत्ता प्राप्ति के लिए भाई–भाई का दुश्मन बना हुआ है। सुभाष पंत जी ने अपने नाट्य–काव्य 'चिड़िया की आँख' में सत्ता को पाने के लिए कौरवों द्वारा रचे षडयंत्रों को चित्रित किया है। धृतराष्ट अंधा होकर भी ऐसा षडयंत्र रचता है वह पांडवों को मारने के लिए लाक्षागृह का निर्माण करवाता है। वहीं पाण्डव भी सत्ता के भूखे है वे राजनीतिक षडयंत्रों में ही पले बढ़े हैं। इसलिए कौरवों के षडयंत्र को समझ लेते हैं। सत्ता पाने के लिए वर्तमान समय में राजनैतिक पार्टियां इसी भांति एक दूसरे को हानि पहुंचाने की पुरजोर कोशिश करती है ताकि स्वयं के पक्ष

[102] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 73
[103] वही, पृ॰ 33

को सत्ता में मजबूती प्रदान कर सकें। पाण्डवों द्वारा रात में निषाद मां एवं उनके बच्चें को इसलिए जला दिया जाता है। ताकि समाज को यह लगे कि पाण्डव जल चुके हैं और वह अज्ञात रूप से सत्ता पाने की पुरजोर कोशिश करते रहे। सत्ता का मोह मनुष्य के विवेक को नष्ट कर देता हैः

''हम नहीं पैदा हुए वनों में भटकने के लिए
सत्ता पाना हमारा अधिकार है
सत्ता का संघर्ष नहीं देखता विवेक
और न अन्तर की वाणी सुनता है
न्याय–अन्याय की सीमा से बाहर
हमें प्राप्त करना है सिर्फ लक्ष्य।''[104]

सत्ता की भूख आम जनता को यंत्रणा देती है। सत्ता पाने वाला व्यक्ति विवेक शून्य हो जाता है। वह सही गलत पहचानने की शक्ति खो देता है। यही कारण है कि धर्म, सम्प्रदाय एवं जाति के नाम पर होने वाले दंगों के पीछे भी किसी भ्रष्ट राजनेता का ही हाथ होता है। राजनेता अपना उल्लू सीधा करने के लिए अपने परिवार को भी कष्ट पहुंचाने में पीछे नहीं हटता। सत्ता की भूख में जलते पाण्डवों ने स्त्री की अस्मिता को भी तार–तार कर दिया उन्होंने हाड्–मांस की द्रोपदी को ऐसे बांट लिया, जैसे भूखे रोटी बांटते है। सत्ता का खेल बहुत अंधा है। आम जनता इसे नहीं समझ पाती और राजनेता इसे बड़े चाव से खेलता है इसी विषय में कवि सुभाष पंत जी का स्पष्ट गन्तव्य है :

''बौनी है सत्ता
पर उसकी भूख बहुत बड़ी है यह छीनती है
मनुष्य से उसकी मनुष्यता।''[105]

झूठ, छल, कपट, भ्रष्टाचार, पापाचार, अन्याय और अत्याचार राजनेताओं के गुण हैं। राजनेता, कुर्सी तक पहुँचने के लिए अपने ही परिवार को भी मोहरे की तरह इस्तेमाल करते हैं। इन्द्रप्रस्थ की लालसा में पाण्डवों ने अपनी ही पत्नी को वस्तु मात्र समझकर जुए में दांव पर लगा दिया तथा राज्य का विस्तार करने के लिए कितने ही निर्दोषों का खून बहाया। उन्होंने राज्य विस्तार के लिए युद्ध का संघर्षी खेल खेला जिसमें राज सत्ता तो मिली परन्तु न जाने कितने ही निर्दोष लोगों का खून बहा। युद्ध के लिए प्रजा से ही जबरदस्ती कर वसूला गया और प्रजा को युद्ध करने के लिए बाध्य किया गया। कितने ही निर्दोष व्यक्ति युद्ध में मारे गए परन्तु पाण्डवों की सत्ता की लालसा कम नहीं हुई अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिए निर्दोष प्रजा के

[104] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 71
[105] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 73

साथ दुर्व्यवहार करना सत्ताधारियों का स्वभाव बन चुका है। सत्ताधारी अपना फायदा देखकर ही कार्य करते हैं। वे अपने हित के लिए एक दूसरे के विरोधी होते हुए भी सहयोग बन जाते हैं।

राजनीतिक क्षेत्र में शासक के अन्दर पुत्र मोह अंधता की प्रवृत्ति इस सीमा तक प्रवेश कर चुकी है कि उससे बाहर निकलना धृतराष्ट ही नहीं आधुनिक युग के किसी भी नेता के लिए सम्भव नहीं है। कौरव वंश के विनाश के बाद धृतराष्ट भले ही इस निष्कर्ष पर पहुँच जाता है कि व्यैक्तिक सीमाओं के बाहर भी सत्य हुआ करता है। किन्तु व्यवहारिक धरातल पर वह इस प्रवृत्ति को नहीं छोड़ पाया है। उत्तरा के गर्भ पर छोड़े गए अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र के संदर्भ में युयुत्सु को दीघार्यु होने का आशीर्वचन देते हुए कहते हैं :–

''वत्स तुम मेरी आयु लेकर भी
जीवित रहो
अश्वत्थामा का ब्रह्मास्त्र
यदि गिरा है उत्तरा पर
तो कौन जाने एक दिन युधिष्ठिर
सब राजपाट तुमको ही सौंप दे।''[106]

शासक चाहे महाभारत कालीन है या वर्तमान राजनेता सत्ता के मोह में अंधा होकर साधारण जनता को युद्ध भूमि में झौंकने में जरा भी संकोच नहीं करता। सत्ता के मोह ने अंधे मर्यादाहीन शासक के शासन में प्रजा का भी कोई महत्त्व नहीं रह जाता। सत्ताधारी शासक के लिए प्रजा निरर्थक एवं निष्क्रिय हो जाती है वह सदैव अपनी मनमानी करता रहता है।। सत्ता के लिए मनुष्य की ही नहीं। गर्भ के रहस्य में छिपे ऐसे बच्चे तक की मृत्यु करने को तैयार हो जाता है जो अभी तक इस सृष्टि का हिस्सा भी नहीं बना है। अंधायुग में अश्वत्थामा द्वारा उत्तरा के गर्भ पर छोड़ा गया ब्रह्मास्त्र इसी जघन्य कार्य को प्रदर्शित करता है। 'एक कंठ विषपायी' में भी सत्ताधारियों की नीतियों पर व्यंग्य करते हुए सर्वहत कहता है कि –

''आप लोग शासक है
और शासकों को कहीं
रक्त की कमी हुआ करती है
आप लोग चाहें तो मेरे लिये
रक्त का समुन्दर भर सकते हैं।''[107]

सत्ता का भूखा शासक केवल अपनी भूख देखता हैं। सत्ता के मोह में वह इतना अंधा हो जाता है कि उसे अन्यत्र कहीं कुछ दिखाई नहीं देता। अंधा युग में धृतराष्ट और चिड़िया की

---

[106] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 97
[107] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 116

आंख में कौरव और पाण्डव ऐसे ही सत्ता के भूखे राजनेता के रूप में चित्रित हुए हैं जो आधुनिक राजनेता की भूख को स्पष्टतः परिलक्षित करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि सत्ता प्राप्ति के लिए राजनेता अनेक अमानवीय कृत्यों को बढ़ावा देता है तथा नित्य नए षडयंत्रों के माध्यम से विनाशकारी खेल खेलता रहता है। स्वातन्त्रयोत्तर नाट्य काव्यों में ऐसे ही राजनेता के चरित्र को उद्घाटित किया गया है जो सत्ता के लिए अपना सर्वस्व दांव पर लगा देते हैं।

3.9 स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व के आदर्शों को नेताओं द्वारा भूलना :–

स्वतन्त्रता के बाद प्रायः देखा गया है कि नेता लोग कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। उनकी कथनी के समय कही गयी बहुत सी बातें आज भी पूर्ण होने की कतार में खड़ी हुई हैं। स्वातन्त्र्योत्तर भारत में सत्ता ऐसे व्यक्तियों के हाथों में सौंप दी गयी जिनके पास पूंजी थी। उद्योगपतियों के हाथों में राजव्यवस्था जाने से उन्होंने स्वतंत्रतापूर्व के आदर्शों एवं मूल्यों को भूलकर केवल अपने स्वार्थ हेतु राजनीति का प्रयोग किया। फलस्वरूप गरीब व्यक्ति और गरीब होता गया और अमीर व्यक्ति और अमीर भूखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि भयानक समस्याओं का जन्म हुआ। ऐसी स्थिति में स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाली आम जनता को केवल विवशता ही प्राप्त हुई। वास्तव में देश स्वतन्त्रता के नाम पर अंग्रेजों के हाथ से कुछ पूंजीवादी सत्ताधारियों के हाथों में चला गया था। जनता की दशा वैसी की वैसी ही बनी हुई थी जैसी पहले थी। देश के भविष्य का निर्माण किया जा रहा था। परन्तु उसमें आम जनता की कोई भागीदारी नहीं थी। प्रशासन व्यवस्था में केवल दिखावा रह गया था। जनता की मूलभूत आवश्यकताओं की ओर ध्यान कम हो गया था। अब जनता किसी भी शासक से संतुष्ट प्रतीत नहीं होती। वह जो शासक होता है उससे ज्यादा श्रेष्ठ पहले वाले शासक को समझती थी। जनता की इस मनोवृत्ति को कवि ने इन पंक्तियों में स्पष्ट किया है :–

> ''इससे तो पहले ही शासक अच्छे थे
> अंधे थे –
> लेकिन वे शासन तो करते थे।
> ये तो संत ज्ञानी है।
> शासन करेंगे क्या?
> जानते नहीं है ये प्रकृति प्रजाओं की।''[108]

स्वतंत्रता के साथ ही जनता के नवीन युग के लिए संजोये गए स्वप्न टूट गये थे। जब देश के भविष्य का निर्माण किया जा रहा था तो उसमें जनता की कोई भागीदारी नहीं थी।

---

[108] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 109

क्रांति की आग जो स्वतन्त्रता से पूर्व थी वह अब शांत हो चुकी थी। स्वतन्त्रता पूर्व प्रजा के साथ जो दुर्व्यवहार अंग्रेजों द्वारा किया जा रहा था वह अब अपनों द्वारा ही किया जाने लगा था। नया युग संघर्षशीलता, विषमता, संयुक्त दिशाहीनता एवं स्वार्थों से लिप्त था। धर्मवीर भारती, द्वारा रचित अंधा युग एक प्रतीकात्मक नाट्य काव्य है जो द्वितीय महायुद्ध के बाद राजनीति और साहित्य के क्षेत्र में होने वाले घोर अंधेरे का प्रतीक है। ज्ञान और मर्यादा बुद्धिजीवी वर्ग के विषय है। जब जनता किसी का भी आधिपत्य स्वीकार कर लेती है तो वह आर्थिक सम्पन्नता भले ही न पाये आर्थिक निश्चिन्तता की मांग आवश्यक करती है। वह ऐसा शासक चाहती है जो जन जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं को समझे।

स्वतन्त्रता एक महान मूल्य है। परतन्त्र व्यक्ति स्वतन्त्रता के महत्त्व को भली–भांति समझता है परन्तु जब स्वतंत्रता मिल जाती है तो व्यक्ति उसका दुरूपयोग करता है। स्वतन्त्र व्यक्ति उच्छृंखल हो जाए तो स्वतंत्रता का मूल्य बेकार हो जाता है। स्वतंत्रता न उच्छृंखलता होती है और न अराजकता। अराजकता और उच्छृंखलता दोनों अपमूल्य है। नरेश मेहता ने इसी का अवमूल्यन अपने नाट्य–काव्य 'प्रावाद पर्व' में लक्ष्मण के इन शब्दों के माध्यम से किया है :–

''यह स्वधीनता नहीं है बंधुओं
स्वतंत्रता का अर्थ
अराजकता नहीं होता
अराजकता
अपराध से भी गंभीर होती है
क्योंकि वह राजद्रोह की जननी है।''[109]

रक्षा करने वाले ही भक्षक बन जाए तो फिर राष्ट्र की रक्षा कौन करेगा। जब सरकार अपने ही बनाये गये नियमों का उल्लंघन करेगी तो फिर राष्ट्र की रक्षा कौन करेगा। अनुशासन हीनता के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र ध्वस्त हो जायेगा। स्वतन्त्रता के समय दिये गय वीरों के बलिदानों को भूलकर शासक बनने वाले राजनेताओं द्वारा अपने ही लाभ के लिए नियम बनाये गये और फिर अपनी सुविधा के द्वारा उनमें संशोधन किया जाता है। आधुनिक राजनेताओं की इन्हीं आदतों को कवि ने इस प्रकार रूपायित किया है –

जब सृष्टि के नियन्ता होकर,
अपने रचे नियमों की अवज्ञा करें।
रक्षक ही भक्षक हो जायें,
तो कोई क्या कर सकता है।''

---

[109] डॉ॰ नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ॰92

थोड़े दिन पश्चात भावना मर जाती है।
या दुर्गन्ध,
समूचे युग में भर जाती है।''[110]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शासक कुर्सी प्राप्त करते ही स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने वाले व्यक्तियों की इस शहादत को भूल जाता है। उनकी कुर्बानी को अनदेखा करके सत्ता के मद में चूर शासक समाज को भी विषैला बना देता है और व्यक्तियों की भावनाएं दम तोड़ देती हैं। वर्तमान समय में भी किसी भी राजनेता के निधन पर सरकारी अवकाश की घोषणा कर पूरे राष्ट्र में शोक मनाया जाता है। परन्तु सीमा पर शहीद हुए जवान की शहदत को जल्दी ही भुला दिया जाता है। वर्तमान समय में मीडिया भी राजनेताओं के हाथो बिक चुका है। वह आम जनता का दर्द न दिखाकर राजनेताओं की महानता का बखान करता रहता है। स्वतन्त्रता का महत्व भी वही समझ सकता है जिसने परतन्त्रता के गरल को पिया हो। जब कोई व्यक्ति स्वतन्त्रता पाने के लिए बलि पर चढ़ता है तो वह अमर हो जाता है। परन्तु जैसे–जैसे समय का चक्र घूमता जाता है वैसे वैसे उनके बलिदानों को जनता द्वारा भुला दिया जाता है। लक्ष्मीनारायण लाल कृत सूखा सरोवर में जन प्रतिनिधि की बलि मांगी जाती है तो राजा अपना राष्ट्र छोड़कर दूसरे राष्ट्र में भाग जाता है इसलिए यह बलि राष्ट्र का ही एक महान पुरूष देता है। राजनेताओं द्वारा भले ही उन क्रांतिकारियों की शहादत को भुला दिया जाता है परन्तु इतिहास सदैव उनकी इन कुर्बानियों का ऋणि रहेगा। इसी उक्ति को कवि ने इस प्रकार चरितार्थ किया है –

''पर सत्य था वह
प्यासों का तप था वह
निरर्थक थी उसकी बलि
पर अमर है वह
उसकी आत्मा
चिर शांत होगी।''[111]

स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर व्यक्ति परतंत्रता का बोध भूल जाता है। परतन्त्र व्यक्ति स्वतन्त्रता रूपी सवेरे की आशा में सदैव रहता है। स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देने वालों का इतिहास सदैव ऋणि रहेगा।

अतः स्वतन्त्रता से पूर्व राष्ट्र के लिए जो स्वप्न देखे गए थे। वे पूंजीवादी हाथों में सत्ता जाते ही चूर हो गए। आम जनता जो स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रही थी उसके हाथ उदासीनता के अलावा कुछ नहीं लगा। स्वतन्त्रता के बाद भारत कुछ भ्रष्ट नेताओं एवं

---

[110] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी पृ॰ 87
[111] डॉ लक्ष्मी नारायण लाल, सूखा सरोवर, पृ॰ 117

पूंजीपतियों के हाथों में सौंप दिया गया। जहाँ उन्होंने अपने लाभ के लिए नियम बनाये। राष्ट्र के हित के नाम पर केवल अपने हित की चिंता की। स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने वाले महान् व्यक्तियों की शहादत को वर्तमान नेताओं द्वारा शीघ्र ही भुला दिया गया।

3.10 प्रशासनिक कार्यों में राजनेताओं का हस्तक्षेप :–

प्रशासन भी राजनेताओं के हाथों की कठपुतली बना हुआ है। प्रशासनिक कार्यों में राजनेताओं के हस्तक्षेप के कारण भ्रष्टाचार को और भी अधिक बढ़ावा मिला है। वर्तमान समाज में फैला भ्रष्टाचार आधुनिक राजनीति का ही दुष्परिणाम है। समाज में निर्मित सामाजिक समस्याओं में हो रहे राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण समाज भ्रष्टाचार के शिकंजे में कसता जा रहा है। 'चिड़िया की आँख', नाट्य काव्य में सुभाष पंत जी ने इसी भ्रष्ट राजनीति को प्रकट किया है। द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य को इसलिए धनुर्विद्या नहीं दी जाती क्योंकि वह अछूत है द्रोण पाण्डवों एवं कौरवों के गुरू हैं। वह जानते हैं कि यदि एकलव्य अर्जुन से अच्छा धनुर्धर बन गया तो उनका राज सम्मान नहीं होगा। इसलिए वह एकलव्य को शिक्षा देने से इंकार कर देते हैं कि वह कुपात्र है। माधवी राजनेताओं के स्वभाव एवं प्रशासन की मिलीभगत को भलीभांति जानती है इस लिए वह कहती है कि –

''आचार्य तुम्हें शिक्षा नहीं देंगे
क्योंकि आश्रमों में तय होती है
राजतन्त्र की कुटनीति।''[112]

वर्तमान व्यवस्था में निहित राजनेताओं के प्रशासन में हस्तक्षेप को पूर्णतः दर्शाया गया है। सरकारी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में वर्तमान समय में राजनेताओं का हस्तक्षेप देखने को मिलता है। जिस कारण राजनीति भ्रष्टाचार समाज की जड़ों तक फैल गया है। इसे दूर कर पाना अत्यन्त दुष्कर हो गया है। द्रोण द्वारा शिक्षा ने देने का कारण जानने पर एकलव्य कहता है कि द्रोण का विवेक राजकोष में गिरवी पड़ा है। वहीं विवेकहीन अर्जुन कूटनीति का शिकार है। फिर भी इतिहास उन्हीं के साथ है। इस विषय में एकलव्य दुविधाग्रस्त है। राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं षडयंत्रों के कारण ही द्रोण एकलव्य के साथ अन्याय करते हैं। अर्जुन द्वारा कहने पर ही द्रोण अपने लक्ष्य में प्रयासरत एकलव्य का अंगूठा मांगते हैं तथा घाटी के अन्य लोगों के साथ भी अन्याय करते हैं। वहीं प्रशासनिक अधिकारी भी चुनाव के समय अपना उल्लू सीधा करने के लिए राजनेताओं की भरपूर सहायता करते हैं। वर्तमान प्रशासन में राजनेता का हस्तक्षेप होने के कारण आम जनता को निरन्तर हार का मुँह देखना पड़ता है। राजनेताओं को सत्ता में लाने के पीछे प्रशासनिक अधिकारियों का भी भरपूर सहयोग होता है –

---

[112] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 46

''सिहांसन प्राप्त हुआ है जो
यह माना कि उसके पीछे अंधेपन की
अटल परम्परा है।''[113]

वर्तमान प्रशासनिक अधिकारी अपने स्वार्थों के लिए राजनेताओं के हाथों की कठपुतली बना हुआ है। शम्बूक नाट्य काव्य में जगदीश गुप्त ने भी इन्हीं अर्न्तसंबंधों को दर्शाया है। इन्द्र द्वारा अपना शासन बचाने के लिए नारद के माध्यम से राम द्वारा शम्बूक की हत्या करवाना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। कानून भी राजनेताओं के हाथों बिक चुका है। आज कानून का प्रयोग साधारण जन की रक्षा के लिए नहीं अपितु राजनेता अपनी पार्टी के अपराधियों को बचाने के लिए करता है। दिन–प्रतिदिन बढ़ता अपराध इसी का कारण हैः –

''विपिन्न जाकर, शुद्र मुनि–वध
जब करेंगे राम, विप्र सुत
होगा तभी जीवित
सहज परिणाम।''[114]

इन्द्र द्वारा नारद के माध्यम से राम राज्य में हस्तक्षेप वर्तमान प्रशासन प्रणाली एवं राजनीतिक प्रणाली के अर्न्तसंबंधों को दर्शाता है।

निष्कर्षतः वर्तमान समय में प्रशासनिक कार्यों में बढ़ता राजनीतिक दबाव अनेक अपराधों एवं भ्रष्टाचार को जन्म दे रहा है। प्रशासनिक अधिकारी जब तक अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर पाते जब तक उनके सिर से राजनैतिक दबाव नहीं हटाया जाता। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में रचनाकरों ने पौराणिक पुराकथाओं के माध्यम से वर्तमान प्रशासन एवं राजनीति के अन्तर्सबंधों पर प्रश्न चिह्न लगाया है। प्रशासन की भ्रष्ट व्यवस्था को तभी समाप्त किया जा सकता है जब प्रशासन पर से अनावश्यक राजनीतिक दबाव को हटाया जा सके।

3.11 युद्ध संबंधी प्रश्नों पर चिंतन :–

युद्ध इतिहास का निर्णय करता है। वर्तमान समय में युद्ध की समस्या हमारे सम्मुख विकराल रूप धारण किये हुए हैं। परन्तु क्या नवीन निर्माण के लिए युद्ध अनिवार्य है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य–काव्यों के रचनाकाल एवं समय बोध पर थोड़ा विचार करने पर कहा जा सकता है कि उस समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव दो–दो विश्वयुद्धों की विभीषिका झेल चुका था और विश्व शक्तियाँ दो गुटों में बटी होने के कारण विश्व मानव को तीसरे महायुद्ध की सम्भावना एवं विभीषिका त्रस्त कर रही थी। इन कवियों ने युग द्रष्टा बनकर युग की पीड़ा को को अपनी आंखों से देखा और अपने मन आत्मा में भोगा और यह अनुभव किया कि द्वितीय

[113] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 106
[114] डॉ॰ जगदीश गुप्त, शम्बूक, पृ॰ 12

महायुद्ध के दौरान जो विध्वंस, विनाश, रक्तपात हुआ है उसके कारण मानव के अन्दर मानव के प्रति जो क्रोध, घृणा, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा जैसी विकृत मनोवृत्तियाँ पनपी हैं। वे निश्चय ही वर्तमान मानव एवं मानव भविष्य के लिए घातक एवं चिंता का विषय है। धर्मवीर भारती ने अपने नाट्य–काव्य अंधायुग में इसी युग सत्य को वाणी प्रदान करते हुए युद्धोत्तरकालीन परिस्थितियों के संबंध में लिखा है :

''युद्धोपरान्त
यह अंधायुग अवतरित हुआ
जिसमें स्थितियाँ मनोवृतियाँ, आत्माएँ सब विकृत है
है एक बहुत पतली डोरी मर्यादा की
पर वह भी उलझी है दोनों ही पक्षों में
सिर्फ कृष्ण में साहस है सुलझाने का
वह है भविष्य का रक्षक, वह है अनासक्त
पर अधिकतर हैं अन्धे,
पथभ्रष्ट आत्महारा, विगलित
अपने अन्तर की अंधगुफाओं के वासी
यह कथा उन्हीं अंधों की है।
या कथा ज्योति की है अंधों के माध्यम से।''[115]

प्रस्तुत अवतरण से स्पष्ट है कि महाभारत के युद्ध के पश्चात् समस्त धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ ह्रासोन्मुख हुई। नाट्य–काव्य का आरम्भ ही युद्धोत्तरकालीन परिस्थितियों का चित्रण करता हुआ आधुनिक समयबोध को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इसीलिए स्वातन्त्र्योत्तर रचनाकारों ने युद्ध जैसी शाश्वत समस्या, युद्ध की त्रासदी, युद्ध की अनिवार्यता, युद्ध एवं शांति के मध्य द्वन्द्व, युद्धों के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को अपने नाट्य काव्यों में मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

3.111 युद्ध एक शाश्वत समस्या –

युद्ध आज केवल भारत की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की समस्या बन चुका है। युद्ध की विभीषिका आधुनिक काल में ओर भी अधिक बढ़ गयी है। युद्ध का रूप और परिणाम दोनो ही भयानक और विश्वग्रासी हो गए है। युद्ध से सामाजिक मनुष्य को यातना, घुटन और अंधकार का सामना निश्चित रूप में करना पड़ेगा। तमाम कोशिशों के उपरान्त भी युद्ध आज एक अनिवार्य नियति बना हुआ है। वस्तुतः हम युद्ध को राजनीतिक दाँव–पेंचों की अंतिम

[115] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ॰ 12

परिणति मान सकते हैं। कवि रामधारी सिंह दिनकर ने युद्ध एवं राजनीति के संबंध को दर्शाते हुए इसे इस प्रकार परिभाषित किया है – ''युद्ध भी राजनीति का एक रूप है राजनीति जब सफेद लिबास पहनती है तो उसे शांति कहते हैं। जब उसके कपड़े लहु से लाल हो जाते हैं तो वह युद्ध कहलाती है।''[116]

युद्ध के चलते आज विश्व के सभी देश अपनी–अपनी सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था को सही करने में लगे हुए हैं। हिन्दी के स्वातन्त्र्योतर नाट्य काव्यों में युद्ध और उसकी परिणति को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है। युद्धों की विभीषिकाओं तथा उनके परवर्ती दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए इन युद्धों का जन्म देने वाले कारणों से अवगत करवाने वाली एवं आधुनिता बोध को गहरी संवेदना देने वाली नाट्य कृति अंधायुग में युद्ध संबंधी प्रश्नों पर विचार व्यक्त किया गया है। अंधयुग में युद्ध के माध्यम से युद्ध से होने वाले भयावह परिणामों के द्वारा वर्तमान में युद्ध न करने की चेष्टा को रूपायित किया है। युद्धों से अधर्म, अनैतिकता, पापाचार आदि मनोभाव उत्पन्न हो जाते हैं। अश्वत्थामा द्वारा अर्जुन से प्रतिशोध लेने के माध्यम से कवि ने युद्ध के कारण पनपी प्रतिहिंसा को रूपायित किया है–

''जैसे तुम्हारी कोख कर दी पुत्रहीन कृष्ण ने
वैसे ही मैं भी उत्तरा को कर दूंगा पुत्रहीन।''[117]

दुष्यन्त कुमार कृत 'एक कंठ विषपायी' नाट्य–काव्य भी धर्मवीर भारती कृत 'अंधायुग' के समान युद्ध की भयानक व्यर्थता और विनाश पर प्रकाश डालता है दोनो ही रचनाओं में युद्ध को स्पष्ट शब्दों में आत्मघात कहा गया है –

''और विजय क्या है?
एक लंबा और धीमा
और तिल–तिल कर फलीभूत
होने वाला आत्मघात ।''[118]

'एक कंठ विषपायी' में दुष्यन्त कुमार ने भी युद्ध को सामूहिक आत्मघात का नाम दिया है –

''हाँ आत्मघात
वह भी सामूहिक।
मेरे अपने ज्ञानकोष में
युद्ध शब्द का यही अर्थ है।''[119]

---

[116] डॉ॰ रामधारी सिंह दिनकर, शुद्ध कविता की खोज, पृ॰ 21
[117] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 87
[118] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 79
[119] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 100

'एक कंठ विषपायी' में भी युद्ध जैसी ज्वलन्त समस्या पर प्रकाश डाला गया है। जहाँ अंधायुग में युद्धोपरान्त युद्ध की भयावहता को दर्शाया गया है। वहीं एक कंठ विषपायी में युद्ध से पूर्व ही युद्ध की समस्याओं को रूपापित किया गया है। जब देवलोक पर भगवान शिव की सेनाएँ आक्रमण कर देती है तो इन्द्र ब्रह्मा से युद्ध की अनुमति चाहते हैं। देवलोक की प्रजा भी युद्ध का आग्रह करती है परन्तु ब्रह्मा युद्ध की आज्ञा नहीं देता। उसी अवसर पर कवि ने युद्ध संबंधी समस्या पर गहन विचार विमर्श को दर्शाया है। इन्द्र शंकर के गणों द्वारा दक्ष के नगर में किये गए उत्पात की दुहाई देते हुए ब्रह्मा से युद्ध की आज्ञा मांगते हैं। युद्ध पर हो रहे विचार विमर्श के समय ही क्षत–विक्षत दशा में दक्ष का भृत्य सर्वहत गर्दन झुकाये लड़खड़ाता हुआ सभा में प्रवेश करता है। वह युद्ध के कारण घायल है युद्ध की त्रासदी को उसने सहा। इसलिए युद्ध के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है तथा व्यंग्यपर्ण ढंग से युद्ध के विनाश को प्रकट किया गया है:–

''सारे नगर में ताजा
जमा हुआ रक्त है
और सड़ी हुई लाशे हैं
मुड़ी हुई हड्डिया हैं
क्षत–विक्षत तन है
और उन पर भिन्न भिन्नाते हुए
चीलों और गिद्धों के झुण्ड
और मक्खिया हैं।''[120]

युद्ध के बाद हुए भीषण रक्तपात को चित्रित किया गया है। सर्वहत के माध्यम से युद्ध की मनोवृत्ति को दर्शाया गया है। धर्मवीर भारती कृत 'सृष्टि का आखिरी आदमी' में भी युद्ध से संत्रस्त सभ्यता, शोषण, नफरत और लोलुपता का हृदयग्राही चित्रण है। इसमें सृष्टि के अंतिम क्षणों का वर्णन है जो युद्ध की त्रासदी को झेल रही है –

''जिसके शिलान्यास में कितने
नंगे भूखे मुर्दा बच्चे दफन हुए थे
तब यह नगरी बस पाई थी।''[121]

युद्धों के कारण मानवता का भी निर्मम संहार हो रहा है। आपसी संबंधों को भूल कर मनुष्य युद्ध में एक दूसरे के सामने शत्रु रूप में खड़ा हो जाता है। 'संशय की एक रात' में भी विभीषण युद्ध में राम का साथ देता है जो वर्तमान समय के पारिवारिक संबंधों को परिलक्षित करता है। आज भी सम्पति एवं सत्ता पाने के लिए भाई–भाई को मारने के लिए ही विपक्ष से

---

[120] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 95
[121] डॉ॰ धर्मवीर भारती, सृष्टि का आखिरी आदमी, पृ॰ 101

मिल जाता है। विभीषण भी अपने भाई रावण के विरूद्ध राम की सहायता करता है। युद्धोपरान्त की विभीषिका की कल्पना से भयभीत हो विभीषण राम से कहते है –

''मेरे राष्ट्र की टूटी हुई
अपमानित पताकाएँ
जले और खण्डित भवन
मेरी स्वर्ण लंका
पागल कोढ़ियो साा मेरा राष्ट्र
इस युद्ध में रौंधा डाला जाएगा।[122]

युद्ध के उपरान्त होने वाली भयावह स्थिति को कवि ने विभीषण की कल्पना के माध्यम से चित्रित किया है। अतः युद्ध आज की महत्त्वपूर्ण समस्या बन चुका है यदि भविष्य में युद्ध होता है तो राष्ट्र की दयनीय दशा हो जाएगी। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में युद्धोपरान्त होने वाली भयानक स्थिति को इसी लिए चित्रित किया गया है ताकि भविष्य में होने वाले युद्ध को टाला जा सके।

3.11.2 युद्ध की अमानवीयता

जब भी युद्ध होता है तो इसका सीधा–सीधा प्रभाव मानवीय समाज पर पड़ता है। युद्ध के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को रचनाकरों ने स्वातन्त्र्योतर नाट्य काव्यों में प्रधान समस्या के रूप में उभारा है। अंधायुग की भांति धर्मवीर भारती ने सृष्टि के आखिरी आदमी में भी युद्ध की वीभत्स स्थिति को दर्शाया है –

''छोटे–छोटे बच्चे बूढ़े
तरूण औरतें झुलस रही है
भुने माँस की तीखी कड़वी
बदबू से सर घूम रहा है।''[123]

युद्ध हमारे जीवन के सभी पक्षों पर प्रभाव डालता है। युद्ध के आधार पर शांति की स्थापना संभव नहीं है। राजनीतिक स्वार्थों के कारण किया गया युद्ध केवल अमानवीयता को जन्म देता है। वर्तमान समय में भी हमारे समक्ष यह प्रश्न खड़ा हुआ है। युद्ध हमारे मानवीय गुणों को समाप्त कर हमें बर्बर पशु बना देता है। चिड़िया की आंख में जब एकलव्य के अन्दर सत्ता के प्रति विद्रोह का स्वर प्रस्फूटित होता है तो वह युद्ध का मार्ग चुनना चाहता है। इस पर माधवी एकलव्य को समझाती है –

---

[122] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 74
[123] डॉ धर्मवीर भारती, सृष्टि का आखिरी आदमी, पृ॰113

''युद्ध मानवता के साथ विश्वासघात है,
सम्राटों का पागलपन है,
और अंधी लिप्सा है।
साम्राज्यों के उदय होने पर ही
युद्धों ने जन्म लिया
आदमी के लहूं पर खड़ी सत्ता
एक बहुत बड़ा झूठ है।''[124]

युद्ध ऐसी ही झूठी सत्ता को जन्म देता है तुम इस झूठ को समझ नहीं पाओगे एकलव्य। पाण्डव अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए अपने राज्य की सीमाओं को विस्तृत करने के लिए युद्ध को प्रोत्साहन देते हैं। अपने राज्य के चारों ओर बसे प्रांतों को अपने राज्य में मिलाने के लिए युद्ध का आरम्भ चाहते हैं। युद्ध के लिए धन भी प्रजा से ही एकत्रित करते हैं। माधवी युद्ध से पूर्व ही युद्ध के घातक परिणामों को प्रजा के समक्ष रखती है वह युद्ध जैसे अमानवीय, भीषण संहार को रोकना चाहती है। पाण्डवों को युद्ध की तैयारियों में लगे देख माधवी कहती है –

''युद्ध की विकराल लपटों में
जलने लगेगा देश,
बहेगी रक्त की नदियां।''[125]

युद्ध, जनित, क्रुन्दन, हाहाकार, चीख, पुकार, विकृति आदि का व्यापक रूप से वर्णन किया गया है। अंधायुग में भी युद्ध के उपरान्त युद्ध की अमानवीयता को दर्शाया गया है। जहाँ युद्ध से पूर्व कौरव नगरी खुशियों से फलीभूत थी। वही अब युद्धोपरान्त उस पर गिद्ध मण्डरा रहे थे। सम्राटों का अधिपति दुर्योधन असहाय और निराश्रित सा विचर रहा है। उसके पैर एवं वस्त्र फटे हुए हैं और रक्त प्रवाहित हो रहा है। दुर्योधन के माध्यम से कवि ने युद्धोपरान्त राष्ट्र की दयनीय स्थिति को प्रकाशित किया है। वीरता और शौर्य के प्रतीक दुर्योधन को गीदड़ एवं भेड़िया खा जाने के लिए तत्पर खड़े हैं। यहाँ दुर्योधन वीरता एवं शौर्य से परिपूर्ण, राष्ट्र का प्रतीक है जिसकी यह स्थिति युद्ध के बाद हुई है –

''कोटर से झाँक रहे थे
दो खूंखार गिद्ध
इस झाड़ी से उस झारी में थे
घूम रहे, गीदड़ और भेड़िये
जीभ निकाले

---

[124] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 31
[125] वही, पृ॰ 77

लोलुप नेत्रों से देखते हुए अपलक
राजा दुर्योधन को।''[126]

कवि ने दुर्योधन को राष्ट्र के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। यदि भविष्य में युद्ध होता है तो राष्ट्र की स्थिति भी अंधायुग के दुर्योधन के समान ही होगी। युद्ध के उदर की ज्वाला में सभी को स्वाहा होना पड़ता है। फिर भी उसके पेट की यह अग्नि शांत नहीं होती एक के बाद पुनः दूसरा युद्ध यही गति चलती रहती है। नरेश मेहता कृत 'महाप्रस्थान' में यही चित्रित किया गया है कि अपमान की ज्वाला अक्सर अनागत युद्ध का कारण बनती रही है। महाभारत में द्रौपदी का अपमान युद्ध की विभीषिका का कारण बना। युद्ध की अमानवीयता को कवि ने इन शब्दों में रूपायित किया है –

''षडयंत्रों, अपमानों का प्रतिशोध
निरन्तर युद्ध और हत्या की चीत्कारे,
चक्रव्यूह में फंसा अभिमन्यू
इस अश्वत्थामा के द्वारा वंश नाश
उत्तरा का वह दारूण क्रन्दन।''[127]

युद्ध के बाद भी युद्ध अपनी अमानवीयता के भयानक चित्र छोड़ जाता है। जिसे सदियों तक भी संभाला नहीं जा सकता। युद्ध के पश्चात होने वाला विधवाओं एवं अनाथ बच्चों का अन्तर्नाद मन को अंदर तक झंकझोर देता है।

3.11.3 युद्ध की अनिवार्यता –

कही युद्ध राजनीतिक षडयंत्रों के अन्तर्गत किया जाता है तो कहीं युद्ध अपनी सुरक्षा के लिए अनिवार्य हो जाता है। 'एक कंठ विषपायी' में जब शिव के गणों द्वारा दक्ष का नगर विनष्ट कर दिया जाता है तो देववासी अपनी सुरक्षा के लिए ब्रह्मा से युद्ध की अनुमति चाहते हैं। इन्द्र एवं उसकी प्रजा युद्ध को अनिवार्य मानते हैं। वे स्वयं को कमजोर नहीं बल्कि दूसरे शासक के समक्ष स्वयं को शक्तिशाली एवं समृद्ध दिखाना चाहते हैं। वे ऐसी परिस्थितियों में युद्ध को ही एकमात्र उपाय मानते हैं –

''जहाँ न्याय की हत्या हो
अन्याय सफल हो
जहाँ सत्य विकल हो
जहाँ प्रबल हो असर
और निर्बल हो भ्राता

---

[126] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 66
[127] डॉ॰ नरेश मेहता, महाप्रस्थान, पृ॰ 55

वहाँ धैर्य का दुर्ग अन्ततः छट जाता है
और एकमात्र उपाय युद्ध ही रह जाता है।''[128]

इन्द्र देवलोक के सेनापति हैं जो वर्तमान विवेकहीन शासक के रूप में चित्रित हुए हैं। जो युद्ध के प्रबल समर्थक हैं। वे कहते हैं कि यह समय विश्लेषण का नहीं अपितु युद्ध का है क्योंकि वे हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा को मानते हैं। उनका मत है कि मात्र युद्ध के द्वारा ही शासन को बचाया जा सकता है। वे अस्त्र शस्त्र लेकर ब्रह्मा की अनुमति पाने के लिए आतुर है इन्द्र एक विवेकहीन शासक है बिना सोचे समझे ही युद्ध का निर्णय करने के लिए आतुर हैं। वे ब्रह्मा को कहते हैं कि या तो वह सती को जीवन दान दें अन्यथा युद्ध की आज्ञा दें। वे समस्या का समाधान युद्ध को ही स्वीकारते हैं –

''आप सती को जीवन देना नहीं चाहते
तो फिर अब युद्ध के अलावा
कोई और विकल्प नहीं है
और समस्या का यह अंतिम समाधान है।
यह विवाद, स्थितियों के विश्लेषण
का समय नहीं है।
यह केवल युद्ध का समय है।''[129]

दुष्यन्त कुमार की भांति नरेश मेहता ने भी अपने नाट्य काव्य 'संशय की एक रात' में युद्ध की अनिवार्यता के साथ युद्ध जैसी शाश्वत समस्या को चित्रित किया है।

'संशय की एक रात' में राम मानवीयता के संरक्षक के रूप में चित्रित हुए हैं। मानवता का दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति युद्ध के भयंकर परिणामों पर पहले ही चिंतन मनन करता है। मानव की नियति है संशयों के बीच घिरा होना। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रश्न घूमते रहते हैं। इनका एक मात्र उपाय युद्ध ही नहीं हो सकता। बलवान व्यक्ति अपनी बलवत्ता सिद्ध करने के लिए सोचता है वहीं विवेकशील व्यक्ति अंत तक युद्ध को टालना चाहता है तथा सत्य का मार्ग खोजना चाहता है। संशय की एक रात में राम युद्ध हो या न हो इसी संशय से ग्रसित है। तब राम के पिता की आत्मा उसे इस संशय से मुक्त करने के लिए कहती है कि युद्ध मंत्रणा न होकर जीवन दर्शन है। जिसे अधिकार और स्वत्व प्राप्त करना है। उसके लिए युद्ध ही अंतिम मार्ग है। युद्ध को ही अंतिम मार्ग एवं दर्शन माना गया है –

''युद्ध मंत्रणा नहीं
एक दर्शन है राम
अंतिम मार्ग है

---

[128] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 106
[129] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 103

स्वत्व और अधिकार अर्जुन का
किसी किसी युग में युद्ध ही
ही अंतिम सत्य, दर्शन हुआ करता है, मित्र।''[130]

कभी–कभी अपने अधिकारों एवं कर्तव्य के लिए युद्ध की अनिवार्यता को भी स्वीकारना पड़ता है। युद्ध की तत्कालिकता एवं अनिवार्यता पर नरेश मेहता कृत महाप्रस्थान में विचार किया गया है। युद्ध को कर्त्तव्य मानते हुए युधिष्ठिर भीम से कहते हैं –

''एक तत्कालिक धर्म भी होता है
कर्त्तव्य
जब युद्ध कर्त्तव्य हो गया
तो अनासक्त होकर
वह भी किया – ''[131]

युद्ध समय और स्थितियों के कारण कभी–कभी अनिवार्य हो जाता है। 'संशय की एक रात' में युद्ध अपने अधिकार पाने के लिए अनिवार्य प्रतीत होने लगता है। रावण के अत्याचारों से मुक्त होने के लिए जनजातिय समाज राम से युद्ध की कामना करता है।

निष्कर्षत स्वातन्त्र्योतर नाट्य काव्यों में जहाँ युद्ध की त्रासदी एवं भयावहता को दर्शाया गया है। वहीं कवियों ने कहीं–कहीं युद्ध की अनिवार्यता पर भी प्रकाश डाला है। कई बार हमारे समक्ष परिस्थितियाँ ऐसी बन जाती हैं जब युद्ध अनिवार्य हो जाता है।

3.11.4 युद्ध एवं शांति के मध्य द्वन्द्व

मानवीय सभ्यता के आगमन से ही युद्ध समाज में अपनी पैठ बनाए हुए है। प्रो. मोलिनास्की के अनुसार – युद्ध स्वतन्त्र राजनैतिक इकाईयों के बीच का सशस्त्र संघर्ष है वह संघर्ष राष्ट्रीय तथा जातीय नीतियों को प्राप्त करने के लिए संगठित सैनिक शक्तियों द्वारा किया जाता है। क्विसी के अनुसार – ''युद्ध व्यापक अर्थ में स्पष्टतः भिन्न किन्तु एक ही इकाई के बीच हिंसापूर्ण सम्पर्क है।''[132] युद्ध के माध्यम से कोई भी राष्ट्र अपने हित की वृद्धि का आकांक्षी होता है। यदि युद्ध से लाभ न हो तो कोई भी राष्ट्र यह जोखिम उठाने के लिए तैयार नहीं होता है। जनता का रक्त बहाकर, जन–धन की हानि करना शासक का कर्त्तव्य नहीं है। युद्ध की आज्ञा देकर अपने ही राष्ट्र का विनाश करना शासक के कर्त्तव्यों में नहीं आता। ब्रह्मा इंद्र को यही समझाते हैं वास्तविक शासक वह है जो विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य से काम लें और समस्या का समाधान विचार–विमर्श एवं सोच समझकर निकाले। इसीलिए ब्रह्मा कहते हैं

---

[130] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 71
[131] डॉ॰ नरेश मेहता, महाप्रस्थान, पृ॰ 99
[132] डॉ॰ प्रभु दत्ता शर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विचारभूमि, पृ॰ 259

कि यदि युद्ध ही एकमात्र उपाय नहीं है। युद्ध स्वयं में कोई उपलब्ध सत्य नहीं है यदि फिर भी तुम नहीं मानते तो भी मैं युद्ध की अनुमति नहीं दूंगा क्योंकि मेरे ज्ञानकोश में युद्ध सामूहिक आत्मघात है –

''यदि मुझसे करो अपेक्षा
तो मैं अपने मुँह से
सेना को आदेश नहीं दे सकता।
मैं पहले ही बता चुका हूँ
युद्ध सामूहिक आत्मघात है
इसके पीछे कोई जीवन दृष्टि नहीं
केवल आग्रह है।''[133]

दक्ष का सेवक सर्वत भी ब्रह्मा की बातों का समर्थन करता है। वह युद्ध को कुछ लोगों की व्यस्तता का व्यर्थ प्रदर्शन मानता हुआ व्यंग्य करता है –

''जो लोग अपनी गर्दन ऊंचा रखते हैं
वे भी, नएसत्य के सम्मुख पड़कर नहीं देखते
वे भी सहसा नए प्रश्न से नहीं जूझते
उससे लड़कर नहीं देखते।
सिर्फ व्यस्तताओं की रचना करके
उसे टाल जाते हैं
और युद्ध भी एक व्यस्तता का नाटक है।''[134]

'संशय की एक रात' में राम भी युद्ध एवं शांति के द्वन्द्व से संशयग्रस्त है। वह एक विवेकशील प्राणी है। इसी कारण अंत समय तक युद्ध टालना चाहता है। परन्तु कवि ने इसमें युद्ध को अनिवार्यता के रूप में चित्रित किया है। कवि के अनुसार युद्ध एक ऐसा दायित्व है जिसे न चाहकर भी समाज के हित में निभाना पड़ता है। युद्ध न्याय एवं अन्याय की निर्णायक शक्ति है जिससे इतिहास बदलता है। परन्तु राम के माध्यम से नाट्यकार यह भी आशंका करता है कि क्या युद्ध के बाद शांति एवं न्याय मिल पायेगा। अथवा नहीं दूसरा सत्य यह है कि युद्ध ही हमेशा अनागत युद्ध का निमित रहा है और तदन्तर इस संहार और संघर्ष की प्रक्रिया चलती रहती है –

''युद्ध के उपरान्त होगी शांति
इसका तो नहीं विश्वास
यह युद्ध संभव है अनागत युद्ध का कारण बने

---

[133] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 107
[134] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰125

फिर संघर्ष, फिर संहार
इस चक्र का कोई नहीं है अन्त।''[135]

राम युद्ध से पूर्व युद्ध से होने वाले भयंकर परिणामों को समझता है। इसी कारण वह युद्ध को टालना चाहता है और शांति की स्थापना चाहता है। विवेकी पुरूष अंत तक युद्ध को नजरअंदाज करता है क्योंकि वह युद्धोपरान्त होने वाले भयंकर रक्तपात का अंदाजा पहले ही लगा लेता है। इसी कारण राम भी सीता हरण को अपनी व्यक्तिगत समस्या बताकर युद्ध नहीं करना चाहते। परन्तु रावण से परेशान घाटी के लोग सीता को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का प्रतीक मानकर राम से युद्ध का अनुरोध करते हैं। राम युद्ध एवं शांति के बीच द्वन्द्व से ग्रसित हो जाते हैं।

राम की सभा वर्तमान संसद का प्रतीक है। जहाँ युद्ध एवं शांति के मध्य विचार विमर्श चल रहा है बहस के बाद युद्ध की अनिवार्यता पर ही बल दिया जाता है क्योंकि परिस्थितियों के कारण युद्ध के बाद ही शांति मिल सकती है। यहाँ युद्ध परिस्थिति से जुड़कर मूल्य बन जाता है और राम द्वारा युद्ध न चाहते हुए भी सर्वसहमति के कारण युद्ध के लिए हाँ कहा जाता है। राम के शब्दों के माध्यम से कवि ने आधुनिक विवेकशील एवं बुद्धिजीवी शासक को उजागर किया है –

''अब मैं निर्णय हूँ सबका
अपना नहीं, अभी पार्थिव पूजन उपरांत
सेनायें रथ घोड़े, हाथी सब
युद्ध यात्रा पर चल देंगे।''[136]

राम की भांति 'एक कंठ विषपायी' में आधुनिक शासक के रूप में चित्रित ब्रह्मा भी युद्ध के विरूद्ध है क्योंकि वे युद्ध से पूर्व ही युद्ध की विभीषिका के विषय में जानते हैं। इन्द्र के बार–बार युद्ध की आज्ञा माँगने पर भी वह इन्द्र की सेना को युद्ध का आदेश नहीं देते। वे युद्ध को सामूहिक आत्मघात की संज्ञा देते हुए कहते हैं –

''मैं तो आत्मघात को
आत्म सुरक्षा नहीं समझता
आत्मघात
वह भी समूहिक
मेरे ज्ञान कोष में
युद्ध शब्द का यही अर्थ है।''[137]

---

[135] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 67
[136] डॉ॰ नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 106
[137] डॉ॰ दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ॰ 100

ब्रह्मा युद्ध के कट्टर विरोधी हैं वही इन्द्र, युद्ध के प्रबल समर्थक है। वर्तमान समय में शासक युद्ध की भयावहता से परिचित है इसीलिए वह युद्ध एवं शांति जैसे प्रश्नों पर गहन चिंतन करता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि युद्ध की समस्या आज हमारे सामने भयंकर रूप धारण किये हुए खड़ी है। सभी राष्ट्रों द्वारा बनाये गए अणु शास्त्रों द्वारा यह समस्या और भी भयानक रूप ले चुकी है। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में युद्ध से होने वाले दुष्परिणामों को स्पष्टतः दर्शाया है तथा भविष्य में ऐसा न करने पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं। क्योंकि युद्ध रूपी अजगर समाज से मानवता, नैतिकता, मर्यादा को समाप्त कर देगा। स्वातन्त्र्योत्तर रचनाकारों ने युद्ध की विभीषिका को अपने–अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

3.12 आणविक संस्कृति के प्रति चिंता

स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में वर्तमान समय की अनेक समस्याओं को रूपायित किया है। जहाँ कवि ने एक ओर युद्ध जैसी भयंकर समस्या को चित्रित किया है वहीं आधुनिक भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, विकृतियाँ, अनैतिकता, अर्मादा, रक्तपात जैसी समस्याओं को भी चित्रित किया है। प्राचीन कथा सूत्रों के माध्यम से कवि ने वर्तमान समस्याओं का प्रत्यक्षतः चित्र प्रस्तुत किया है। अंधायुग में रचनाकार ने स्वयं स्वीकारा है कि :

''उस दिन जो अंधायुग अवतरित हुआ जग पर
बीतता नहीं रह रहकर दुहराता है।''[138]

स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य काव्यों में निहित युद्ध की समस्या को आधुनिक युग में भी भुलाया नहीं जा सकता। पहले हुए विश्वयुद्धों एवं उनके दुष्परिणामों को कवियों ने अपने नाट्य काव्यों में आधुनिकता प्रदान की है।

आधुनिक युग में आणविक संस्कृति के प्रति चिंता एक महत्वपूर्ण विषय है। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की नयी खोजें जहाँ एक ओर मानवता के लिए नयी सम्भावनाओं को तलाश रही हैं। वहीं विज्ञान की ही अन्य खोज परमाणु बम मानव के लिए सबसे बड़ा खतरा बनती जा रही हैं। 1945 में अमेरिका द्वारा जापान के नागासाकी एवं हिरोशिमा पर फैंके गए अणुबम का कुप्रभाव छुपा नहीं है। यदि अणु और परमाणु बमों के प्रयोग पर रोक नहीं लगाई गई तो इसक परिणाम भयंकर हो सकते हैं।

सम्पूर्ण विश्व आज अणु–परमाणु बमों की दौड़ में लगा हुआ है। अमेरिका, रूस, जर्मनी, जापान, फ्रांस, चीन, भारत,पाकिस्तान आदि सभी राष्ट्र अंधे होकर परमाणु अस्त्रों की होड़ में लगे हुए हैं। यह दौड़ मनुष्य को निरन्तर शमशान भूमि की ओर अग्रसर कर रही है। यदि आणविक

---

[138] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 22

शक्ति पर अंकुश नहीं लगाया गया तो विश्व को पुनः तीसरे विश्व युद्ध का सामना करना पड़ सकता है। आधुनिक युग में अस्त्र शस्त्रों की होड़ मानव भविष्य के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। क्योंकि यदि अस्त्र–शस्त्र होंगे तो कभी न कभी प्रयोग में भी अवश्य ही आऐंगे। धर्मवीर भारती कृत अंधायुग में ब्रह्मास्त्र आधुनिक परमाणु बम का ही प्रतीक है। कविवर भारती ने ब्रह्मास्त्र के प्रयोग से होने वाले विनाशकारी प्रभावो की ओर अश्वत्थामा का ध्यान आकृष्ट करते हुए व्यास के शब्दों में उसे चेताया है –

''ज्ञात क्या तुम्हें है परिणाम इस ब्रह्मास्त्र का
यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ नर पशु।
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमयी वनस्पति नहीं होगी
शिशु पैदा होंगे विकलांग और कुंठाग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी
जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने
सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में
सदा सदा के लिए होगा विलीन वह
गेहूँ की बालों में सर्प फुफकारेंगे
नदियों में बह–बहकर आयेगी पिघली आग।''[139]

भविष्य में परमाणु बम के परिणामों को कवि ने स्पष्टतः दर्शाया है यदि भविष्य में इनका प्रयोग किया जाता है तो सम्पूर्ण विश्व धूं–धूं कर जल जाएगा, सदियों तक वनस्पति नहीं उगेगी। अधायुग में कौरव एवं पाण्डव रूस एवं अमेरिका के प्रतीक हैं। जो एक दूसरे की होड़ में बमों के निर्माण में लगे हुए हैं यदि भविष्य में दोनों में आपसी युद्ध हुआ तो अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग भी अवश्य होगा। तब स्थिति कुछ इस प्रकार होगी –

''ये दोनो ब्रह्मास्त्र अभी नभ में टकरायेंगे।
सूरज बुझ जायेगा
धरा बंजर हो जाएगी।''[140]

परमाणु शस्त्रों का निर्माण कर आज प्रत्येक राष्ट्र उनके दुष्परिणामों की चिंता किये बिना स्वयं को विश्व में समृद्ध बनाने की चेष्टा में लगा हुआ है। जिसका निर्माण एक राष्ट्र पर ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए घातक सिद्ध होगा। युद्ध का परिणाम संहार ही संहार है जो मानवता के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। युद्ध अपना प्रलयकार ताण्डव करने के बाद जो प्रसाद देगा वह है – चीखती–कराहती मानवता, अपार धन हानि, विधवाओं के आंसू, घायलों

[139] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 94, 95
[140] डॉ॰ धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ॰ 97

की कतार। सुभाष पंत जी अपने नाट्य–काव्य 'चिड़िया की आँख' में युद्ध से पहले ही अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग की चुनौती देते हैं –

''युद्ध की विकराल लपटो में
जलने लगेगा देश
बहेगी रक्त की नदियां।''[141]

सभी देश आज अस्त्र शस्त्र बनाने की होड़ में लगे हुए हैं। रचनाकार इनके प्रति अपनी चिंता के माध्यम से इन्हें रोकना चाहता है। यदि भविष्य में इनका प्रयोग हुआ तो समस्त सृष्टि नष्ट हो जाएगी। समस्त विश्व जो विकास करता हुआ आगे बढ़ रहा है वह कंकाल बन जाएगा। समस्त प्रकृति नष्ट हो जाएगी। धर्मवीर भारती जी अंधायुग की भांति 'सृष्टि का आखिरी आदमी' में भी आणविक संस्कृति के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करते प्रतीत होते हैं :–

''जिसके सीने पर तुमने युद्ध रचे थे,
ये भवन बनाये थे जिसके कंकालों पर
इसकी गलियों में पिघली हुई
आग की नदियां उगलेगी।''[142]

अतः परमाणु बम जैसी विनाशकारी शक्ति के प्रति कवि ने व्यक्तियों एवं राष्ट्रों को चेताया है कि यदि वे भविष्य में इस प्रकार के विनाशकारी हथियारों के प्रयोग को नहीं त्यागेंगे तो वह दिन दूर नहीं होगा जब सम्पूर्ण मानव जाति विनष्ट हो जाएगी।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षत स्वातन्त्र्योतर नाट्य काव्यों में कवियों ने पौराणिक कथाओं के माध्यम से आधुनिक राजनैतिक समस्याओं में रूपायित किया है। कवियों ने वर्तमान राजनीति की विकृतियों, अनैतिकता, शोषण, अर्मयादा, स्वार्थपूर्ण, राजनीति, भ्रष्टाचार, आधुनिक राजनेता का स्वरूप, अर्मयादा, रक्तपात, विसंगतियों, वंचित एवं शोषित मनुष्य के संघर्ष को परिलक्षित किया है। इसके अतिरिक्त युद्ध एवं अणु परमाणु बमों के प्रयोग पर भी कवियों ने अपनी चिंता व्यक्त की है तथा भविष्य में इनसे होने वाले भयंकर परिणामों के प्रति समस्त मानव जाति को चेताया है। अतः कवियों ने नाट्य–काव्यों में वर्तमान राजनीति के सभी पक्षों पर विचार डालकर समाज में सजगता पैदा करने का भरसक प्रयास किया है। मिथक होते हुए भी स्वतन्त्र्योतर नाट्य–काव्य वर्तमान राजनीतिक समय बोध चित्रित करने में सफल हुए हैं।

---

[141] डॉ॰ सुभाष पंत, चिड़िया की आँख, पृ॰ 77
[142] डॉ॰ धर्मवीर भारती, सृष्टि का आखिरी आदमी, पृ॰ 112